लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग

जीवन में पूर्ण लक्ष्मी प्राप्ति की गोपनीय विधियां

लक्ष्मी प्राप्ति के इक्यावन सफल प्रयोग

लेखक
डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली

सम्पादक
कैलाशचन्द्र

卐

प्रकाशक
अरविन्द प्रकाशन
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-३४२००१

मुद्रक
साधना प्रेस
हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर (राज०)

अरविन्द प्रकाशन

मूल्य रू० १५-००

सम्पर्क—सूत्र
अरविन्द प्रकाशन
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कोलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राज०)
दूरभाष नं० २२२०१

दो शब्द

लक्ष्मी प्राप्ति के इक्यावन सफल प्रयोग पुस्तक आपके हाथों में है। महत्वपूर्ण पुस्तक की कीमत या उसका मूल्यांकन उसके पन्नों के भार से या पुस्तक के वजन से नहीं आंका जाता, अपितु उसमें निहित सामग्री से आंका जाता है, यह पुस्तक अपने छोटे कलेवर में इतनी अधिक महत्वपूर्ण और सारगर्भित सामग्री संजोये हुए है कि जो इस प्रकार की साधना में रत है, वे ही इसका मूल्यांकन समझ सकते है।

इस पुस्तक को लिखने के पीछे साधुओं, सन्यासियों या योगियो का का मार्ग-दर्शन नहीं है, यह पुस्तक सामान्य गृहस्थ व्यक्तियों की भावनाओं और क्षमताओं को रखकर लिखी गई है, इस बात का ध्यान रखा गया है कि गृहस्थ व्यक्ति जटिल विधि-विधान या क्रिया कला में नहीं उलझ सकते, उनको शुद्ध संस्कृत का उच्चारण, संकल्प विनियोग या न्यास का ज्ञान नहीं होता, वे अपने व्यस्त समय में से कुछ समय निकाल कर साधना या मन्त्र जप कर सकते है, जिससे कि वे अपने दैनिक गृहस्थ कार्यो में राहत अनुभव कर सकें, और अपने जीवन को ऊचे आदर्श पर स्थापित कर सकें।

दरिद्रता जीवन का अभिशाप है, निर्धन व्यक्ति हर क्षण मरता है, और हर क्षण जन्म लेता है। जब कोई व्यक्ति दिये हुए कर्ज को वापस प्राप्त करने के लिये उसके पास पहुंचता है, तो वह एक तरफ से मृतक ही समझता हैं जब वह अपने बच्चे की फीस समय पर जमा नहीं करा पाता, या बच्चों की आवश्यकता पूरी नहीं कर पाता या पत्नी की इच्छाओं को पूर्णता नहीं दे पाता तो वह अपने आप में कमजोर बेबस और मृतवत सा समझने लग जाता है, क्योंकि आज पूरे संसार का ढांचा आर्थिक धरातल पर स्थित है, जीवन के सारे कार्य अर्थ के चारों ओर सिमिट गये है, जीवन में आर्थिक दृष्टि से उन्नति करना या समृद्धि प्राप्त करना एक तरह से जीवस को पूर्णता देना है।

कई बार व्यक्ति परिश्रम करता है, भाग-दौड़ करता है, चौबीस घण्टे कार्य या व्यापार में जुटा रहता है, फिर भी वह आर्थिक दृष्टि से सफलता प्राप्त नहीं कर पाता, व्यापार में बाधाएं आती रहती है, शत्रु हावी रहते है, और आर्थिक दृष्टि से जो सम्पन्नता आनी चाहिये, दुर्भाग्य की वजह से वह सम्पन्नता नहीं आ पाती, ऐसी स्थिति में एक ही उपाय शेष रह जाता है, कि मन्त्र साधना से अपने व्यापारिक पक्ष को पूर्णता

दी जाय।

पर अनुष्ठान या मन्त्र प्रयोग कुछ पंण्डितों का एकाधिकार बन गया है, आजकल अनुष्ठान करवाना काफी महंगा और व्यय साध्य हो गया है, और फिर प्रत्येक व्यक्ति के बस की बात नहीं है, कि पंण्डित स्वयं मन्त्र साधना या अनुष्ठान में सक्षम हो भी।

ऐसी अन्धकार स्थिति में यह पुस्तक दीपक की तरह है जिसके प्रकाश के सहारे सामान्य मानव अपनी गरीबी को मिटा सकता है, जीवन मे आर्थिक पूर्णता ला सकता है। इसमे जो प्रयोग दिए है वे सभी प्रमाणिक है, साधकों ने तथा विशेषकर गृहस्थ व्यक्तियों ने इन साधनाओं को किया है, तथा वे पूर्ण रूप से सफल हुए है। इस पुस्तक में ऐसे ही प्रयोग दिए है जो प्रामाणिक है जिसमें कम से कम उपकरणों की जरूरत है और जिनके प्रयोग से निश्चत रूप से लाभ होता ही है।

इसके साथ ही साथ ये ऐसे प्रयोग है कि यदि किसी प्रयोग में न्यूनता रह जाय या मन्त्र का सही उच्चारण न हो सके या किसी विशेष से अनुष्ठान बीच में समाप्त करना पड़े तो भी इससे साधक को किसी प्रकार की कोई हानि नहीं होती, मेरी राय में प्रत्येक गृहस्थ को इन प्रयोगो मे से कुछ प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करने चाहिए जिससे कि वह अपने जीवन के अभाव मिटाकर जीवन को संवार सके, पूर्णता और खुशियां प्राप्त कर सकें।

किसी भी साधना में कुछ वस्तुओं की जरूरत पड़ती है, क्योंकि मन्त्र का सीधा सम्बन्ध उस उपकरण से ही झंकृत हो सकता है, इसलिए उपकरण के चयन मे सावधानी बरतनी चाहिए। कोई भी वस्तु शुद्ध हो, प्रामाणिक हो, मन्त्र सिद्ध चैतन्य प्राण-प्रतिष्ठा युक्त हो तो निश्चय ही सफलता मिल सकती है। इस प्रकार की साधनाएं पुरुष या स्त्री बालक या वृद्ध कोई भी कर सकता है। परिवार में कोई एक व्यक्ति साधना कर सफलता प्राप्त करता है, तो उसका लाभ पूरे परिवार को प्राप्त होता है।

इस पुस्तक में कई प्रयोग ऐसे है जो पहली बार प्रकाश में आये है पुस्तक में प्रकाशित मन्त्रों के बारे में पूरी सावधानी बरती है कि वे शुद्धता के साथ प्रकाशित हो। मुझे विश्वास है यह पुस्तक आपके लिए संग्रहणीय महत्वपूर्ण, लाभदायक और जीवन को पूर्णता देने में सहायक सिद्ध हो सकेगी।

—लेखक

प्रकाशकीय

भारतवर्ष में धीरे-धीरे भारत की प्राचीन विद्या की तरफ लोगों का ध्यान बढता जा रहा है, और वे स्वयं साधना आदि सम्पन्न करने को उत्सुक है, परन्तु न तो उन्हें सही ढंग से मार्गदर्शन मिलता है, और न ही शुद्धता के साथ इससे सम्बन्धित साहित्य ही।

ऐसी स्थिति में निश्चय किया गया कि अरविन्द प्रकाशन के अन्तर्गत ऐसा साहित्य प्रकाशित किया जाय जो गोपनीय होने के साथ-साथ महत्वपूर्ण हो, जो कि प्रत्येक घर में संग्रहणीय हो सके, साथ ही साथ इस तथ्य पर भी पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है कि यहां से जो भी साहित्य प्रकाशित हो वह पूर्ण शुद्धता के साथ प्रकाशित हो। स्तोत्र या मन्त्र में छोटी सी गलती सारे प्रभाव को समाप्त कर देती है, इसी-लिए इस कठिन कार्य को हाथ में लिया गया है।

कागज और मुद्रण के आसमान छूते हुए भाव और महंगाई के बीच इस प्रकार के कार्य को हाथ में लेना कितना कठिन कार्य है, यह वही जान सकते है, जो इस क्षेत्र में है, परन्तु इतनी कठिनाइयों के बावजूद भी दिमाग में यही तथ्य था, कि पाठकों को पूर्णता, प्रामाणिकत एवं शुद्धता के साथ साहित्य प्राप्त हो साथ ही यह साहित्य अल्प मूल्य हो, जिससे कि साधक इस प्रकार के साहित्य को खरीद सके।

इसी ग्रन्थ माला के अन्तर्गत "लक्ष्मी प्राप्ति के इक्यावन सफल प्रयोग" पुस्तक आपके हाथ में है, और इसके साथ ही साथ बारह और पुस्तकें प्रकाशित की है, भविष्य में भी इसी प्रकार निरन्तर अल्प मोली परन्तु महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित की जाती रहेगी।

पूज्य श्रीमाली जी का आशीर्वाद हमें प्राप्त है, और मुझे विश्वास है कि उनका स्नेहपूर्ण आशीर्वाद हमारे प्रकाशन को निरन्तर मिलता रहेगा।

प्रकाशक

विषय-सूची

U.K. Awasthi

प्रवेश

शास्त्रों में 'धर्मार्थ काम मोक्षाणाम् पुरुषार्थं चतुष्टयम्' कहकर मनुष्य की उन्नति के लिए चार प्रकार के पुरुषार्थ बताये है, जिसमें सबसे पहला पुरुषार्थ धर्म, दूसरा अर्थ, (लक्ष्मी प्राप्ति) तीसरा काम (सन्तान उत्पन्न करना) और चौथा मोक्ष प्राप्ति के लिए साधना आदि सम्पन्न करना है।

इस प्रकार शास्त्रों ने यह स्वीकार किया है, कि जीवन में धर्म का सबसे पहला स्थान होना चाहिए, धर्म के नियमों को मानना चाहिए और हमारे मन में देवताओं के प्रति, इष्ट के प्रति, और अपने गुरू के प्रति सम्मान और श्रद्धा होनी चाहिए, जिससे कि हम धर्म के पथ को पहिचान सकें, अपने कर्त्तव्यों को जान सकें, और कर्त्तव्य मार्ग पर आगे बढते हुए, धर्म का पालन करते हुए लक्ष्मी प्राप्ति में सफल हो सकें।

धर्म से ही सम्पन्नता आती है, परन्तु इसके साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि हम सम्पन्नता के लिये कुछ विशेष साधनाएं और क्रियाएं सम्पन्न करें, जिससे कि हम इस भाग दौड़ की जिन्दगी में, प्रतिस्पर्धा के जीवन में, व्यापार और अन्य कार्यों के माध्यम से अर्थ संचय कर सके।

शास्त्रों ने देवताओं में श्रेष्ठ भगवान विष्णु की पत्नी के रूप में लक्ष्मी को स्थान देकर उसकी श्रेष्ठता और उसके महत्व को सिद्ध कर दिया है। यह स्पष्ट है कि लक्ष्मी से सम्बन्धित उपासना हमारे जीवन की आवश्यक उपासना है। हम चाहें किसी भी मत के अनुयायी हो, किसी भी धर्म का पालन करते हों, किसी भी विचारधारा से सम्बन्धित हों पर हमें लक्ष्मी की प्राप्ति और उसके महत्व को स्वीकार करना ही पड़ेगा।

समाज की मान्यताएं बदलती रहती है। एक समय ऐसा भी था जब धन को अधिक महत्व नहीं दिया गया था। धन जीवन का और विनिमय का आधार अवश्य था, परन्तु वह सब कुछ नहीं था, परन्तु आज समाज की मान्यताएं और विचार बदल गये है, हम समाज की ही एक इकाई है, और समाज के साथ ही साथ हमें भी अपने आपको बदलना आवश्यक हो गया है, अतः हमें यह स्वीकार करना ही पड़ेगा, कि हमारे जीवन में पूर्णता प्राप्ति के लिए अन्य

तत्वों के साथ ही साथ धन का भी उतना ही महत्व है।

परन्तु इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि धन अनैतिक कार्यों से एकत्र न हो, गलत रास्तों से धन संचय न हो, और किसी को धोखा देकर या हानि पहुंचाकर हम सम्पन्न न बनें। इज्जत, मान, मर्यादा, शास्त्रीय नियमों के अनुकूल विचारों के साथ ही साथ परिश्रम के द्वारा धन एकत्र करें, और श्री सम्पन्न बनें।

धनवान या लखपति बनना कोई गुनाह नहीं है, अधर्म नहीं है, यह तो मानव जीवन की श्रेष्ठता है। दरिद्रता को आरम्भ काल से ही मानव जाति का अभिशाप कहा गया है, शुरू से ही श्री-सम्पन्न होना सौभाग्य और श्रेष्ठता का प्रतीक माना गया हैं, इसीलिए हम किसी व्यक्ति को आदर देने के लिए उसके नाम के आगे "श्री" या "श्रीमान" शब्द का सम्बोधन करते है। "श्री" का अर्थ लक्ष्मी है, "श्रीमान्" का अर्थ लक्ष्मी युक्त है, अतः हम किसी भी विद्वान योगी साधु, सन्त, सन्यासी अथवा श्रेष्ठ पुरुष के नाम के आगे श्री शब्द लगाकर इसी भावना को व्यक्त करते कि आप श्री सम्पन्न हों, लक्ष्मीवान हों, समाज में सम्माननीय हो।

जो इस तथ्य को स्पष्ट करते है कि धन जीवन का शत्रु है, धन तो धर्म के रास्ते में बाधक है, वे वास्तव में ही कायर है, नपुंसक है, आलसी और अपने आपको धोखा देने वाले है। वे स्वयं अपने मन में इस बात को समझते है कि आज के युग में चाहे धार्मिक कार्य सम्पन्न करना हो, समाज को सहयोग देना हो या साधु सन्त सन्यासी को सुविधाएं देनी हो, इसके लिए धन की आवश्यकता होती ही है, बिना धन के धर्म का अस्तित्व आज के युग में सम्भव ही नहीं, इसीलिए धन की की महत्ता सर्वोपरि है और यह महत्ता मानव के प्रारम्भिक काल से आज तक रही है, इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है, कि व्यक्ति को श्री सम्पन्न होना चाहिए, श्री सम्पन्न व्यक्ति ही समाज और देश के आभूषण है।

यह अलग बात है कि हम धन का उपयोग किस प्रकार करें। कुछ लोग धन प्राप्त होने पर मदान्ध हो जाते है, नीति-अनीति का ध्यान नहीं रखते और उच्छृंखल जीवन या असामाजिक जीवन बिताने को तैयार हो जाते है, इससे समाज में अव्यवस्था होती है, और समाज का वातावरण दूषित होता है, परन्तु यदि धन का उपयोग सत्कार्यों में और शुभ कार्यों में होता है, तो यह निश्चित रूप से जीवन की श्रेष्ठता मानी जा सकती है।

आज जो बड़े-बड़े आश्रम दिखाई देते है, क्या ये आश्रम बिना धन के

स्थापित हुए है ? आज जो बड़े-बड़े मन्दिर दिखाई देते है, जिनमें जाकर हम देवताओं के सामने अभिभूत हो जाते है, मन शुद्ध संस्कार जागृत होते है, तो क्या ये मन्दिर बिना धन के सम्भव है ? बड़े-बड़े गुरुद्वारे, चर्च, और मस्जिदें बिना धन के सम्भव है ? यह अवश्य है कि इसके मूल में धन ही एक मात्र तत्व है, जिसके माध्यम से यह सब कुछ सम्भव हो सका है।

परन्तु केवल परिश्रम से ही धन संचय नहीं हो पाता। केवल शिक्षा प्राप्ति से ही लक्ष्मीपति नहीं बना जा सकता। हमारे समाज में चारों ओर ऐसे सैकड़ों युवक घूमते दिखाई देंगे, जो एम० ए० पास है, परन्तु उनमें से अधिकांश बेकार या बहुत ही छोटी तनख्वाह पर जीवन यापन करने के लिए बाध्य है। हम नित्य दिन के आठ और दस घन्टे मजदूर को पत्थर और मिट्टी ढोते, घोर परिश्रम करते हुए देखते है, फिर भी वे जीवन की आवश्यक वस्तुएं भी सुलभ नहीं कर पातें, इससे यह तो स्पष्ट है कि केवल मात्र परिश्रम और शिक्षा ही सब कुछ नही है, मात्र इनके माध्यम से लक्ष्मीपति या श्री सम्पन्न बनना संभव नही है।

व्यापार में भी हम देखते है कि लोग परिश्रम करते है, अपनी तरफ से पूरा प्रयत्न करते है। बड़ी से बड़ी दुकान खोल लेते है, परन्तु इतने पर भी धन एकत्र हो जाय, यह सम्भव नहीं है (इसकी अपेक्षा हम यही देखते है कि जिसकी छोटी सी सुन्दर दुकान है वह ज्यादा कमा रहा है, सम्पन्न हो रहा है। ऐसे भी निरक्षर सेठों को देखा है, जिनको भली प्रकार से चार लाइने लिखनी नहीं आती, परन्तु वे लखपति-करोड़पति हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं कि परिश्रम और शिक्षा के अलावा हमारे जीवन निर्माण और जीवन सम्पन्नता में भाग्य का भी बहुत बड़ा हाथ है। भाग्य होने से व्यक्ति सामान्य श्रेणी से बहुत ऊंचा उठ जाता है, परन्तु भाग्य-लेखन तो विधाता के हाथ में है। विधाता जब मानव को इस संसार में भेजती है, तभी उसके भाग्य का लेखन हो जाता है, इसीलिए इस भाग्य-लेखन में हमारा सीधा कोई हस्तक्षेप नहीं है।

व्यावहारिक रूप में देखा जाय तो यह धारण भी गलत साबित होती है, कि परिश्रम से भाग्य निर्माण हो सकता है। मैंने और आपने भी समाज में चारों ओर देखा होगा कि व्यक्ति परिश्रम करता है, अपने खून को जलाता है, कठिन से कठिन कार्य करता है, परन्तु फिर भी वह अपने जीवन की आवश्क सुविधाएं भी प्राप्त नहीं कर पाता, इसलिए परिश्रम से भाग्य का निर्माण होना

केवल शब्द प्रवंचना है, वास्तविकता से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

शास्त्रों में लिखा है कि भाग्य लेखन विधाता करती है, और अपने आपको मानव अपने प्रयत्न या परिश्रम से नहीं बदल सकता। केवल एक ही तत्व ऐसा है, जिससे भाग्य में परिवर्तन किया जा सकता है, अशुभ लेखन को शुभता में परिवर्तित किया जा सकता है, यदि भाग्य में दरिद्रता लिखी है, तब भी उसे भाग्य में परिवर्तन कर श्री सम्पन्नता लिखी जा सकती है, और यह तत्व है— "साधना"

यहां पर यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि साधना और धार्मिकता अपने आप में अलग-अलग बातें है, हम जो प्रातःकाल उठकर भगवान का नाम लेते है, माला फेरते है, या अपने इष्ट की पूजा करते है, यह धार्मिक कार्य है। इसका साधना से या अनुष्ठान से कोई सम्बन्ध नहीं। धार्मिक कार्यों से मन को शान्ति मिल सकती है, परन्तु उससे भाग्य में परिवर्तन सम्भव नहीं हो सकता।

भाग्य में परिवर्तन साधना अनुष्ठान से ही हो सकता है। यह अनुष्ठान एक विशेष प्रकार से क्रिया सम्पन्न होना है, जिसमे एक निश्चित तरीके से निश्चित प्रकार से मन्त्र जाप कर उस कार्य की सिद्धि प्राप्त करना होता है, जिससे कि हमारे भाग्य में यदि निर्धनता है तो उसे अनुकूलता दी जा सके।

मुझे जीवन के ऐसे सैंकड़ों उदाहरण ज्ञात है, जब जीवन के उत्तरार्द्ध तक व्यक्ति दरिद्रता के पंक में ग्रस्त रहा। जीवन की आवश्यकताएं भी पूरी नहीं कर सका, परन्तु साधना के द्वारा और एक निश्चित अनुष्ठान सम्पन्न करने के बाद वह आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सूक्ष्म और सम्पन्न हो सका, और आज उसे समाज में श्रेष्ठता सम्मान प्राप्त है।

इसीलिए कई ठौर हम देखते है कि धार्मिक व्यक्ति भी दरिद्र और अभाव ग्रस्त होते है, ऐसी स्थिति में हम भगवान के विधान पर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहते है कि भगवान के घर में न्याय नहीं है, यह व्यक्ति धर्मात्मा है, नित्य चार पांच घण्टे पूजा करता है, भगवान का स्मरण करता है, व्रत उपवास आदि करता है, फिर भी यह दरिद्र है, आभ व ग्रस्त है, जबकि दूसरी ओर कोई दूसरा व्यक्ति चालाक है, धूर्त है, समाज में सहायक नही, फिर भी सम्पन्न है।

पर यह हमारे समझने की ही भूल है। धार्मिक होना, पूजा पाठ करना भगवान का नाम लेना अपने आप में एक अलग बात है, और अनुष्ठान तथा

साधना करना बिल्कुल दूसरी बात। यह निश्चित है कि यदि सही प्रकार से साधना या अनुष्ठान सम्पन्न किया जाय तो वह जीवन की दरिद्रता को मिटा सकता है, आर्थिक अभावों को समाप्त कर सकता है तथा जीवन की समस्त सुविधायें और भौतिक सुख प्राप्त कर सकता है।

शास्त्रों में लक्ष्मी से सम्बन्धित कई अनुष्ठान और साधनाएं व्यक्त की गई है जो तन्त्र से सम्बन्धित भी है और मन्त्र से सम्बन्धित भी। "तन्त्र" अपने आप में कोई दूषित या हेय नही है। "तन्त्र" एक पवित्र और श्रेष्ठ शब्द है, इसका तात्पर्य भली प्रकार से कार्य को व्यवस्थित करना है, इसीलिये हम 'प्रजा-तन्त्र' शब्द का प्रयोग करते है, इसका तात्पर्य यही है कि प्रजा की व्यवस्था प्रजा के हाथों सुचारू रूप से हो। इसी प्रकार तन्त्र किसी भी सम्बन्धित मन्त्र को सुचारू रूप से सम्पन्न करने की क्रिया को कहते है। तांत्रिक ग्रन्थों में कहीं पर भी मद्य मांस या सम्भोग आदि को प्रश्रय नहीं दिया है। यह तो बाद में कुछ कामी और भोगी तांत्रिकों ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए इन तत्वों को आवश्यक बना दिया है और इसीलिये यह "तन्त्र" शब्द समाज में बदनाम हो गया है।

इसीलिये लक्ष्मी से सम्बन्धित साधना अनुष्ठान शुद्ध, सात्विक रूप में मन्त्र साधना या तन्त्र साधना के माध्यम से सम्पन्न कर सकते है।

शास्त्रों में लक्ष्मी से सम्बन्धित साधना अनुष्ठान करने पर निम्नलिखित लाभ स्वत: ही प्राप्त होने लगते है, और ये सभी लाभ या इनमें से अधिकांश लाभ समग्र रूप से प्राप्त होने लगते है, ऐसा विधान बताया है, इसके अनुसार लक्ष्मी से संबंधित कोई भी अनुष्ठान या साधना सम्पन्न की जा रही हो, उसको निम्न लाभ होने लगते है।

१- आर्थिक उन्नति होने लगती है।

२- दरिद्रता समाप्त होती है और नये-नये लाभ अनुभव होने लगते है।

३- अर्थ प्राप्ति से सम्बन्धित जो बाधाएं होती है, वे दूर होती है।

४- यदि नौकरी नहीं लगी हो तो नौकरी लगने के आसार बनते है।

५- मनोवांछित नौकरी लगती है और बेकारी समाप्त होती है।

६- यदि नौकरी में बाधाएं आ रही हों, या अनुकूलता प्राप्त नहीं हो रही हो तो बाधाएं समाप्त होकर अनुकूलता प्रारम्भ होती है।

७- यदि नौकरी (शास्त्रों में नौकर को 'संयोजन' शब्द से स्पष्ट किया है) में प्रमोशन या उन्नति नहीं हो रही हो तो उन्नति प्रमोशन होता है ।

८- यदि नौकरी में अधिकारी से मतभेद हो और उससे बाधाएं आ रही हो तथा परस्पर मनमुटाव या कठिनाइयां आ रही हो तो वे दूर हो जाती है ।

९- यदि मन में व्यापार प्रारम्भ करने की इच्छा होती है तो इसके लिए अवसर मिलता है ।

१०- व्यापार प्रारम्भ होता है, और बाधाएं दूर होती है ।

११- यदि व्यापार में अनुकूलता अनुभव नहीं हो रही हो तो अनुकूलता आने लगती है ।

१२- यदि व्यापार में सफलता नहीं मिल रही हो तो सफलता मिलनी शुरू हो जाती है ।

१३- यदि मनोवांछित व्यापार न हो तो व्यापार बदलकर मनोवांछित हो जाता है ।

१४- यदि दरिद्रता होती है तो वह दरिद्रता समाप्त हो जाती है ।

१५- यदि व्यापार में राज्य बाधा (इन्कमटेक्स-सेल्सटेक्स बाधा) हो, या इससे सम्बन्धित कठिनाइयां आ रही हो तो वे कठिनाइयां दूर हो जाती है ।

१६- यदि व्यापार सफलतापूर्वक नहीं चल रहा हो तो वह सफलतापूर्वक चलने लग जाता है ।

१७- यदि बाजार में व्यापार की प्रतिष्ठा में कमी आ रही हो तो पुनः प्रतिष्ठा बन जाती है ।

१८- व्यापार में श्रेष्ठता प्रारम्भ हो जाती है और पूर्णता आने लगती है ।

१९- नये व्यापार प्रारम्भ होते है और सभी प्रकार के व्यापारों में सफलता मिलने लग जाती है ।

२०- यदि पार्टनर के बीच मतभेद होते है तो मतभेद दूर हो जाते है या पार्टनर हट जाता है ।

२१- व्यापार में प्रतिष्ठा, सम्मान, यश और श्रेष्ठता प्राप्त होने लग जाती है ।

२२- यदि आप किसी व्यवसाय में है वकालात, घरेलू कार्य, पूजा-पाठ

धार्मिक कार्य सम्पादन, लेखन या ऐसे ही कार्य हो तो उन कार्यों में सफलता मिलने लग जाती है, और मनोवांछित पूर्णता प्राप्त होती है।

२३- किसी भी प्रकार के कार्य-संयोजन में बाधाएं नहीं आती और सफलता मिलने लग जाती है।

२४- आर्थिक अभाव समाप्त होता है और घर में धन इकट्ठा होने लग जाता है।

२५- मन में प्रसन्नता बढ़ती है, चिन्ताएं दूर होती है तथा आर्थिक समस्याएं नहीं रहती।

२६- समाज में सम्मान और यश प्राप्त होने लगता है।

२७- यदि दिवालिया होने की स्थिति आ रही हो तो वह दूर होती है और समाज में सम्मान मिलता है।

२८- पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त होता है, सन्तान यदि बिगड़ी हुई हो या सहयोग नहीं दे रही हो तो वह अनुकूल होती है।

२९- पति-पत्नि के मतभेद दूर होते है, तथा गृहस्थ जीवन अनुकूल बनता है।

३०- घर में पूर्ण सुख-शान्ति और आनन्द का वातावरण बना रहता है।

३१- धार्मिक और सामाजिक कार्य सम्पन्न होते है, और जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

३२- जीवन के जितने भी भोग है उनमें सफलता मिलने लगती है, विदेशयात्रा यात्राएं, धार्मिक कार्य, पुरुषत्व-प्राप्ति, विवाह, सन्तान प्राप्ति, सन्तान-सुख आदि होते है।

३३ जीवन की जितनी भी समस्याएं अनुभव होती है वे दूर होती है।

३४ ऊपर लिखे बिन्दुओं के अतिरिक्त भी जो जीवन की समस्याएं होती है, वे सभी समस्यायें दूर होकर पूर्ण सुख, सन्तोष, सम्मान, यश, वैभव प्राप्त होता है और अपने जीवन में पूर्ण भोगों को भोगता हुआ अन्त में धार्मिक कार्य सम्पन्न होने से मोक्ष प्राप्ति होती है।

वस्तुतः श्री साधना या लक्ष्मी साधना जीवन का आवश्यक और महत्त्वपूर्ण

बिन्दु है, हम चाहें किसी भी धर्म या जाति के हो, किसी भी प्रकार की विचारधारा से युक्त हो, यह साधना प्रत्येक व्यक्ति की अनुकूलता के लिए आवश्यक है।

आवश्यकता इस बात की है कि विधि विधान के साथ साधना सम्पन्न करें (योग्य ब्राह्मणों अथवा पण्डितों द्वारा साधना सम्पन्न करावें)। यदि साधना में कोई बाधा आ जाती है या गलत मन्त्र उच्चारण होता है, तब भी उसका कोई विपरीत प्रभाव परिणाम नहीं भोगना पड़ता, क्योंकि यह सौम्य-साधना है, और ऐसी साधना में अपूर्णता रहने पर भी विपरीत परिणाम नहीं होते, अपितु कुछ लाभ ही होता है।

नीचे मैं सैकड़ों हजारों लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाओं में से कुछ साधनाएँ प्रस्तुत कर रहा हूं, जिनमें से अधिकांश अब तक गोपनीय रही है, ये सभी साधनाएं परीक्षित है, मेरे या मेरे शिष्यों द्वारा सम्पन्न की हुई है, और इसके निश्चित अनुकूल परिणाम प्राप्त हुए है।

१- लक्ष्मी बीज प्रयोग

यह प्रयोग महत्वपूर्ण है, और इस बीज मन्त्र का प्रयोग मनुष्य किसी भी समय कर सकता है। इसके लिए वह आवश्यक नहीं है कि वह किसी एक स्थान पर ही बैठे या मन्त्र जप करते समय हाथ में माला या कोई अन्य उपकरण हो, यह भी आवश्यक नहीं है कि वह आसन बिछाकर या दीप जलाकर ही बैठे।

यह तो बीज मन्त्र है और इसका निरन्तर मानसिक जप, उठते-बैठते-सोते जागते किया जा सकता है। इस मन्त्र जप को पुरुष या स्त्री कोई भी किसी भी समय कर सकता है।

मन्त्र

"श्रीं"

यह एक अक्षर का बीज मन्त्र है और लक्ष्मी को अत्यन्त प्रिय है, इसका मानसिक जप करना उचित रहता है, इसके लिए मन्त्र गणना आवश्यक नहीं होती।

२- लक्ष्मी कमला मन्त्र

यह मन्त्र लक्ष्मी का प्रिय श्रेष्ठ मन्त्र कहा गया है, तथा इस मन्त्र से विशेष आर्थिक अनुकूलता और व्यापारिक उन्नति सम्भव है, इस मन्त्र को पुरुष या स्त्री कोई भी जप सकता है।

इसके लिए यह आवश्यक है कि आसन बिछा कर पूर्व या उत्तर की तरफ मुंह करके साधक को बैठना चाहिए और सामने अगरबत्ती एवं घी का दीपक लगा लेना चाहिए।

यदि सामने 'गज लक्ष्मी' का चित्र हो तो ज्यादा उचित रहता है। इस चित्र में लक्ष्मी बैठी हुई होती है तथा इसके दोनों तरफ हाथी इस पर जल वर्षा या घट-वर्षा करते है। इस चित्र को कांच के फ्रेम में मंढवाकर सामने रख देना चाहिए।

इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र की एक माला या ग्यारह मालाएं फेरनी चाहिए कुल मिलाकर इस अनुष्ठान में सवा लाख मन्त्र जप होता है इसलिए साधक को चाहिए कि कुल मिलाकर १२५० मालाएं फेरने पर सवा लाख मन्त्र जप हो जाता है।

इस मन्त्र को या तो प्रातःकाल जपना चाहिए अथवा रात्रि को जपा जा सकता है, पर इस बात का ध्यान रखें कि यह सवा लाख मन्त्र जप चालीस दिन में पूरा हो जाना चाहिए, इस प्रकार चालीस दिन का अनुष्ठान करने के लिए नित्य जितनी भी सम्भव हो, मालाएं फेरी जा सकती है।

परन्तु यदि अनुष्ठान के रूप में इस मन्त्र को नहीं जपना है तो साधक को नित्य अपनी पूजा में एक माला या ग्यारह मालाएं फेरनी चाहिए।

अनुष्ठान के रूप में यदि मन्त्र जप सवा लाख पूरा कर लें तब इसी मन्त्र में दूध के बने पेड़ों से आहुतियां देनी चाहिए और प्रत्येक आहुति देते समय मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए।

मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः

यह मन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है, साधकों ने इससे विशेष लाभ उठाया है। मन्त्र जप में भूल कर के भी रुद्राक्ष माला का प्रयोग नहीं करना चाहिए, लक्ष्मी से सम्बन्धित मन्त्र जप में कमल गट्टे की माला सबसे अधिक उपयुक्त एवं लाभकारी मानी गई है, परन्तु यह माला भी मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

३– महालक्ष्मी मन्त्र

यह मन्त्र श्रेष्ठ मन्त्र है, इस मन्त्र को शुक्रवार से प्रारम्भ करना चाहिए। और चांदी अथवा कांसे की थाली में सवा पाव चावल बिछाकर उस पर

नारियल का एक गोला जल से स्नान कराकर रख दे, उस गोले के ऊपर श्वेत चन्दन से 'श्रीं' बीज लिखकर गोले की पूजा करनी चाहिए, उस पर सफेद फूल चढावे और दूध के बने प्रसाद का भोग लगावे।

इसके बाद वह थाली और उसमें रखे हुए चावल यथावत रहने दें, और नित्य उसके सामने १०८ बार निम्नलिखित महालक्ष्मी मन्त्र का जप करें।

जब तक पाठ करे घी का दीपक अवश्य जलावें। साधक श्वेत वस्त्र धारण करे, श्वेत आसन पर बैठे, कमल गट्टे की माला से जप करे और एक समय भोजन करें।

यदि साधक अनुष्ठान के रूप में इस मन्त्र का प्रयोग करना चाहे तो निम्न महालक्ष्मी मन्त्र की १२५० मालाएं अर्थात् सवा लाख मन्त्र जप करें और चालीस दिन में यह अनुष्ठान सम्पन्न कर ले, इसके बाद बादाम से १०८ आहुतियां इसी मन्त्र से दें।

यदि साधक अनुष्ठान के रूप में इस मंत्र को नहीं करे तो नित्य एक माला फेरे और इस प्रकार एक वर्ष पर्यन्त करे। वर्ष के अन्त में ब्राह्मण-भोजन करें, और वह थाली, चावल, गोला आदि ब्राह्मण को दान कर दें। ऐसा करने पर मनोवांछित लक्ष्मी प्राप्त होती है, व्यापार में उन्नति होती है तथा आर्थिक दृष्टि से पूर्णता एवं सम्पन्नता प्राप्त होती है।

मन्त्र

ॐ ऐं श्रीं महालक्ष्म्यै कमल-धारिण्यै गरुड़ वाहिन्यै श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा।

यह मन्त्र अत्यन्त श्रेष्ठ और व्यापार वृद्धि में विशेष रूप से सहायक बताया गया है, दूसरे रूप में इसको व्यापार लक्ष्मी मन्त्र भी कहते है। अतः यदि व्यापार नहीं हो रहा हो या व्यापार में बाधाएं आ रही हो या व्यापार में आर्थिक उन्नति नहीं हो रही हो, तो यह मन्त्र और इसका अनुष्ठान विशेष रूप से लाभ दायक होता है।

४– धनदा मन्त्र

बेल की लकड़ी के आठ अंगुल चौड़े तथा दस अंगुल लम्बे टुकड़े पर रक्त चन्दन तथा केशर से "ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा" लिख ले तथा इसे घर के पूजा स्थान में किसी भी शुक्रवार को प्रातःसूर्योदय के समय स्थापित कर दें।

इसमें कमल गट्टे की माला या हल्दी की माला का प्रयोग किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है।

साथ ही साथ नित्य इसी मन्त्र की सोलह आहुतियां दें, ये आहुतियां दूध के बने पेड़ों से दी जानी चाहिए।

इस प्रकार ४८ दिन तक यह प्रयोग करें। ४९ वें दिन इसी मन्त्र से १०८ आहुतियां दे और उस बेल के टुकड़े को अपने पूजा स्थान में बना रहने दें या अपनी दुकान अथवा फक्ट्री में स्थापित कर दें तो निश्चित रूप से धन प्राप्ति होती है तथा दरिद्रता का निवारण होता है।

मन्त्र

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्त
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि कात्वदन्या
सर्वोपकार करणाय सदार्द्र–चित्ता।

यह मन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और लोगों ने इस मन्त्र से विशेष लाभ उठाया है।

साधक को चाहिए कि वह इस मन्त्र का शुद्ध उच्चारण किसी पण्डित से समझ ले और इसके बाद इस प्रयोग को सम्पन्न करे तो उसके जीवन में आर्थिक एवं व्यापारिक दृष्टि से किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

५– श्री मंजु घोष प्रयोग

यह "धान्य लक्ष्मी प्रयोग" कहा जाता है। दरिद्रता निवारण एवं घर में धन धान्य की वृद्धि की दृष्टि से यह मन्त्र प्रयोग अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना जाता है।

यह प्रयोग भोजन करते समय ही किया जाता है। साधक को दिन में एक या दो बार आसन पर बैठकर भोजन करना चाहिए। इसके अलावा दिन में अपने मुंह को झूठा नहीं करना चाहिए।

भोजन करने से पूर्व जब थाली परोसी हुई सामने आ जाय तो हाथ जोड़-कर मन ही मन निम्नलिखित मंजु घोष लक्ष्मी का ध्यान करना चाहिए।

शशधरमिव शुभ्रं खड्ग पुस्तांक-पाणि
चुरुचिरमति-शान्तं पंच चूडं कुमारम् ।
पृथुतर वर मुख्यं पद्म पत्रायनाक्षं
कुमति दहन दक्षं मंजु घोषं नमामि ।।

अर्थात् चन्द्रमा के समान शुभ्र वर्ण वाले, एक हाथ में खड्ग तथा दूसरे हाथ में पुस्तक लिए हुए, अत्यन्त शान्त और मनोरम छवि वाले, जिनके मस्तक पर पांच चूड़ाएं है, ऐसे स्थूल शरीर वाले तथा कमल की पंखुड़ियों के समान बड़ी बड़ी आंखों वाले, दुर्बुद्धि को नष्ट करने में समर्थ मंजु घोष को मैं प्रणाम करता हूं ।

इस ध्यान के बाद नीचे लिखे षडाक्षर मन्त्र का मन ही मन १०८ बार जप करें । इसके लिए माला आदि की आवश्यकता नहीं है । अनुमानतः १०८ बार उच्चारण कर लेना चाहिए ।

मन्त्र

अ र व च ल धीं

यह छः अक्षरों का मन्त्र महत्वपूर्ण है, भोजन करते समय भी साधक को मन ही मन इस मन्त्र का जप करते रहना चाहिए ।

भोजन कर चुकने के बाद थाली के पानी में उंगलियां डुबोकर इन अक्षरों को लिख दे और फिर भोजन समाप्त कर खड़ा हो जाय

भोजन समाप्त कर हाथ मुंह शुद्ध कर पुनः इस मन्त्र का मन ही मन १०८ बार उच्चारण करें ।

यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इससे शीघ्र ही धन की प्राप्ति हो लगती है । आर्थिक अनुकूलता प्रारम्भ होती है, और घर में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता ।

६- दरिद्रता निवारण लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग मात्र २० दिन का है । साधक प्रातःस्नान कर शुद्ध वस्त्र

धारण कर सफेद आसन पर पूर्व की तरह मुंह कर बैठ जाय। सामने अगरबत्ती व दीपक लगा ले फिर हाथ में जल लेकर मन ही मन संकल्प करे कि मैं दरिद्रता निवारण के लिए यह लक्ष्मी अनुष्ठान प्रारम्भ कर रहा हूं। इस प्रकार प्रतिदिन मन्त्र जप करने से पूर्व यह संकल्प करना चाहिए।

इसके बाद हाथ में जल लेकर विनियोग करे (यह विनियोग भी प्रतिदिन किया जाना चाहिए)।

अस्य श्री सर्वा बाधा विनिर्मुक्तेति मन्त्रस्य, शंकर ऋषि, अनुष्टुप, छन्दः, श्री धनदा देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग।

इसके बाद मन्त्र जप करे—

मन्त्र

ॐ सर्वा बाधा विनिर्मुक्तो धन धान्य समन्वित।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥

इस मन्त्र की नित्य जप संख्या ५०० है और केवल २० दिन तक यह मन्त्र जप करना चाहिए, कुल दस हजार मन्त्र जप होने पर यह साधना सम्पन्न हो जाती है।

७– चतुरा लक्ष्मी बीज मन्त्र प्रयोग

यह प्रयोग मात्र ३६ दिन का है और इसमें नित्य प्रातः साधक को स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण कर सफेद आसन पर बैंठकर पूर्व की तरफ मुंह करके कमल गट्टे की माला से निम्न बीज मन्त्र की २१ मालाएं फेरनी चाहिए।

इसमें इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि जिस समय पहले दिन यह मन्त्र जप प्रारम्भ हो, नित्य मन्त्र जप उसी समय प्रारम्भ होना चाहिए। इसमें समय का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए, मन्त्र जप प्रारम्भ बदलना नहीं चाहिए।

कमल गट्टे की माला की अपेक्षा स्फटिक मणि माला का प्रयोग किया जाय तो यह ज्यादा उचित रहता, है परन्तु यह माला मंहगी होती है, और प्रत्येक

साधक के बस की बात नहीं होती, इसलिए जो साधक स्फटिक माला प्राप्त नहीं कर सकें, उन्हें चाहिए कि कमल गट्टे की माला का प्रयोग करें।

मन्त्र

'ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं'

यह मन्त्र अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है और ये चार अक्षर सही रूप में लक्ष्मी के चार बीज मन्त्र है, इसलिए इनका संयुक्त जप अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना है।

८- दशाक्षर लक्ष्मी मन्त्र

शारदा तिलक ग्रन्थ में इस मन्त्र की बहुत अधिक प्रशंसा की है, और बताया है कि यह मन्त्र दरिद्रता विनाश के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यदि व्यक्ति के घर में दरिद्रता छा गई हो और प्रयत्न करने पर भी वह सफलता प्राप्त नहीं कर रहा हो तो उसे चाहिए कि वह इस मन्त्र का प्रयोग नित्य करें।

इसके लिए साधक को नित्य रात्रि को जप करना चाहिए और जब यह जप सवा लाख हो जाता है, तो उसे सिद्धि प्राप्त हो जाती है, तथा सफलता मिलने लग जाती है। सवा लाख मन्त्र जप का अर्थ कुल मिलाकर १२५० मालाएं फेरने से होता है। यह ४० दिन का प्रयोग होना चाहिए। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि साधक को नित्य एक नियमित निश्चित मन्त्र जप समाप्त करने चाहिए।

साधक को सामने अगरबत्ती व शुद्ध घृत का दीपक लगाना चाहिए और सफेद वस्त्र धारण कर आसन पर बैठना चाहिए, आसन किसी भी रंग का हो सकता है, परन्तु काले रंग का आसन नहीं होना चाहिए।

इस साधना में साधक को नित्य एक समय भोजन करना चाहिए भोजन में वह कोई भी वस्तु ले सकता है, परन्तु मांस मदिरा, प्याज लहसुन आदि वस्तुओं का प्रयोग निषेध है।

मन्त्र

ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा।

यह दस अक्षरों का मन्त्र लक्ष्मी का अत्यन्त प्रिय है और दरिद्रता निवारण में इसे विशेष रूप से अनुकूल बताया गया है।

नित्य मन्त्र जप करने से पूर्व साधक को हाथ में जल लेकर यह संकल्प करना चाहिए कि वह यह प्रयोग किस कार्य के लिए कर रहा है।

६- सिद्ध लक्ष्मी प्रयोग

सिद्ध लक्ष्मी प्रयोग अपने आप में महत्वपूर्ण है क्योंकि इस मन्त्र का प्रयोग स्वयं इन्द्र ने लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिये किया था।

इस मन्त्र में साधक को सवा लाख मन्त्र जप करना होता है, और यह ४० दिन में समाप्त होना चाहिए, इसके बाद इसका पुरश्चरण दस हजार आहुतियों का होता है। यदि आहुतियां न दी जा सके तो दस हजार मन्त्र जप और कर लेना चाहिए, आहुति में केवल घी का प्रयोग किया जाता है।

मन्त्र जप करने से पूर्व नित्य हाथ में जल लेकर विनियोग करना चाहिए। विनियोग इस प्रकार है।

ॐ अस्य श्री सिद्ध मन्त्रस्य हिरण्य गर्भऋषि।
अनुष्टुप छंद, श्री महाकाली महा सरस्वत्यो देवता:।
श्रीं बीजम्। ह्रीं शक्ति: क्लीं कीलकम् मम सर्वक्लेशपीडा
परिहारार्थं सर्व दुख दारिद्रनाशनार्थं सर्वकार्य सिद्ध यर्थं च
श्री सिद्धलक्ष्मीमन्त्रजपे विनियोग:॥

यह विनियोग नित्य होना चाहिए और इसके बाद मूल मंत्र का जप प्रारम्भ कर देना चाहिए, यह मंत्र जप दिन को या रात्रि को किसी भी समय किया जा सकता है।

मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध लक्ष्म्यै नम:

इस मंत्र में स्फटिक माला का ही प्रयोग किया जाता है, इसके अलावा यदि अन्य प्रकार की माला का प्रयोग किया जाय तो उसमें अनुकूलता प्राप्त

नहीं होती। स्फटिक मणि माला १०८ मनकों की होनी चाहिए, और जब जप पूर्ण हो जाय तो उस माला को अपने गले में धारण कर लेना चाहिए।

१०– द्वादशाक्षर महालक्ष्मी मन्त्र प्रयोग

जिसके जीवन में व्यापारिक बाधाएं आ रही हो या प्रयत्न करने पर भी व्यापार में उन्नति नहीं हो रही हो या उसकी बिक्री नहीं बढ रही हो अथवा व्यापार में किसी प्रकार की अड़चन आ रही हो, तो उसे इस मंत्र का प्रयोग या अनुष्ठान अवश्य करना चाहिए। यह मंत्र अनुभूत है और कई व्यापारियों ने इसका लाभ उठाया है।

इसमें दो वस्तुओं का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। एक तो यह है कि यह प्रयोग ३२ दिन या ६० दिन में पूरा होना चाहिए तथा इसमें सवा लाख मन्त्र का जप करना चाहिए, जितने दिन का प्रयोग हो, उतने दिन में यह मन्त्र जप सम्पन्न होना चाहिए। मन्त्र जप पूरा होने पर साधक को दस हजार घी की आहुतियां इसी मन्त्र से दे देनी चाहिए और यदि सम्भव न हो तो मात्र दस हजार मन्त्र जप और कर लेना चाहिये।

यह प्रयोग **स्वर्णाकर्षण गुटिका** पर ही सम्पन्न होता है, अतः साधना करने से पूर्व ही इस गुटिका को प्राप्त कर लेना चाहिए। यह गुटिका काले रंग की होती है और सूर्य के सामने रखकर यदि इसे देखा जाय तो इसमें से काले रंग के अलावा अन्य रंग की झांई दिखाई देती है।

यह स्वर्णाकर्षण गुटिका मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिये और मन्त्र प्रयोग करने से पूर्व इसे स्थापित कर देना चाहिए। स्थापित कर देने के लिये किसी विशेष विधि विधान की आवश्यकता नहीं है, केवल चांदी की थाली या चांदी की कटोरी में अथवा किसी अन्य धातु की थाली में चावल की ढेरी बनाकर उस पर इस गुटिका को रखकर इस मन्त्र का जप करना चाहिए।

जप करते समय सामने शुद्ध घी का दीपक और अगरबत्ती जला लेनी चाहिए और यह मन्त्र जप नित्य इस गुटिका के सामने ही करना चाहिए।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो इस गुटिका को अपनी दुकान में स्थापित कर लेना चाहिए या जहां पर रुपये पैसे रखते हो वहां पर इस गुटिका को रख

देना चाहिए, इससे उसके जीवन में व्यापार वृद्धि तथा आर्थिक उन्नति स्वतः ही होने लगती है।

यह प्रयोग पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, इसमें विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है।

साधक को प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पूर्व की तरफ मुंह कर सामने स्वर्णाकर्षण गुटिका रखकर अगरबत्ती व दीपक लगाकर इस मन्त्र का प्रयोग प्रारम्भ कर देना चाहिए। आसन किसी भी प्रकार का हो सकता है, यदि इस प्रयोग में कमल गट्टे की माला का प्रयोग किया जाय तो ज्यादा अनुकूल रहता है।

मेरे अनुभव में यह भी आया है कि यदि कोई साधक सवा लाख मन्त्र जप न कर सके और यदि वह एक दिन में अर्थात् मात्र २४ घन्टे में दस हजार मंत्र जप कर लेता है, तब भी यह गुटिका सिद्ध हो जाती है और पूरा अनुष्ठान करने की जरूरत नहीं होती, दस हजार का तात्पर्य सौ मालाएं फेरने से है।

इसमें बीच में साधक तीन बार विश्राम ले सकता है, पहली बार ३५ मालाएं पूरी करने के बाद दूसरी बार ६० मालाएं तथा तीसरी बार ८१ मालाएं पूरी करने के बाद आधे घण्टे का विश्राम ले सकता है, या अपने आसन से उठकर इधर-उधर कुछ समय के लिए घूम सकता है।

मन्त्र

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसून्यै नमः

यह मंत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और इस मंत्र का प्रयोग उन व्यापारियों को अवश्य करना चाहिए जो कि अपने जीवन में प्रयत्न करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं कर पा रहे है। मेरी राय में जो लम्बा अनुष्ठान नहीं कर सकता हो, उसे चाहिए कि वह छोटा अनुष्ठान सम्पन्न कर ले, और एक दिन में ही दस हजार मत्र जप सम्पन्न कर स्वर्णाकर्षण गुटिका को सिद्ध कर ले जिससे कि उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव न रहे।

११– ज्येष्ठा लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग महत्वपूर्ण है, और जो अपने जीवन में सभी प्रकार की उन्नति

चाहते है, उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए। मेरी राय में अपनी नित्य पूजा में इस प्रयोग को शामिल कर लेना चाहिए।

इसमें मंत्र जप का निश्चित परिमाण नहीं है, साधक को नित्य एक माला इस मंत्र की जपनी चाहिए, यदि वह प्रातःकाल इस मंत्र को जपे तो उसके लिए ज्यादा अनुकूल रहेगा।

इसके लिए श्रीयन्त्र आवश्यक है। यह यन्त्र धातु निर्मित मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए, और इसे पहले से ही प्राप्त कर लेना चाहिए। श्री-यन्त्र कई प्रकार के होते है, पर इस प्रकार के प्रयोग में धातु निर्मित कूर्म पृष्ठीय श्रीयन्त्र ही होना उचित रहता है।

किसी भी बुधवार को प्रातः सूर्योदय से दस बजे के भीतर-भीतर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर इस यन्त्र को अपने घर में पूजा स्थान में स्थापित कर लेना चाहिए। इसके लिए किसी विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं होती, सामने कोई छोटा सा लाल वस्त्र या पीला वस्त्र बिछाकर उस पर श्रीयन्त्र को रख देना ही पर्याप्त होता है।

इसके बाद निम्न मंत्र की एक माला नित्य फेरनी चाहिए। इसमें किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है, पर रुद्राक्ष की माला का निषेध है।

सामान्य रूप से यदि नित्य एक माला फेरी जाय तो चार महीने में यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, पर इसके लिए नियमित रूप से जप करना आवश्यक नहीं होता। यदि कभी कार्यवश प्रातः मंत्र जप नहीं हो सके तो दूसरे दिन दो मालाए फेरकर कार्य पूरा कर लेना चाहिए। यदि साधक कहीं कार्यवश अपने घर से बाहर जा रहा हो तो श्री यन्त्र को अपने साथ ले जा सकता है।

मन्त्र

ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मी स्वयंभुवे ज्येष्ठायै नमः

मन्त्र जप करते समय सामने अगरबत्ती व दीपक लगाना चाहिए। और साधक को चाहिए कि वह स्नान कर या हाथ पैर धोकर आसन पर बैठकर मन्त्र जप करें।

यह मन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है और आर्थिक उन्नति व्यापारिक समृद्धि, व्यापार में उन्नति, दरिद्रता निवारण, लक्ष्मी प्राप्ति और जीवन में सभी प्रकार की समृद्धि के लिए यह मन्त्र जप अत्यन्त ही अनुकूल अनुभूत और श्रेष्ठ कहा गया है।

१२- वसुधा लक्ष्मी प्रयोग प्रपंच -४४६

इस मन्त्र को सभी मन्त्रों में श्रेष्ठ मन्त्र कहा गया है। कहा जाता है कि जीवन में जितने भोग है, वे सभी इस मन्त्र के प्रभाव से प्राप्त हो जाते है।

इस मन्त्र जप में दिन अथवा मालाओं का निश्चित परिमाण नहीं होता। यदि साधक नित्य एक एक माला फेर ले तो वह पर्याप्त होती है। इस मन्त्र का प्रयोग पुरुष अथवा स्त्री कोई भी कर सकता है, इसके लिए साधक चाहे तो प्रातः काल अथवा रात्रि को मन्त्र जप कर सकता है।

सामान्य रूप से यह प्रयोग आर्थिक उन्नति और भूमि सम्बन्धी कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए किया जाता है, यदि साधक के जीवन में मकान बनाने की इच्छा हो या उसका मकान पूरा नहीं हो रहा हो, अथवा जमीन सम्बन्धी कोई विवाद हो तो इस मन्त्र का दस हजार जप करने से ही अनुकूलता प्राप्त होती है।

यदि यह प्रयोग श्री यन्त्र के सामने किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है, यह श्री यन्त्र कूर्म पृष्ठीय धातु निर्मित मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए और सामने लाल वस्त्र पर इस श्री यन्त्र को स्थापित कर उसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर इस मन्त्र की नित्य एक माला फेरनी चाहिए।

यदि बीच में कभी माला न फेरी जा सके तो दूसरे दिन दो माला फेर कर क्रम को सम्पन्न किया जा सकता है।

मन्त्र

ॐ ग्लौं श्रीं अन्नंमह्यन्नं मे तेह्यान्नाधिपतये ममानं प्रदापया स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ

वस्तुतः यह मन्त्र महत्वपूर्ण है और १८ अक्षरों वाला यह मन्त्र जीवन में पूर्णता देने के लिए अनुकूल है।

ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मयि अन्नं मे देहि अन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ

कहते है कि दस हजार मन्त्र जप से साधक को पूर्णता एवं अनुकूलता प्राप्त हो जाती है।

१३- श्रेष्ठ लक्ष्मी मन्त्र प्रयोग

यह मन्त्र भी आर्थिक उन्नति के लिए अनुकूल है, परन्तु इस मन्त्र जप में साधक को नित्य एक माला फेरनी आवश्यक है और ग्यारह दिन में ही यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

शास्त्रीय ग्रन्थों में इस मन्त्र की विशेष प्रशंसा की है और कहा गया है कि लक्ष्मी के जितने भी मन्त्र है उन सब में यह मन्त्र श्रेष्ठ एवं अद्भुत सफलतादायक है।

यह मन्त्र जप नित्य १०८ बार होना चाहिए अर्थात् साधक को नित्य एक माला फेरनी चाहिए और ११ दिन में ही यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

जिसके जीवन में आर्थिक अभाव है या प्रयत्न करने पर भी आर्थिक उन्नति नहीं हो पाती हो अथवा व्यापार प्रारम्भ करना चाहते हो, और व्यापार में सफलता नहीं मिल रही हो अथवा व्यापार में बाधाएं आ रही हो या प्रयत्न करने पर भी बिक्री नहीं बढ़ रही हो, अथवा अन्य किसी प्रकार की आर्थिक उन्नति में अड़चन आ रही हो तो यह मन्त्र राम-बाण की तरह असर करता है और उसके जीवन में निश्चित रूप से आर्थिक उन्नति होने लग जाती है।

मैंने स्वयं इस मन्त्र का प्रयोग किया है और अनुभव किया है कि आर्थिक उन्नति में यह मन्त्र विशेष रूप से सफलतादायक है, जीवन में आर्थिक दृष्टि से किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता हो या सफलता नहीं मिल रही हो, तो इस मन्त्र से निश्चित रूप से सफलता मिलने लग जाती है।

मेरी दृष्टि में यह प्रयोग कम समय का है, और जल्दी असर करने वाला है अतः इस मन्त्र का प्रयोग साधक को अवश्य करना चाहिए।

साधक को प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पूर्व की तरफ मुंह कर सफेद आसन पर बैठ जाना चाहिए। यह आसन सूती या ऊनी किसी भी

प्रकार का हो सकता है। सामने अगरबत्ती व दीपक लगा लेना चाहिए। इस मन्त्र के प्रयोग में स्फटिक माला या कमल गट्टे की माला का ही प्रयोग किया जाता है।

मन्त्र जप करने से पूर्व सामने थाली में चावल की ढेरी बनाकर उस पर कनकधारा यन्त्र स्थापित कर लेना चाहिए। यह यन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है और इस मन्त्र से यन्त्र ज्यादा सम्बन्ध रखता है, अतः इस यन्त्र के सामने ही मन्त्र प्रयोग करने पर सफलता मिलती है।

यह कनकधारा यन्त्र धातु निर्मित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए, और अनुष्ठान करने से पूर्व ही इसे प्राप्त कर घर में स्थापित कर लेना चाहिए, स्थापित करने के लिए किसी विशेष विधि विधान की आवश्यकता नहीं होती।

इसके बाद नित्य इस मन्त्र का जप इस यन्त्र के सामने करना चाहिए, ऐसा करने पर व्यक्ति कुछ ही दिनों में चमत्कारिक अनुभव प्राप्त करने लगता है और वह स्वयं अनुभव करता है कि जीवन में बिना किसी हिचकिचाहट के बाधाओं को पार करता हुआ सफलता प्राप्त कर रहा है।

मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मंदिरे तिष्ठतिष्ठ स्वाहा।

यह २३ अक्षरों का मन्त्र लक्ष्मी का अत्यन्त प्रिय मन्त्र है और लक्ष्मी ने स्वयं वशिष्ट को यह बताया था और कहा था कि यह मन्त्र मुझे सभी दृष्टियों से प्रिय है और जो इस मन्त्र का एक बार भी उच्चारण कर लेता है मैं उसके घर में स्थापित हो जाती हूं।

घर से दरिद्रता मिटाने और आर्थिक उन्नति के लिए इस मन्त्र के मुका-बले में अन्य कोई मन्त्र नहीं है।

वस्तुतः मेरे अनुभव में यह मन्त्र विशेष अनुकूल है।

१४– महालक्ष्मी मन्त्र

इस मन्त्र का प्रयोग भी ऊपर वाले प्रयोग के समान है जिस प्रकार से श्रेष्ठ लक्ष्मी मन्त्र प्रयोग की विधि ऊपर प्रयोग संख्या १३ में दी है उसी प्रकार से इस मन्त्र का भी प्रयोग किया जाना चाहिए। इसमें भी कनकधारा यन्त्र की आवश्यकता होती है, बाकी सारी विधि उसी प्रकार से है, केवल मन्त्र जप में ही अन्तर है। इसका मन्त्र जप नौ हजार का होता है और ११ दिन में अथवा नौ दिन में यह संख्या पूरी हो जानी चाहिए।

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
मम गृहे आगच्छ आगच्छ महालक्ष्म्यै नमः

वस्तुतः यह मन्त्र अनुकूल है और साधक चाहे तो इस मन्त्र का उपयोग कर सकता है।

१५– कुबेर मन्त्र प्रयोग

यहां पर जो मैं प्रयोग दे रहा हूं, यह अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और दुर्लभ है। प्राचीन ग्रन्थों में बताया गया है कि यह मन्त्रों में सर्वश्रेष्ठ है और भगवान शंकर ने इस मन्त्र का रहस्य महाबलि रावण को बताया था तथा इसी प्रयोग से वह अपनी नगरी को सोने की बना सका था, और जीवन में आर्थिक दृष्टि से श्रेष्ठता और सम्पन्नता प्राप्त कर सका था।

वस्तुतः यह मन्त्र सभी दृष्टियों में अत्यन्त अनुकूल है। यदि किसी के जीवन में सात पीढ़ियों से दरिद्रता आ रही हो, या उसके जीवन में किसी भी प्रकार से उन्नति नहीं हो रही हो तो यह मन्त्र इसमें तुरन्त अनुकूल फल देने में समर्थ पाया गया है।

मेरे शिष्यों ने इस मन्त्र का लाभ उठाया है, और वे हमेशा हमेशा के लिए अपने जीवन में दरिद्रता मिटाने में समर्थ हो सके है।

वस्तुतः यह मन्त्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ माना गया है, व्यापारिक

आर्थिक उन्नति, और जीवन में किसी भी प्रकार की बाधाओं को दूर करने के लिए तथा पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करने के लिए यह मन्त्र प्रयोग अनुकूल है। धन धान्य, भूमि स्वयं का मकान कीर्त्ति, यश, सम्मान, विजय, दीर्घायु प्राप्त करना तथा जो जीवन में अभाव है, उनको दूर करने के लिए यह प्रयोग अत्यन्त श्रेष्ठ है। इस प्रयोग को पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है।

यह प्रयोग मात्र ११ दिन का है इसकी नित्य एक माला फेरनी चाहिए, इस प्रकार ११ दिन में ११ मालाएं फेरने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, और उसे जीवन में पूर्णता प्राप्त होने लगती है।

इसमें साधक को प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पूर्व की तरफ मुंह कर बैठ जाना चाहिए और सामने शुद्ध घी का दीपक व अगरबत्ती लगा देनी चाहिए।

इसमें कुबेर यन्त्र आवश्यक है। यन्त्र धातु निर्मित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए और साधना करने से पूर्व ही इसे प्राप्त कर लेना चाहिए।

यह यन्त्र अद्भुत सफलतादायक होता है, साथ ही साथ यदि इस कुबेर यन्त्र के सामने निम्नलिखित मन्त्र का जप किया जाता है तो कुछ ही दिनों में इसका विशेष फल प्राप्त होने लगता है।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त श्रेष्ठ है और जो व्यक्ति जीवन में पूर्ण समृद्धि, आर्थिक उन्नति और सफलता चाहते है, उन्हें इसका प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए। मेरी राय में तो प्रत्येक साधक को जीवन में एक बार इसका प्रयोग करना ही चाहिए।

यदि दीपावली की रात्रि को इस यन्त्र के सामने केवल एक माला इस मन्त्र की कर ली जाय तो तुरन्त सफलता दिखाई देती है।

इसके अलावा भी जीवन में जब भी शुभ पर्व या त्यौहार हो तो कुबेर यंत्र के सामने इस कुबेर मन्त्र का जप करने से जीवन में निरन्तर उन्नति होती रहती है और उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता है।

मन्त्र

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्यादि पतये धन धान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा ।

वस्तुतः इस मन्त्र का ११ दिन का प्रयोग तो करना ही चाहिए और यदि नित्य कुबेर यन्त्र के सामने इस मन्त्र का मात्र ११ बार उच्चारण कर लिया जाय तब भी नित्य उन्नति अनुभव कर सकता है और उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता ।

मेरी राय में जो गृहस्थ व्यक्ति अपने जीवन में आर्थिक उन्नति चाहते है और यह चाहते है कि उनके घर के अभाव समाप्त हो जाय और अपने व्यापार में अद्‌भुत सफलता चाहते है, उनको इसका प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए और अपने घर में कुबेर यन्त्र का स्थापन निश्चित रूप से कर लेना चाहिए ।

इसके अलावा भी कुबेर यन्त्र पर कई प्रकार के मन्त्र सिद्ध किये जाते है, परन्तु यह मन्त्र विशेष फलदायक है और यदि कुबेर यन्त्र के सामने इसका प्रयोग किया जाता है , तो जल्दी ही सफलता प्राप्त हो जाती है ।

वस्तुतः मैंने अपने जीवन में अनुभव किया है, कि यह प्रयोग अनुभूत सफलतादायक और आश्चर्यजनक रूप से उन्नति देने वाला है ।

१६– काम्य प्रयोग

यह प्रयोग एक सिद्ध योगी विराट बाबा द्वार बताया हुआ है जो कि अपने आप में अनुभूत, दुर्लभ और श्रेष्ठ है । जिसके घर में गरीबी या दरिद्रता हो या जो आर्थिक दृष्टि से अनुकूल होना चाहता है, उसके लिए यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है ।

इस प्रयोग में एक नारियल का उपयोग होता है । इस नारियल पर विजय काल में (जटायुक्त पूरे नारियल) "अंगोर-यन्त्र" से त्रिशूल बनावे तथा उस पर मौली बांध दे, इसके बाद उसी रात को "कीलन-मन्त्र" से उस नारियल को कीलित कर "स्वर्णावती" मन्त्र से आवद्ध करे और "शत्रु-स्तम्भन" मन्त्र से सम्पूरित कर "कनक प्रभा मन्त्र" से सिद्ध कर उस नारियल को प्रभाव युक्त बनावें ।

फिर होली की रात्रि को उस नारियल पर चावल रख दें। यदि होली की रात को समय न मिले तो नवरात्रि की प्रथम रात्रि को ऐसा किया जा सकता है और चावल युक्त वह नारियल रात के पहले पहर में अर्थात् लगभग ११ बजे से पहले-पहले चौराहे पर, या जंगल में चुपचाप रख आ जाये यह कार्य स्वयं या परिवार का कोई सदस्य अथवा शुद्ध वर्ण का नौकर कर सकता है।

इस प्रकार का प्रयोग अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि ऐसा करने से जीवन में सुख-शांती आ जाती है, घर से वह नारियल ले जाने पर उनके साथ ही साथ दरिद्रता भी हमेशा के लिए चली जाती है, यदि घर में बीमारी हो तो उस नारियल के साथ बीमारी चली जाती है, यदि शत्रु हो तो नारियल को शत्रु मानकर उसे घर से ले जावे इससे शत्रु शांत हो जाते है, और यदि मुकदमा चल रहा हो तो उसमें सफलता मिलती है, घर में भूत-प्रेत-पिशाच आदि बाधा हो तो नारियल के साथ ही चली जाती है, घर में यदि किसी प्रकार का कोई तांत्रिक प्रभाव हो तो वह दूर होता है, घर में कलह, पति-पत्नि में मतभेद संतान का कलह, जीवन में नित्य आने वाली बाधाएं आदि भी इस प्रकार के प्रयोग के साथ साथ समाप्त हो जाती है।

इस प्रकार के नारियल को ''बाधा निवारक नारियल'' कहते है, और यह नुस्खा अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना गया है, मेरी राय प्रत्येक गृहस्थ को इस प्रकार का नुस्खा साल में एक बार कर लेना चाहिए, जिससे कि वह पूरा साल उसके जीवन में अनुकूलता दे सके, और सभी दृष्टियों से सुख समृद्धि प्रदान कर सके।

१७– दक्षिणावर्ती शंख साधना

यों तो बांयी ओर से खुलने वाले शंख तो सहज प्राप्य है, पर हजारो-लाखों शंख में एक दो शंख ऐसे भी पाये जाते है जो दाहिनी ओर से खुले होते है, और ऐसे ही शंखों को दक्षिणावर्ती शंख कहा गया है।

तांत्रिक-मांत्रिक ग्रन्थों में इस प्रकार के शंख को एक स्वर से कुबेरवत् सम्पदा देने वाला बताया है, कहा गया है कि वास्तव में ही वे नर सौभाग्यशाली होते है

जिनके घर में दक्षिणावर्ती शंख होता है, यदि इस पर कोई भी प्रयोग नहीं किया जाय तो भी इस प्रकार के शंख घर में सुख-शांति और आर्थिक समृद्धि देने में सहायक होते है।

दक्षिणावर्ती शंख तीन प्रकार के होते है, जिसमें नर मादा और नपुंसक होते है इसमें नर शंख ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण और उपयोगी माने गये है, अतः साधकों को चाहिए, कि वह अपने घर में नर शंख को ही स्थापित करें।

ऐसा शंख यदि मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो तो ज्यादा उचित एवं अनुकूल रहता है।

इस प्रकार के शंख को प्राप्त कर अपने घर में पूजा स्थान में स्थापित कर देना चाहिये, और नित्य इसके सामने "दक्षिणा लक्ष्मी स्तोत्र" का एक बार पाठ करना चाहिये, ऐसा करने से उस व्यक्ति के घर में किसी भी प्रकार की दरिद्रता रह ही नहीं सकती और आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्नता तथा श्रेष्ठता आ पाती है।

इसके साथ ही साथ इस प्रकार के पाठ करने से व्यापार में सफलता और आर्थिक समृद्धि भी प्राप्त होती है, जीवन में वह जो कुछ चाहता है, वह उसे प्राप्त होना है।

दक्षिण लक्ष्मी स्तोत्र

त्रैलोक्यपूजिते दैवी कमले विष्णुवल्लभे
यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा ॥१॥
कमला चंचला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया।
पद्मा पद्मालया सम्यगुच्चैः श्रीपद्मधारिणी ॥२॥
द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मी संपूज्य यः पठेत्।
स्थिरा लक्ष्मीर्भत्तस्य पुत्रदारादिभि सह ॥३॥

इसका केवल एक पाठ ही पर्याप्त होता है, दीपावली की रात्रि को यदि दक्षिणावर्ती शंख के सामने इस स्तोत्र के १०१ पाठ किये जाय तो उसकी मन-वांछित कामना अवश्य ही पूरी होती है।

यदि इस प्रकार के शंख में जल भरकर इस स्तोत्र के मात्र ११ पाठ कर उस जल को घर में छिड़का जाय तो घर में सभी प्रकार से शान्ति और समृद्धि प्राप्त होती है।

यदि शंख पर इस स्तोत्र के नित्य २१ पाठ करे, और यह प्रयोग ११ दिन तक करें, तो व्यापार में विशेष अनुकूलता प्राप्त होती है, तथा वह अपने जीवन में जो कुछ भी इच्छा रखता है, तथा वह अवश्य ही पूरी होती है।

यदि शंख में जल भर कर इस स्तोत्र के ११ पाठ करके उस जल को दुकान के दरवाजे के आगे छिड़क दिया जाय, और इस प्रकार पांच दिन किया जाय तो उस दुकान की बिक्री बढ जाती है, और जीवन में अनुकूलता प्राप्त होने लगती है।

यदि शंख में चावल भर कर इस स्तोत्र के ११ पाठ कर उन चावलों को बीमार व्यक्ति के उपर घुमा कर दक्षिण दिशा की तरफ फैंक दिये जाय तो उस रोगी का रोग हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और प्रत्येक गृहस्थ को अपनाना चाहिए।

१८– एकाक्षी नारियल प्रयोग

संसार की दुर्लभ वस्तुओं में एकाक्षी नारियल का नाम भी है, यों तो बाजार में जो सामान्य नारियल मिलते है और उन नारियल की जटा उतारते है तो नीचे से एक कठोर गोला प्राप्त होता है, जिस पर दो आंखें सी बनी होती है।

पर हजारों नारियल में एक आध नारियल ऐसा भी पाया जाता है जिस पर एक आंख ही होती हैं, ऐसा नारियल साक्षात् लक्ष्मी का स्वरूप माना गया है और इस पर कई प्रयोग आर्थिक उन्नति के लिए किये जा सकते है।

यदि मात्र इस प्रकार का नारियल घर में रहता है, तब भी उसके जीवन में सभी दृष्टियों से अनुकूलता एवं उन्नति प्राप्त होती रहती है।

इस नारियल पर मुख्य रूप से तीन प्रयोग हैं—

१– कनक यक्षिणी साधना:—इसमें दीपावली की रात्रि को किसी थाली में चावल बिछा कर उस पर इस नारियल को रख दे, और इसकी कुंकुंम अक्षत आदि से पूजा करें। इसके बाद इसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगा ले और नीचे लिखे मन्त्र की इक्यावन मालाएं फेरें, तो निश्चित ही वह व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से आश्चर्यजनक रूप से सफलता प्राप्त करने लग जाता है, और उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से पूर्ण समृद्धि आने लग जाती है।

मन्त्र

ॐ जूं कट्टकट्ट कवकयक्षिणी ह्रीं यः यःहुं फट्।

वास्तव में ही यह मन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और लगभग चार या पांच घण्टों में इस मन्त्र की १०१ मालाएं हो जाती है, इसमें कमलगट्टे की माला का ही प्रयोग करना चाहिए, इस नारियल को अपनी तिजोरी में, दुकान में या कार्यालय में स्थापित कर दें, मेरी राय में पूजा स्थान में ही यदि इस नारियल को स्थापित रहने दिया जाय तो ज्यादा उचित रहता है।

कई बार मीठे के लालच में चूहे इस प्रकार के नारियल को काट लेते है, अतः व्यक्ति चाहे तो इस प्रकार के नारियल को किसी पीतल के या अन्य धातु के डिब्बे में बन्द करके रख सकता है।

यों सामान्य रूप से भी यदि कोई गृहस्थ नित्य इस नारियल के सामने "कनक यक्षिणी मन्त्र" की एक माला फेरें तो उसके जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती रहती है।

२– सिद्ध यक्षिणी साधना:—इसमें साधक को चाहिए कि वह किसी भी बुध वार को इस नारियल पर सिन्दूर से त्रिशूल बना दे, और घर के पूजा स्थान में इसको स्थापित कर ले, इसके बाद निम्न मन्त्र की २१ मालाएं फेरे माला फेरते समय मुंह उत्तर की तरफ होना चाहिए, और २१ मालाएं पूरी करने के बाद उस नारियल को जल से धोकर पुनः रख देना चाहिए, वह जल घर में छिड़क दिया जाना चाहिए।

इस प्रकार पांच दिन तक प्रयोग करे और नित्य उस पर त्रिशूल बनाना मन्त्र जप करना और उसे पानी से धोकर रखना आवश्यक है।

जब पांच दिन तक प्रयोग पूरा हो जाता है, तो उसी रात्रि को सिद्ध यक्षिणी स्वप्न में दर्शन देती है और साधक उससे जो भी मांग करता है, वह मांग पूरी होती है।

जिसके जीवन में उन्नति नहीं हो रही हो या नौकरी में प्रमोशन नहीं हो रहा हो अथवा अधिकारियों से मतभेद हो तो इस प्रकार का प्रयोग करना अनुकूल कहा गया है।

मन्त्र

ॐ विचित्ररूपै सिद्धि कुरु कुरु वाहा।

वस्तुतः राजकीय सेवा करने वाले व्यक्तियों के लिए यह प्रयोग अत्यन्त अनुकूल है, और इससे वे निश्चय ही सफलता प्राप्त करते है।

३– हंस यक्षिरणी साधना:—यह प्रयोग भी एकाक्षी नारियल पर ही होता है और यह प्रयोग ग्यारह दिन का है, इसमें साधक को प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर सामने एक थाली में सरसों रखकर उस पर इस नारियल को स्थापित कर दें और सामने लोबान का धूप लगावे या लोबान की अगरबत्ती जलावे, इस प्रयोग में दीपक लगाना आवश्यक नहीं है।

इसके बाद मूंगे की माला से नीचे दिये मन्त्र की इक्यावन मालाएं फेरे, मालाएं फेरने से पूर्व मन में यह निश्चित कर ले कि मुझे अमुक शत्रु को परास्त करना है या अमुक शत्रु पर विजय प्राप्त करनी है, अथवा अमुक मुकदमें में सफलता प्राप्त करनी है, ऐसा प्रयोग मुकदमे में सफलता, शत्रुओं पर विजय प्राप्ति और जीवन में निर्भयता के लिए आश्चर्यजनक है।

मंत्र

हंसी हंस हां नें हीं स्वाहा

जो व्यक्ति अपने जीवन में शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना चाहते है या उनके जीवन में किसी प्रकार की कोई विपत्ती आ गई हो, या कोई विशेष बाधा आ गई हो या मुकदमे में उलझ गये हो तो उन्हें चाहिए कि वह इस प्रयोग को अवश्य करें यह प्रयोग निश्चय ही मुकदमे में सफलता देता है, तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है।

जब पांच दिन मन्त्र जप पूरे हो जाय तब नारियल को धो कर पुनः अपने पूजा स्थान में या पवित्र स्थान में रख देना चाहिए तथा उन सरसों को दक्षिण दिशा की तरफ जा कर गड्ढा खोदकर उसमें गाड़ देना चाहिए, ऐसा करने पर उसे अपने प्रयोग में अवश्य ही सफलता मिलती है।

इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इसमें मूंगे की माला का ही प्रयोग किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है।

१६– सियार सिंगी प्रयोग

सामान्यतः सियार के सींग नहीं होते, पर प्रकृति के चमत्कार से कुछ सियारों के सिर पर सींग उग आते हैं ऐसी सियार सिंगी दुर्लभ ही नहीं, अपितु कठिनाई से प्राप्त होती है, ग्रन्थों में कहा गया है, "जिसके घर में इस प्रकार की मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सियार सिंगी होती है, उसके घर में आर्थिक दृष्टि से कोई अभाव नहीं रहता और वह बिना किसी उपाय के भी शत्रुओं पर विजय तथा मुकदमे में सफलता प्राप्त कर लेता है"।

वस्तुतः सियार सिंगी जो बाजार में प्राप्त होती है, वह सामान्यतः नकली होती है और आजकल कई लोग इस प्रकार की नकली सियार सिंगी बनाकर बाजार में बेचते देखे गये है, अतः इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि प्रयोग के समय बिल्कुल असली प्रामाणिक सियार सिंगी का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

यह छोटी सी गुटिका की तरह होती है, और इस पर लम्बे-लम्बे बाल होते है, यदि इस पर हाथ फेरा जाय तो एक छोटा सा सींग भी साफ साफ दिखाई देता है। इन्हें सिन्दूर में रखा जाना चाहिए, असली सियार सिंगी के बाल भी धीरे-धीरे स्वतः बढते रहते है, एक सियार सिंगीं पर एक से अधिक प्रयोग किये जा सकते है।

१– रंजनी साधना:—जिस व्यक्ति के घर में बहिन या बेटी बड़ी हो गई हो और उसका विवाह नहीं हो रहा हो या विवाह में बाधाएं आ रही हो तो यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए। यह प्रयोग विवाह करने का इच्छुक युवक या युवती कर सकती है, और चाहे तो उसके माता-पिता, भाई आदि में से भी कोई कर सकता है।

यह प्रयोग मंगलवार से प्रारम्भ करना चाहिए और मात्र तीन दिन का प्रयोग है सामने लाल वस्त्र पर सियार सिंगी को रख देना चाहिए और उसके सामने अगरबत्ती व शुद्ध घी का दीपक लगाकर निम्न मन्त्र की इक्यावन मालाएं फेरनी चाहिए।

मंत्र

ॐ क्लें मम (अमुक) कार्य सिद्धि करि करि जनरंजिनि स्वाहा।

इसमें किसी प्रकार की माला का प्रयोग किया जा सकता है, परन्तु यदि मूंगे की माला का ही प्रयोग हो तो ज्यादा उचित रहता है।

यदि विवाह करने का इच्छुक युवक व युवती यह प्रयोग करे तो "मम" शब्द का उच्चारण करे और यदि कोई दूसरा व्यक्ति प्रयोग करे तो "मम" शब्द की अपेक्षा "अमुक" के स्थान पर उस लड़के या लड़की का नाम उच्चारण करे, जिसका विवाह शीघ्र करने की इच्छा हो।

ऐसा करने पर शीघ्र ही सफलता मिलती है और उसको मनोवांछित वर या वधू प्राप्त होती है।

२– मदन साधना:—यदि घर में कलह हो या पति-पत्नी में मतभेद हो अथवा किसी प्रकार की गृहस्थ में बाधा हो तो इस प्रकार का प्रयोग किया जा सकता है। इसके अलावा यदि किसी के साथ प्रेम हो और वह प्रेमी प्रेमिका प्राप्त नहीं हो रही हो या मतभेद हो गये हों, तब भी इस प्रयोग से अनुकूलता प्राप्त होती है।

यदि मन में किसी पुरुष या स्त्री को प्राप्त करने की इच्छा हो तो भी यह प्रयोग सम्पन्न करने पर उसे सफलता मिल जाती है।

यदि घर में मन मुटाव हो अथवा पत्नी का स्वास्थ्य ठीक नहीं हो तो व्यक्ति को चाहिए कि वह इस प्रयोग को सम्पन्न करे, ऐसा करने पर उसे अवश्य ही सफलता मिल जाती है, यह प्रयोग पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है।

इस प्रयोग में भी लाल वस्त्र बिछाकर उस पर सियार सिंगी को रखकर सामने अगरबत्ती व शुद्ध घी का दीपक लगाकर नित्य इक्यावन मालाएं फेरनी चाहिए, यह प्रयोग मात्र तीन दिन का है।

मन्त्र

ॐ मदने मदने देवी मामालिंगय संगे देहि देहि श्रीः स्वाहा ।

यदि यह प्रयोग शुद्धता के साथ किया जाय तो निश्चय ही तीन दिन के बाद ही उसे अपने कार्य में सफलता मिल जाती है। यह मन्त्र जप प्रारम्भ करने से पूर्व मन में इस बात का निश्चय कर लेना चाहिए कि वह यह प्रयोग किस उद्देश्य के लिए कर रहा है, और वह क्या कार्य सम्पन्न होते हुए देखना चाहता है।

३- घण्टा यक्षिणी साधना:—यह प्रयोग आर्थिक दृष्टि से सफलता प्राप्त करने के लिए है, विशेष रूप से यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और ऐसा प्रयोग सम्पन्न करने पर घर से दरिद्रता तथा आर्थिक अभाव हमेशा हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है।

यह प्रयोग किसी भी बुधवार को प्रारम्भ करना चाहिए, यह प्रयोग रात्रि को ही सम्पन्न किया जाता है । इसमें सामने लाल वस्त्र बिछाकर उस पर सियार सिंगी रख देनी चाहिए और सामने अगरबत्ती व दीपक लगा लेना चाहिए। साधक को स्वयं उत्तर की तरफ मुंह करके बैठना चाहिए और अपने सामने ही लकड़ी के तख्ते पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर सियार सिंगी रखकर अगरबत्ती व दीपक जलाकर निम्न मन्त्र की इक्कीस मालाएं फेरनी चाहिए—

मन्त्र

ॐ ऐं सर्व समृद्धि देहि दापय स्वाहा ।

२०- नर्मदेश्वर लक्ष्मी प्रयोग

भगवान शंकर शक्ति का ही दूसरा रूप है क्योंकि शिव और शक्ति मिलकर ही पूर्णता बनते है, अत: शिव की आराधना के माध्यम से भी लक्ष्मी साधना सम्पन्न की जा सकती है।

नर्मदेश्वर अपने में आप अत्यन्त महत्वपूर्ण शिवलिंग होता है, जो कि सुन्दर और प्रभाव युक्त होता है। ये शिवलिंग मध्य प्रदेश की महत्वपूर्ण नदी नर्मदा में पाये जाते हैं, परन्तु वहां से इनको प्राप्त करना और इन्हें मन्त्र सिद्ध करना तथा साथ ही साथ प्राण प्रतिष्ठा युक्त करके प्रभाव युक्त बनाना मांत्रिक दृष्टि से कठिन कार्य है, फिर भी मेरी राय में गृहस्थ को, जो अपने जीवन में भोग

और शीघ्र की इच्छा रखते हों उन्हें अपने पूजा स्थान में नर्मदेश्वर शिवलिंग की स्थापना अवश्य ही करनी चाहिए पर इस प्रकार नर्मदेश्वर शिवलिंग मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

साधक को चाहिए कि वह किसी भी सोमवार को प्रातः सूर्योदय के समय अपने सामने नर्मदेश्वर शिवलिंग को किसी थाली या बर्तन में स्थापित कर दें, और उस पर दूध और जल मिलाकर धीरे-धीरे जलधार डालता हुआ नीचे लिखे "शिवार्चन चन्द्रिका लक्ष्मी मन्त्र" का जप करें, इसमें पानी ज्यादा होना चाहिए और उसका चौथाई हिस्सा दूध का होना चाहिए, इस प्रकार इन दोनों को मिला कर पहले से ही तैयार रखना चाहिए।

इसमें मन्त्र संख्या निर्धारित नहीं है, परन्तु समय निर्धारित है, अर्थात् दो घण्टे इस मन्त्र का जप मन ही मन करता हुआ नर्मदेश्वर शिवलिंग पर दुग्ध मिश्रित जल बराबर डालते रहना चाहिए।

इस प्रकार मात्र चार सोमवार प्रयोग करने से ही उसे मनोवांछित सिद्धि प्राप्त हो जाती है, और आर्थिक दृष्टि से विशेष अनुकूलता प्राप्त होने लगती है, जो शिव भक्त हैं या जो शीघ्र फल चाहते हैं, उन्हें इस प्रयोग को अवश्य ही करना चाहिए।

मन्त्र

ॐ ह्रीं त्रिशक्ति द्रां ह्रूं क्लीं एह्रौं देहि स्वाहा।

जैसा कि मैंने बताया कि इसमें माला का प्रयोग नहीं होता, और न मन्त्र गणना की आवश्यकता है, केवल मात्र मन ही मन दो घण्टे मन्त्र जप करता हुआ दुग्ध मिश्रित जलधारा होती रहनी चाहिए, जिससे कि यह प्रयोग सम्पन्न हो सके।

दो घण्टे समाप्त होने के बाद वह जल पवित्र स्थान पर डाल देना चाहिए और नर्मदेश्वर को पुनः पूजा स्थान में रख देना चाहिए, इस प्रकार यह मात्र चार सोमवार का प्रयोग है, और मात्र सोमवार को ही इसका प्रयोग होना चाहिए।

३१– रुद्राक्ष प्रयोग

रुद्राक्ष भगवान को अत्यन्त प्रिय है। ये एक मुखी से इक्कीस मुखी तक होते हैं, और बड़ी कठिनाई से प्राप्त होते है। इनमें एक मुखी रुद्राक्ष तो प्राप्त होना लगभग असम्भव है। जिसके पास भी एक मुखी रुद्राक्ष होता है, वह वास्तव में ही सौभाग्यशाली होता है और मात्र एक मुखी रुद्राक्ष ही गले में धारण किया जाय तो उसके जीवन में किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता।

पर मैं जो यह प्रयोग बता रहा हूं वह पंचमुखी रुद्राक्ष पर सिद्ध किया जाता है, इस प्रकार का रुद्राक्ष आसानी से प्राप्त हो जाता है, यद्यपि बाजार में जो रुद्राक्ष दिखाई देते है वे अधितर नकली होते है। वास्तव में ही ये रुद्राक्ष न होकर 'भद्राक्ष' होते है जो कि रुद्राक्ष की तरह ही दिखाई देते है, अतः साधक को इस प्रकार का रुद्राक्ष विश्वस्त व्यक्ति से ही प्राप्त करना चाहिए, यद्यपि पंचमुखी रुद्राक्ष ज्यादा मंहगा नहीं होता।

किसी भी सोमवार को यह रुद्राक्ष किसी पात्र में रखकर उसकी पूजा करनी चाहिए, उस पर जल डालकर, धोकर केशर आदि लगाकर उसमें जो छेद है, उस छेद में कोई धागा पिरो लेना चाहिए, इसके बाद उस रुद्राक्ष को दाहिने हाथ की हथेली में रखकर निम्न मन्त्र का जप दो घण्टे करना चाहिए।

यह प्रयोग किसी भी सोमवार से आरम्भ होना चाहिए और अगले सोमवार को यह प्रयोग समाप्त हो जाता है, इस प्रकार यह मात्र आठ दिन का प्रयोग है, और नित्य दो घण्टे इस प्रयोग में लगते है। यह प्रयोग प्रातः सूर्योदय से आगे दो घण्टे तक सम्पन्न करना चाहिए।

हथेली में रुद्राक्ष रखकर मन्त्र-जप मन ही मन करना चाहिए, इसमें भी माला का प्रयोग आवश्यक नहीं है।

मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं ऐन्द्रि माहेन्द्रि कुलुकुलु चुलुचुलु हंसः स्वाहा।

इसमें मन्त्र जप संख्या भी निर्धारित नहीं है, केवल मात्र समय निर्धारित है, इस प्रकार आठ दिन का प्रयोग करने पर यह लक्ष्मी-रुद्राक्ष सिद्ध हो जाता है।

अगले सोमवार को जब यह साधना सम्पन्न हो जाय तब उस रुद्राक्ष को अपने गले में धारण कर लेना चाहिए और भविष्य में पहिने रहना चाहिए। ऐसा करने पर उस व्यक्ति के घर से हमेशा-हमेशा के लिए दरिद्रता समाप्त हो जाती है, यह प्रयोग एक साधु ने बताया था, यह वास्तव में ही महत्वपूर्ण प्रयोग है, जो कि शीघ्र सफलता देने में सहायक है।

२३- गौरी शंकर रुद्राक्ष प्रयोग

कहा जाता है कि गौरी शंकर रुद्राक्ष सर्वश्रेष्ठ और महत्वपूर्ण रुद्राक्ष होता है, ये देखने पर दो रुद्राक्ष मिले हुए से प्रतीत होते हैं, जो कि शिव और पार्वती का जोड़ा कहा जाता है।

वस्तुतः इस प्रकार का रुद्राक्ष दुर्लभ और महत्वपूर्ण होता है, परन्तु फिर भी यह सुविधा से मिल जाता है, इसका भी महत्व एकमुखी रुद्राक्ष के समान ही माना गया है, वस्तुतः जिसके घर में गौरी शंकर रुद्राक्ष होता है, वह श्रेष्ठ पुरुष और भाग्यशाली व्यक्ति माना जाता है।

परन्तु इस प्रकार के रुद्राक्ष भी नकली बेचते हुए देखे गये है, अतः इस प्रकार का ध्यान रखा जाना चाहिए कि रुद्राक्ष असली हो, जिससे कि आपको इसका पूरा-पूरा लाभ मिल सके।

गौरी शंकर रुद्राक्ष को किसी भी सोमवार को प्रातः सूर्योदय के समय किसी पात्र में स्थापित कर दें, और उसे जल से फिर दूध, दही, घी, शहद शक्कर से स्नान कराकर पुनः शुद्ध जल से धोकर पौंछ लें, फिर उस पर केशर आदि लगा कर पुष्प भेंट करे, इसके बाद निम्न मन्त्र की ग्यारह मालाएं फेरें—

मन्त्र

ॐ ऐं लक्ष्मीं वं श्रीं कमलधारिणी हंसः स्वाहा।

यह अत्यन्त महत्वपूर्ण मन्त्र है और इसका प्रयोग नित्य सोमवार को ही उस गौरी शंकर रुद्राक्ष के सामने किया जाता है, इसमें रुद्राक्ष माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, जिससे कि पूरा-पूरा लाभ प्राप्त हो सके।

इस प्रकार ग्यारह सोमवार करना चाहिए, क्योंकि यह प्रयोग मात्र

सोमवार को ही सम्पन्न होता है, जब ग्यारहवें सोमवार को प्रयोग समाप्त हो जाय, तब उस गौरी शंकर रुद्राक्ष को किसी धागे में पिरोकर गले में धारण कर लेना चाहिए, फिर इसको उतारने की जरूरत नहीं होती, क्योंकि इस प्रकार का रुद्राक्ष अशुद्ध नहीं होता।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त गोपनीय और महत्वपूर्ण है, तथा अनुभव में यह आया है कि जो इस प्रकार का रुद्राक्ष धारण कर लेता है, उसे निरन्तर अनायास धन प्राप्ति होती रहती है, आर्थिक दृष्टि से तो उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती, यदि व्यक्ति दरिद्र भी हो या उसके भाग्य में दरिद्रता पूर्णता के साथ लिखी हुई हो, फिर भी यदि वह इस प्रकार का रुद्राक्ष धारण कर लेता है तो उसके जीवन में किसी भी प्रकार से आर्थिक कमी नहीं रहती और आकस्मिक धन की प्राप्ति होती रहती है।

२३– स्फटिक शिवलिंग प्रयोग

शिवलिंग या तो पारे से बना हुआ विश्व विख्यात माना गया है या स्फटिक शिवलिंग संसार प्रसिद्ध कहा जाता है। शास्त्रों में कहा गया है कि जो व्यक्ति एक साथ भोग और मोक्ष की इच्छा रखते हैं, जो जीवन में अतुलनीय सम्पदा के साथ यश और सम्मान चाहते हो, जीवन में विजयी रहना चाहते हैं, जो शिव भक्त है, उन्हें तो अवश्य ही अपने घर में स्फटिक-शिवलिंग स्थापित करना ही चाहिए, ऐसा शिवलिंग प्रभाव युक्त दिव्य, तेज युक्त, शुभ्र और चमत्कारी होता है, वस्तुतः इस प्रकार का शिवलिंग कठिनाई से ही प्राप्त होता है।

यह शिवलिंग कांच के समान पारदर्शी होता है, और देखने में अत्यन्त सुन्दर दिखाई देता है, ऐसा शिवलिंग सौभाग्यशाली ही अपने घर में स्थापित कर सकते हैं।

इस प्रकार के शिवलिंग पर लक्ष्मी से सम्बन्धित सैकड़ों प्रयोग हैं परन्तु मैं यहां पर अत्यन्त गोपनीय और महत्वपूर्ण प्रयोग दे रहा हूं जो कि एक उच्च कोटि के महात्मा से प्राप्त हुआ था, उनका यह दावा था कि जो व्यक्ति जीवन में एक बार भी इस प्रकार के शिवलिंग पर लक्ष्मी प्रयोग सम्पन्न कर लेता है उसे अनायास धन प्राप्ति होने के साथ ही साथ अतुलनीय सम्पदा प्राप्त होती है, और आर्थिक और व्यापारिक दृष्टि से उसके जीवन में अभाव रह ही नहीं सकता।

ऐसा शिवलिंग और उससे सम्बन्धित प्रयोग करने पर व्यक्ति अपने जीवन

में सम्पूर्ण भोगों को भोगता है, उसके जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता है और मृत्यु के बाद वह निश्चित रूप से मोक्ष प्राप्त करता है, वस्तुतः गृहस्थ व्यक्ति को अपने जीवन में एक बार अवश्य ही इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए ।

किसी भी सोमवार को इस प्रकार का शिवलिंग थाली में स्थापित कर उसे जल से स्नान करानी चाहिए । इसके बाद दूध, दही, घी, शहद और शक्कर से स्नान कराकर पुनः जल से स्नान कराकर पोंछ कर दूसरी थाली में उसे स्थापित कर देना चाहिए और उसके ऊपर अबीर, गुलाल, मोली, कुंकुम, केशर आदि से पूजा कर पुष्प भेंट रखने चाहिए और फिर नीचे लिखे मन्त्र की ग्यारह मालाएं फेरनी चाहिए ।

मन्त्र

ॐ ऐं मानिनि ह्रीं एह्य येहि सुन्दरि ह्रसह्रसमिह संगमह्रः स्वाहा ।

यह एक लाख मन्त्र जप प्रयोग है । इस प्रकार बारह सौ पचास मालाएं फेरने से सवा लाख मन्त्र जप हो जाता है, जो कि अपने आप में पूर्ण विधान है, इसमें मालाओं की संख्या कम ज्यादा भी की जा सकती है और दिन में दो या तीन बार भी आसन पर बैठकर मन्त्र का जप किया जा सकता है, यदि सुविधा हो तो इस मन्त्र का जप दिन के अलावा रात्रि को भी किया जा सकता है ।

जब सवा लाख मन्त्र जप पूरे हो जाय तब उस शिवलिंग को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर देना चाहिए अथवा अपनी तिजोरी में रख देना चाहिए ।

वस्तुतः ऐसा प्रयोग सम्पन्न करने के बाद साधक स्वयं इसके चमत्कारिक अनुभव प्राप्त करने लग जाता है और वह जीवन में श्रेष्ठ धनपति, यशपति और सौभाग्यशाली हो जाता है । धन, धान्य, भवन, कीर्ति, आयु, यश, सम्पदा, वाहन, पुत्र, पौत्र, सुख और मोक्ष आदि सभी सुविधायें उसे अनायास ही प्राप्त होने लग जाती है ।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ कहा जाता है ।

२४– लघु नारियल प्रयोग

नारियल लक्ष्मी का ही प्रतीक माना गया है, और शास्त्रों के अनुसार नारियल में लक्ष्मी स्वयं निवास करती है। प्रकृति की महिमा अपरम्पार है। बाजार में बड़े नारियल तो सहज ही पाये जाते है, पर कभी-कभी सुपारी के आकार के छोटे नारियल भी देखने को मिल जाते है, पर ये नारियल दुर्लभ और अप्राप्य होते है, इस प्रकार के नारियल का लक्ष्मी प्रयोग में विशेष महत्व है।

किसी भी बुधवार को प्रातः सूर्योदय से दस बजे के भीतर-भीतर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर नारियल को किसी पात्र में रखकर उसकी पूजा करनी चाहिए, उसे जल से स्नान कराकर पोंछ कर उस पर केशर, कुंकुम लगाना चाहिए और पुष्प, अक्षत आदि चढाकर सामने अगरबत्ती व दीपक लगाना चाहिए, इसके बाद लक्ष्मी बीज मन्त्र की माला फेरनी चाहिए, इसमें कमलगट्टे की माला का ही प्रयोग किया जा सकता है, जो कि मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

यह प्रयोग नौ दिन का है और कुल एक लाख मन्त्र जप करने आवश्यक होते है, इसमें निश्चित जप आवश्यक नहीं है, पर यदि नित्य पन्द्रह हजार मन्त्र जप हो तो ज्यादा उचित रहता है। साधक चाहे तो दिन में दो बार भी आसन पर बैठकर इस मन्त्र को जप सकता है, इसमें पुरुष या स्त्री कोई भी मन्त्र जप कर सकता है, और प्रातःकाल के अलावा रात्रि को भी इस मन्त्र का जप किया जा सकता है।

मन्त्र

"श्रीं"

जब नौ दिन में एक लाख मन्त्र जप हो जाय तो इसी मन्त्र की सौ आहुतियां अग्नि में देनी चाहिए, ये आहुतियां शुद्ध घृत की होती है, इसके बाद किसी कन्या या ब्राह्मण को बुलाकर उसे भोजन कराकर सन्तुष्ट करना चाहिए, इसके बाद उस लघु नारियल को घर की तिजोरी या उस स्थान में रख देना चाहिए जहां रुपये पैसे या गहने आदि रखते है।

इस प्रकार का प्रयोग अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इसका

निश्चित और अनुकूल प्रभाव होता है। यह प्रयोग सरल होने के साथ ही साथ विशेष प्रभाव युक्त भी है।

२५- आभायुक्त शालिग्राम प्रयोग

शालिग्राम भगवान विष्णु का ही विग्रह है और भगवान विष्णु लक्ष्मी के पति है, इस प्रकार यह प्रयोग विशेष महत्वपूर्ण, प्रभावयुक्त और शीघ्र फलदायक माना गया है। जिस साधकों ने भी इस प्रयोग को किया है उन्होंने पूर्ण सफलता पाई है और उन्हें आश्चर्यजनक अनुभव हुए है।

इसमे सामान्य शालिग्राम का प्रयोग नहीं होता, अपितु इस प्रयोग में आभा युक्त शालिग्राम का प्रयोग होता है, ऐसे शालिग्राम दुर्लभ होते है, और यदि इन्हें सूर्य के सामने रखकर धूप में देखें तो काले होते हुए भी इनमें लाल झांई सी दिखाई देती है, ऐसे ही शालिग्राम इस प्रकार के प्रयोग के लिए अनुकूल है।

यह प्रयोग मात्र दस हजार मन्त्र जप का है और इसे पांच दिन या दस दिन में किया जा सकता है। यह प्रयोग प्रातः या रात्रि को किसी भी समय किया जा सकता है और पुरुष या स्त्री कोई भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है।

किसी भी बुधवार को प्रातः सूर्योदय से दस बजे के भीतर-भीतर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर किसी पात्र में इस प्रकार के शालिग्राम को स्थापित कर लेना चाहिए, और उसे स्नान कराकर पोंछ कर अन्य स्थान पर स्थापित कर, उन पर केसर आदि लगानी चाहिए और अक्षत पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिए।

इसके बाद कमल गट्टे की माला से निम्नलिखित मन्त्र जप प्रारम्भ करना चाहिए।

मन्त्र

ॐ श्रीं च विद्महे ह्रीं धीमहि
तन्नों लक्ष्मी विष्णु प्रचोदयात्।

जब दस हजार मन्त्र जप पूरे हो जाय तब उन शालिग्राम को पुनः पूजा स्थान में स्थापित कर लेने चाहिए।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न हो जाता है, और साधक इससे मनोवांछित सफलता प्राप्त कर लेता है। वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, और साधक इसका विशेष लाभ उठा सकता है।

२५- गोमती-चक्र प्रयोग

यह प्रकृति का मानव को श्रेष्ठ वरदान है, जिस पर कई प्रकार के तांत्रिक मांत्रिक प्रयोग सम्पन्न किए जाते है, यह स्वयं ही व्यापार एवं लक्ष्मी का पर्याय है, अतः प्रत्येक गृहस्थ के घर में गोमती चक्र पूजा स्थान में होना आवश्यक माना गया है।

इस पर लक्ष्मी से सम्बन्धित कई प्रयोग है, मैं नीचे इससे सम्बन्धित तीन प्रयोग दे रहा हूं।

१- साधक, वह चाहे पुरुष या स्त्री हो सोमवार को प्रातः सूर्योदय के समय इस चक्र को दूध से और फिर जल से धो कर किसी पात्र में एक किलो चावल बिछाकर उस पर चक्र को स्थापित कर लेना चाहिए और सामने दीपक लगा लेना चाहिए।

इसके बाद निम्न मन्त्र की पांच मालाएं फेरनी चाहिए, इस प्रकार यह प्रयोग मात्र १४ दिन का है, और इन १४ दिनों में कुल ७० मालाएं फेरने का विधान है।

इसमें मूंगे की माला का प्रयोग किया जा सकता है। यह प्रयोग और यह मन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इससे निश्चित अनुकूल फल प्राप्त हो जाता है यदि किसी के जीवन में दुर्भाग्य हावी हो गया हो, या उसे जीवन में आर्थिक सफलता नहीं मिल रही हो या उसे व्यापार में अनुकूलता प्राप्त नहीं हो रही हो तो ऐसे व्यक्ति को यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए, यह साधना सरल और लघु होने के साथ साथ निश्चित एवं श्रेष्ठ फलदायक है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं महालक्ष्मीं श्रीं स्थिरलक्ष्मी ऐं ममगृहे
आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।।

जब चौदह दिन पूरे हो जाय तो इस प्रकार के गोमती चक्र को अपने पूजा स्थान में या दुकान में स्थापित कर देना चाहिए जिससे कि उसे जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलता मिल सके।

२- किसी भी बुधवार को पात्र में पीली सरसों बिछाकर उस पर गोमती चक्र को स्थापित कर दें। इस बात का ध्यान रखे कि यह गोमती चक्र मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो। इसके बाद सामने दीपक लगाकर निम्न मन्त्र जप करे—

मन्त्र

ॐ ह्रीं लक्ष्मी दुर्भाग्यनाशिनी सौभाग्य
प्रदायिनी श्रीं स्वाहा ।।

यह मन्त्र जब भी सुविधा हो जप सकते है, इसका कुल दस हजार मन्त्र जप होता है और यह प्रयोग दस या पन्द्रह दिन में सम्पन्न होना चाहिए।

जब प्रयोग सम्पन्न हो जाय तब वह सरसों दक्षिण दिशा की तरफ जंगल में जाकर फैंक देनी चाहिए या तालाब अथवा नदी में विसर्जित कर देनी चाहिये।

इस प्रकार का प्रयोग दरिद्रता नाश के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है और सबसे बड़ी बात यह है कि यदि साधक पर, उसके परिवार पर अथवा उसके व्यापार पर किसी प्रकार का कोई तांत्रिक प्रभाव होता है तो इस प्रयोग से तांत्रिक प्रभाव समाप्त हो जाता है।

इस प्रयोग से व्यापार में आश्चर्यजनक उन्नति होने लगती है और बिक्री बढ जाने के साथ-साथ व्यापार में भी पूर्ण अनुकूलता होने लगती है, शत्रु परास्त हो जाते हैं, और वे किसी प्रकार से हानि पहुँचाने में सक्षम नहीं हो पाते।

मेरी राय में यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो अपने व्यापार को श्रेष्ठ स्तर पर देखना चाहते है उनको चाहिए कि वे इस प्रयोग को अवश्य ही करें।

३- यह प्रयोग शत्रु नाश एवं मुकदमों में सफलता प्राप्ति के लिए किया जाता है। यदि कोई व्यक्ति व्यापार में हानि पहुंचा रहा हो या प्रतिस्पर्धी हो तब भी इस प्रकार के प्रयोग में सफलता मिलती है।

इसके अलावा यदि किसी व्यक्ति ने रुपये लेकर लौटाने से मना कर दिया हो या वापस रुपये नहीं दे रहा हो या धोखा दिया हो अथवा कहीं रुपये फंस गये हो या इसी प्रकार की कोई समस्या हो तो यह प्रयोग अत्यन्त अनुकूल एवं महत्वपूर्ण माना गया है।

इसमें मंगलवार को किसी पात्र में मुट्ठी भर काली मिर्च रखकर उस पर गोमती चक्र स्थापित कर देना चाहिए। यह गोमती चक्र मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए और इसमें साधक सर्वप्रथम हाथ में जल लेकर बोले कि मैं अमुक कार्य के लिए यह प्रयोग कर रहा हूं।

इसके बाद सामने तेल का दीपक लगा लेना चाहिए, इस दीपक में किसी भी प्रकार का तेल प्रयोग में लिया जा सकता है।

मन्त्र

ॐ क्लीं शत्रुन्नाशय ऐं कार्य सिद्धय ह्रीं
लुप्त धन प्राप्त्यर्थ श्रीं नमः

जब यह प्रयोग समाप्त हो जाय, तब गोमती चक्र को पुनः पूजा स्थान में स्थापित कर देना चाहिए, और उन काली मिर्च को किसी मंगलवार को रात्रि में खड्डा खोदकर गाड़ देना चाहिए, यह काम स्वयं या कोई शुद्ध वर्ण का नौकर सम्पन्न कर सकता है।

ऐसा करने पर कुछ ही दिनों में साधक को अनुकूल फल प्राप्त हो जाता है, और जिस उद्देश्य के लिए वह यह प्रयोग करता है, उसमें सफलता मिल जाती है।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण, श्रेष्ठ एवं प्रभावयुक्त है, और इसका प्रभाव तुरन्त ही साधक को अनुभव होता है।

२७- मूंगा प्रयोग

मूंगा एक रत्न होता है, जो कि लाल रंग का होता है। इसमें भी दो प्रकार है, सामान्य मूंगा सिन्दूरी रंग का होता है, जिसको देशी मूंगा कहते है, दूसरे प्रकार का मूंगा लाल सुर्ख रंग का होता है, इसको इटेलियन मूंगा कहते है। इस प्रकार का मूंगा रत्न आसानी से बाजार में मिल जाता है, यह मूंगा रत्न लगभग तीन रत्ती का होना चाहिए जो कि प्रयोग के लिए अनुकूल रहता है।

इस प्रकार के रत्न पर भी महालक्ष्मी प्रयोग होता है, किसी भी मंगलवार को इस प्रकार का मूंगा रत्न प्राप्त कर लेना चाहिए जो कि मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

इसके बाद मंगलवार को इसे किसी भी पात्र में रखकर जल से धो कर पोंछ कर इस पर कुंकुम लगाकर निम्वलिखित मन्त्र की ग्यारह मालाएं फेरनी चाहिए।

मन्त्र

ॐ विरूपाक्ष विलासिनि आगच्छागच्छ
ह्रीं प्रिया मे भव प्रिया में भव क्लीं स्वाहा

इस प्रकार का यह ग्यारह दिन का प्रयोग है, मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि ग्यारह दिन में इस पर कुल १२१ मालाएं फेरी जाती है तब यह मूंगा सिद्ध हो जाता है, इसके बाद इस मूंगा रत्न को सोने या चांदी की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की किसी भी अंगुली में धारण किया जा सकता है।

इस प्रकार का सिद्ध मूंगा पांच प्रकार से अनुकूलता देने में समर्थ हो पाता है।

१- ऐसा मूंगा जीवन में आर्थिक उन्नति एवं सफलता देता है।

२- व्यक्ति के शरीर को आकर्षक और चेहरे को प्रभावशाली बनाता है।

३- पति पत्नी में मतभेद हो तो वह दूर होता है तथा यदि प्रेमी या प्रेमिका रूठ गई हो अथवा मिलने में बाधाएं आ रही हो तो इस प्रकार का मूंगा धारण करने पर अनुकूल फल प्राप्त होता है।

४- शत्रु परास्त होते है और उनकी तरफ से किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं रहती ।

५- व्यापार में उन्नति होती है, मन प्रसन्न रहता है, स्वास्थ्य ठीक रहता है, तथा जीवन व प्रत्येक कार्य में उमंग और उत्साह बना रहता है ।

चाहे किसी व्यक्ति के लिए मूंगा रत्न अनुकूल हो या न हो परन्तु इस प्रकार का मन्त्र सिद्ध मूंगा अनुकूल रहता ही है, अतः इस प्रकार का साधना युक्त मूंगा कोई भी धारण कर सकता है ।

२८– स्फटिक मणि माला प्रयोग

संसार की श्रेष्ठ मालाओं में से स्फटिक मणि माला का स्थान प्रमुख है यह सफेद रंग की चमकीली प्रभाव युक्त और अनुकूल फल देने वाली मानी गई है ।

परन्तु बाजार में नकली स्फटिक माला बहुत अधिक दिखाई देती है, या स्फटिक के नाम पर कांच की मालाएं बेचते हुए देखा गया है, अतः साधक को इस प्रकार की माला सोच समझकर लेनी चाहिए ।

सामान्य रूप से यदि स्फटिक माला पहनी जाय तो भी वह अनुकूल रहती है तथा सभी दृष्टियों से उन्नतिदायक होती है, पर यदि इस प्रकार की माला मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो तो वह आश्चर्यजनक रूप से अनुकूल फल देने वाली भाग्योदयकारक तथा आर्थिक दृष्टि से पूर्णता देने वाली होती है ।

इस प्रकार की माला पर लक्ष्मी से सम्बन्धित कई प्रकार के प्रयोग सम्पन्न किये जाते है, प्रत्येक गृहस्थ को चाहिए कि वह अपने घर में इस प्रकार की माला अवश्य ही रखे ।

इस माला पर बारह प्रकार के प्रयोग सम्पन्न किये जाते है, सभी प्रयोगों के लिए मन्त्र अलग अलग है, परन्तु सब की साधना विधि एक सी ही है ।

मन्त्र

१- लक्ष्मी प्राप्ति के लिए मन्त्र—

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः

२- व्यापार वृद्धि के लिए—

ॐ क्लीं व्यापारोन्नति ह्रीं नमः

३- समस्त प्रकार की उन्नति के लिए—

ॐ ह्रीं कामरूपिण्यै श्रीं नमः

४- शत्रु नाश के लिए—

ॐ क्लीं हुं मम (अमुक) शत्रुन्नाशयति हु फट्

५- मुकदमे में सफलता के लिए—

ॐ क्लीं बीज रूपिण्ये महाकालिकायै क्लीं फट्

६- रोग मुक्ति के लिए—

ॐ वं मम देह चैतन्य जाग्रय ह्रीं हुँ नमः

७- सफलता के लिए—

ॐ श्रीं हुँ कुशुमें नमः

८- गड़ा हुआ धन प्राप्त करने के लिए—

ॐ ह्रां शतपत्रिके ह्रां ह्रीं श्रीं स्वाहा

९- पुत्र प्राप्ति के लिए—

ॐ क्लौ शुलोचनादि देव पुत्रं देहि देहि नमः

१०- गृहस्थ सुख के लिए—

ॐ श्रीं क्षः स्वाहा

११- भाग्योदय के लिए—

ॐ ऐं कमलिनी हां हीं हुँ फट् स्वाहा ।

१२- राज्य पद प्राप्ति के लिए

ॐ हूं हां कालि करालिनी क्षौं फट्

उपर मैंने स्फटिक माला पर बारह प्रयोग दिए है और ये सभी प्रयोग अपने आप में महत्वपूर्ण श्रेष्ठ तथा प्रभावयुक्त है ।

साधक इस श्रेष्ठ माला पर जिस कार्य से सम्बन्धित प्रयोग करना चाहे उसके लिए वह सोमवार को प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पूर्व की तरफ मुंह कर, सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर पात्र में स्फटिक मणि माला रखकर उसे जल से फिर दूध से और फिर जल से स्नान कराकर पोंछ कर दूसरे पात्र में रखकर उस पर केशर आदि लगाकर सम्बन्धित मन्त्र का जप प्रारम्भ करें ।

इस प्रकार के प्रयोग में दस हजार मन्त्र जप आवश्यक है, इसका तात्पर्य यह हुआ कि सौ मालाएं फेरने पर सम्बन्धित मन्त्र सिद्ध हो जाता है । यदि साधक स्वयं के लिए मन्त्र जप न करके किसी दूसरे व्यक्ति के लिए मन्त्र जप करें तो ऐसी स्थिति में मन्त्र जप से पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प करे कि मैं यह मन्त्र जप अमुक व्यक्ति के लिए अमुक कार्य के लिए कर रहा हूं और इसका फल उसे प्राप्त हो ।

यह प्रयोग पांच दिन का है और पांच दिन में उसे सौ मालाएं फेर लेनी चाहिए ।

इसके बाद जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब उस माला को धारण कर ले और बाद में भी धारण किये रहें ऐसा करने पर बहुत जल्दी ही साधक को संबंधित

अनुकूल फल प्राप्त हो जाता है और वह अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर लेता है।

वस्तुत: यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है और जिन साधकों ने इस प्रकार की माला पर प्रयोग किए है, उन्हें पूरी सफलता प्राप्त हुई है।

परन्तु इस बात का ध्यान रखे कि इस प्रकार की स्फटिक माला असली हो, साथ ही साथ वह मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त चैतन्य हो, यदि माला मन्त्र सिद्ध चैतन्य नहीं होगी तो असली होने पर भी प्रयोग करने पर सफलता नहीं मिल पाती, इसलिए साधक को इस सम्बन्ध में सावधानी और सतर्कता बरतनी चाहिए।

इस प्रकार की माला धारण करने पर उसे जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती रहती है, एक माला पर एक से अधिक प्रयोग भी किये जा सकते है।

२६– कमल गट्टा माला प्रयोग

लक्ष्मी का निवास स्थान कमल दल है, और कमल गट्टा इसी कमल पुष्प का बीज होता हैं, यह काले रग का गोल बीज होता है और इसे धागे में पिरोकर माला का रूप दे दिया जाता है, लक्ष्मी से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के मन्त्र जप में यदि कमल गट्टे की माला का प्रयोग किया जाय तो वह अनुकूल रहता है, और इस प्रकार के प्रयोग में जल्दी सफलता मिलती है।

परन्तु शास्त्रों में कमल गट्टे की माला पर साधना बताई गई है जो कि मैं स्पष्ट कर रहा हूं।

सर्व प्रथम मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त चैतन्य कमल गट्टे की माला को प्राप्त कर लें। इस माला में १०८ दाने हो सकते है या १०० से १०८ के बीच दाने हो सकते है, यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक माला में १०८ दाने ही हो। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि यदि किसी माला में १०० से १०८ दानों के बीच कितने भी दाने हो तो वह माला प्रामाणिक और प्रयोग के लिए अनुकूल मानी जाती है।

किसी भी बुधवार की इस प्रकार की माला किसी पात्र में रखकर उसे

जल से फिर दूध से और फिर जल से धोकर पोंछ ले तथा उस पर केसर आदि लगाकर पवित्र कर ले, यदि साधक इस प्रकार की माला पर गुलाब का इत्र लगाता है तो ज्यादा अनुकूल माना जाता है।

मन्त्र जप प्रारम्भ करने से पूर्व सामने लक्ष्मी की मूर्ति या लक्ष्मी का बड़ा सा चित्र रख देना चाहिए, यह चित्र काच के फ्रेम में लगा हुआ हो सकता है। इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र के दस हजार जप आवश्यक होते है, अर्थात् सौ मालाएं करने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र

ॐ स्वर्णावतिमहाभगवती कामरूपिणि मम समस्त
कार्य सिद्धि करि करि असीमित द्रव्य प्रदायै
स्थिर लक्ष्म्यै नमः।

जब यह साधना सम्पन्न हो जाय तब उस माला को सामने रखी हुई लक्ष्मी की मूर्ति या लक्ष्मी के चित्र को पहना देनी चाहिए। इसमें दिन निर्धारित नहीं है, आवश्यकता इस बात की है कि उस लक्ष्मी के चित्र के सामने दस हजार मन्त्र जप हो।

इसके बाद वह माला लक्ष्मी के गले में रहने देनी चाहिए उस माला का प्रयोग बाद में मन्त्र जप में नहीं किया जाता, ऐसा करने पर उसके घर में श्रेष्ठ सम्पदा तथा अतुलनीय धन प्राप्त होता है और उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। साधक चाहे तो स्वयं इस मन्त्र का जप कर सकता है या किसी योग्य पण्डित से मन्त्र जप करवाकर यह साधना सम्पन्न करवा सकता है।

३०– कामरूप मणि प्रयोग

संसार में और सब कुछ प्राप्त हो सकता है, पर यह दुर्लभ कामरूप मणि प्राप्य नहीं, प्रकृति का यह अनोखा चमत्कार है कि इसे गले में धारण करने से स्वतः ही कार्य सम्पन्न होने लगते है, बाधाएं दूर होती है तथा सहज ही उन्नति प्रमोशन, यश, सम्मान एवं ऐश्वर्य प्राप्त होने लगता है।

इस प्रकार की मणि पर लक्ष्मी से सम्बन्धित कई प्रयोग सम्पन्न किये जाते है, यहां पर में एक अत्यन्त श्रेष्ठ गोपनीय प्रयोग दे रहा हूं जो कि महत्वपूर्ण होने के साथ- साथ शीघ्र प्रभावपूर्ण है।

इस प्रकार की श्रेष्ठ मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कामरूप मणि प्राप्त कर किसी भी बुधवार को प्रातः सूर्योदय के समय किसी पात्र में रखकर जल से धोकर उस पर चन्दन, इत्र आदि लगाकर स्थापित करनी चाहिए और नीचे लिखे मन्त्र के इक्कीस हजार जप करने चाहिए, इसमें दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, परन्तु जप संख्या निर्धारित है।

इस प्रकार जब मन्त्र जप पूर्ण हो जाय तब उस कामरूप मणि को अंगूठी में जड़वाकर पहना जा सकता है या उसमें धागा अथवा चैन पिरोकर गले में धारण की जा सकती है। ऐसा करने पर उस व्यक्ति के जीवन में आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, और वह जीवन में समस्त प्रकार के भोगों को भोगता हुआ पूर्ण यश, सम्मान अर्जित करता है।

मन्त्र

ॐ आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा।

इस कामरूप रूप मणि पर एक अन्य प्रयोग भी है। यदि व्यक्ति कमजोर हो या वह काम कला में सक्षम नहीं हो, अथवा वह अपने शरीर में कमजोरी अनुभव करता हो या जो अपनी पत्नी को सम्भोग के समय सन्तुष्ट न कर पाता हो या जो स्नायु रोग से पीड़ित हो या उसे गुप्त रोग हो अथवा सम्भोग में शिथिलता अनुभव करता हो, या जो शीघ्र पतन से पीड़ित हो तो उसके लिए यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है।

ऐसे साधक को स्वयं या पण्डित से यह साधना सम्पन्न करा लेनी चाहिए। सर्व प्रथम इस प्रकार की मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कामरूप मणि प्राप्त कर लेनी चाहिए और किसी सोमवार को प्रातः सूर्योदय से दस बजे के भीतर-भीतर कामरूप मणि को किसी पात्र में रखकर जल से धो कर पोंछकर उस पर केशर एवं गुलाब का इत्र लगाकर मन्त्र जप करें।

यह मन्त्र जप इक्यावन हजार किया जाता है, इसमें दिनों की संख्या

निर्धारित नहीं है, परन्तु मन्त्र जप इक्यावन हजार होना आवश्यक है, इसमें मूंगे की माला का प्रयोग ही किया जाता है।

मन्त्र

ॐ क्लीं दौर्बल्यनाशिनी सुरसुन्दरी स्वाहा।

जब पूर्ण मन्त्र जप हो जाय तब इस कामरूप मणि को धागे में पिरोकर या चैन में डालकर गले में पहन लेनी चाहिए और भविष्य में पहने रहना चाहिए इससे उसे मनोवांछित सफलता प्राप्त हो जाती है तथा जीवन में नवीन उत्साह उमंग तथा जोश प्राप्त होता है, और वह गृहस्थ का पूरा आनन्द ले पाता है।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है और जो साधक इस प्रकार की समस्या से पीड़ित हैं, उसे यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

३१- बिल्ली की नाल प्रयोग

बिल्ली जब बच्चे देती है, तो नाल गिरती है, यह नाल लक्ष्मी से सम्बन्धित अनुष्ठान में एवं अन्य प्रयोगों में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं बेजोड़ होती है, इस पर कई प्रकार के प्रयोग किये जाते है मैं यहां पर केवल दो प्रयोग दे रहा हूं, इसमें पहला प्रयोग लक्ष्मी से सम्बन्धित है और दूसरा प्रयोग वशीकरण से सम्बन्धित है।

पहले प्रयोग में इस प्रकार की नाल प्राप्त कर लेनी चाहिए, पर सामान्य रूप से प्राप्य बिल्ली की नाल अनुकूल नहीं होती, सर्व प्रथम उसे विशेष मन्त्रों से चैतन्य की जाती है, चैतन्य बिल्ली की नाल ही प्रभाव युक्त मानी गई है।

किसी भी शनिवार को इस बिल्ली की नाल को पात्र में रखकर साधक को सामने अगरबत्ती व दीपक लगाकर मन्त्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए। इसमें आसन या माला का कोई विशेष विधान नहीं है तथा यह भी विधान नहीं है कि वह किसी विशेष दिशा में ही मुंह करके बैठे, साधक चाहे तो हाथ पैर धो कर भी इस प्रयोग में बैठ सकता है।

यह प्रयोग एक लाख मन्त्र जप का है, तथा इसमें दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, थोड़ा-थोड़ा करके नित्य मन्त्र जप किया जा सकता है।

मन्त्र

ॐ नमो आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा ।

जब एक लाख मन्त्र जप हो जाय तब बिल्ली की नाल को उस स्थान पर रख देनी चाहिए जहां रूपये, पैसे या द्रव्य आदि रखा जाता है, जब तक वहां ऐसी बिल्ली की नाल रहेगी तब तक उसके जीवन में निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहेगी, और उसे जीवन में भौतिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहेगा ।

वस्तुत: यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है और जो भी जीवन में स्थायी सम्पति और पूर्ण आर्थिक अनुकूलता चाहते है, उन्हें अवश्य ही इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, मेरी राय में यह अन्य प्रयोगों की अपेक्षा ज्यादा महत्वपूर्ण है ।

वशीकरण प्रयोग

दूसरा प्रयोग वशीकरण से सम्बन्धित है । यह प्रयोग भी शनिवार को ही प्रारम्भ किया जाता है और बिल्ली की नाल को पात्र में रखकर सामने तेल का दीपक लगाकर नीचे लिखे मन्त्र का एक लाख जप किया जाता है, इसमें भी दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, पर मन्त्र जप एक लाख होना आवश्यक है ।

मन्त्र

ॐ क्लीं ह्रीं आगच्छ मनोहरे स्वाहा ।

जब एक लाख मन्त्र जप हो जाय तो किसी चांदी के तावीज में इस बिल्ली की नाल को भरकर वह तावीज गले में पहन लेना चाहिए, या बांह पर बांध लेना चाहिए ।

जो व्यक्ति इस प्रकार का तावीज धारण करता है, उस पर किसी प्रकार का कोई तांत्रिक प्रभाव असर नहीं करता, वह स्वयं कामदेव के समान आकर्षक हो जाता है, और उसके चारों तरफ विलासिनी स्त्रियों का जमघट बना रहता है, यदि किसी पुरुष या स्त्री पर जब भी वशीकरण प्रयोग करना हो तब उपरोक्त मन्त्र का मन ही मन पांच बार उच्चारण कर उस व्यक्ति या स्त्री का नाम

लिया जाय तो वह वश में हो जाती है और मनोनुकूल कार्य करती है।

वस्तुत: यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है और साधक को सावधानी के साथ इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

३२- शूकर दन्त प्रयोग

शूकर एक भयानक जंगल का प्राणी है, जिसके अक्षत दांत कठिनाई से प्र प्त होते है आर्थिक व्यापारिक उन्नति में इसका प्रयोग किया जाता है, मुझे एक साधु ने शूकर दन्त पर लक्ष्मी प्रयोग बताया था जो कि मैं आगे स्पष्ट कर रहा हूं।

इस प्रकार का शूकर दन्त प्राप्त कर किसी भी रविवार को इसे पात्र में रखकर इस पर कुंकुम लगाकर सामने तेल का दीपक लगाकर मन्त्र जप करे, यह मन्त्र जप एक लाख मन्त्रों से सम्पन्न होता है और यह मन्त्र जप शूकर दन्त के सामने ही किया जाता है।

मन्त्र

ॐ क्लीं शूकरदन्ताय भैरवाय नम:

ऐसा शूकर दन्त सिद्ध होने पर चांदी में पिरोकर गले में धारण किया जा सकता है या इसे गहनों के साथ रखा जा सकता है अथवा घर में किसी स्थान पर लटकाया जा सकता है। इससे कई लाभ है, जो कि नीचे दे रहा हूं।

१- यदि बच्चे के गले में ऐसा शूकरदन्त पहना दिया जाय तो उस बच्चे को नजर नहीं लगती, और न किसी प्रकार का तांत्रिक प्रभाव उस को व्याप्त होता है।

२- यदि यदि कोई स्त्री अपने गले में इस प्रकार का शूकर दन्त धारण करे तो उसका पति वश में रहता है।

३- यदि इस प्रकार का शूकर दन्त धारण कर प्रेमी या प्रेमिका का उच्चारण कर उसका आह्वान किया जाता है तो वह प्राप्त होती है।

४- यदि इसे दुकान की चौखट के ऊपर बांध दिया जाय और दुकान पर यदि कोई प्रयोग होता है तो वह समाप्त हो जाता है, व्यापार वृद्धि होती है, तथा ग्राहक बढ जाते है, यदि व्यापार में हानि हो रही हो तो लाभ होने लग जाता है।

५- यदि घर में बांध दिया जाय तो घर पर किसी प्रकार का तान्त्रिक प्रभाव नहीं रहता तथा घर में सुख शान्ति बनी रहती है।

६- यदि किसी को भूत-प्रेत, पिशाच-बाधा हो और उसके गले में ऐसा शूकर दन्त बांध लिया जाय तो भूत बाधा समाप्त हो जाती है।

७- यदि कोई बीमार ऐसा शूकर दन्त गले में धारण करे तो धीरे-धीरे वह स्वस्थ होने लगता है।

८- यदि व्यक्ति चिन्तित हो या उसे-भय हो तो ऐसा शूकर दन्त धारण करने पर शत्रु भय समाप्त हो जाता है।

९- यदि किसी पर मुकदमा चल रहा हो और ऐसा शूकर दन्त धारण करे तो उसे अवश्य ही सफलता मिलती है।

१०- यदि ऐसा शूकर दन्त धारण कर शत्रु परास्त का मन ही मन विचार करे तो उसका शत्रु हमेशा परास्त रहता है और सामने आंख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं करता।

वस्तुतः यह शूकर दन्त अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है और ऐसा प्रयोग सभी दृष्टियों से अनुकूल फल देने वाला माना जाता है।

३३- मूंगे की माला प्रयोग

पीछे के पृष्ठों में मूंगा रत्न पर लक्ष्मी प्रयोग बताया है, पर तांत्रिक मांत्रिक ग्रन्थों में मूंगे की माला पर भी लक्ष्मी से सम्बन्धित प्रयोग स्पष्ट हुए है।

सबसे पहले मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त मूंगे की माला प्राप्त कर लेनी चाहिए, और किसी भी मंगलवार को प्रातः सूर्योदय के समय किसी पात्र में मूंगे

की माला रखकर उसे जल से धोकर पोंछ कर केशर एवं इत्र लगाकर सामने रख देनी चाहिए तथा घी का दीपक लगाकर नीचे लिखे मन्त्र का जप उसी मूंगे की माला से किया जाना चाहिए ।

मन्त्र

ॐ कर्कशालिमिले सुवर्णरेखे स्वाहा ।

इस मन्त्र का दस हजार जप किया जाता है, अर्थात् सौ मालाएं फेरने से वह मूंगे की माला सिद्ध हो जाती है, इसमें दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, परन्तु मन्त्र जप दस हजार होना चाहिए, जब मन्त्र जप पूर्ण हो जाय तो इस प्रकार की मूंगे की माला धारण कर लेनी चाहिए, इससे आर्थिक दृष्टि से विशेष अनुकूलता प्राप्त होती है, स्थायी सम्पत्ति प्राप्त होने में श्रेष्ठ फलदायक है, यदि कहीं पर रुपये फंस गये हो या कोई पार्टी रुपये देने से साफ मुकर गई हो तो इस प्रकार का प्रयोग कार्य सिद्धि में विशेष रूप से फलदायक है ।

यह माला आगे जीवन भर सहायक रहती है, इस माला के धारण करने से व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ रहता है, तथा उसके जीवन में वृद्धावस्था व्याप्त नहीं होती शरीर के प्रत्येक अंग स्वस्थ एवं सुन्दर बने रहते है ।

इस प्रकार का प्रयोग करने पर अचल सम्पत्ति प्राप्त होती है, तथा यदि घर में गड़ा हुआ धन हो तो स्वप्न में वह स्थान दिखाई देता है, यदि भवन बनाने की इच्छा हो या कोई प्रोपर्टी खरीदने बेचने की भावना हो तो यह कार्य भी शीघ्र ही सम्पन्न हो जाता हैं ।

ऐसी मूंगे की माला नियमित रूप से धारण की जा सकती है, या उसे पूजा स्थान में रखकर सप्ताह में एक बार एक दिन के लिए धारण की जा सकती है, दोनों ही स्थितियों में उसका प्रभाव बराबर प्राप्त होता रहता है ।

वस्तुतः इस प्रकार का प्रयोग आकस्मिक धन प्राप्ति, लौटरी या जुए से धन प्राप्ति आदि के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है और जो व्यक्ति घुड़दौड़ आदि से सम्बन्धित है, या जो अपने जीवन में आकस्मिक धन प्राप्ति की इच्छा रखते हो उसे यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, ऐसा करने पर उसे जीवन में निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है ।

यदि साधक चाहे तो स्वयं या किसी पण्डित से भी इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करवा सकता है।

३४- स्वर्णाकर्षण गुटिका प्रयोग

यह एक आश्चर्यजनक दुर्लभ अप्राप्य गुटिका है जो कि प्रत्येक व्यक्ति के घर में संग्रहणीय मानी गई है, यदि इस पर लक्ष्मी प्रयोग न भी किया जाय और केवल मात्र घर में ही मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त स्वर्णाकर्षण गुटिका रख दी जाय तो भी वह मुकदमे में विजय, आर्थिक उन्नति, दुकान में बिक्री बढने व सभी कार्यों में सहायक बनी रहती है, इसलिए गृहस्थ जीवन के लिए यह एक श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण गुटिका है, इस पर लक्ष्मी से सम्बन्धित कई प्रयोग किये जा सकते है मैं नीचे इससे सम्बन्धित तीन प्रयोग दे रहा हूं।

१- किसी बुधवार को प्रातः सूर्योदय के समय इस स्वर्णाकर्षण गुटिका को पात्र में रखकर उसके सामने साधक बैठ जाय, इसमें साधक को पीले वस्त्र पहनना आवश्यक होता है, सामने घी का दीपक लगा दे और घी में थोड़ी सी केशर मिला दें।

इसके बाद इस गुटिका को जल से स्नान कराकर पोंछ कर पुनः बर्तन में रख दे और उस पर केशर लगाकर समर्पित करे। इसके बाद साधक यह मन में विचार लावे कि मैं इस स्वर्णाकर्षण गुटिका पर लक्ष्मी से सम्बन्धित प्रयोग कर रहा हूं और यह प्रयोग मैं अपने घर में अक्षय भण्डार प्राप्त करने के लिए कर रहा हूं जिससे कि मेरे जीवन में कभी भी आर्थिक न्यूनता न आवे तथा निरन्तर घर में सोने की वर्षा होती रहे, यहां सोने की वर्षा से तात्पर्य निरन्तर आर्थिक उन्नति से है।

इस प्रकार भावना लेकर कमल गट्टे की माला से मन्त्र जप प्रारम्भ करे, इसमें दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, पर कुल एक लाख मन्त्र जप होना आवश्यक है।

यह प्रयोग दिन में या रात्रि में अथवा दोनों ही समय किया जा सकता है, कुल एक हजार माला फेरने से यह सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं स्वर्णाकर्षण देव्यै ह्रीं नमः

जब एक लाख मन्त्र जप पूरे हो जाय तब इस स्वर्णाकर्षण गुटिका को पूजा स्थान में रहने दें या उस स्थान पर रख दे जहां रुपये पैसे आदि रखे जाते है।

साधक स्वयं यह अनुभव करेगा कि इस प्रकार के प्रयोग से उसके जीवन में निरन्तर उन्नति हो रही है और आर्थिक दृष्टि से विशेष सम्पन्नता और श्रेष्ठता आ रही है।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त श्रेष्ठ है, और जिन लोगों ने भी इस प्रयोग को किया है, उन्होंने अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

२- इस प्रयोग में भी स्वर्णाकर्षण गुटिका का प्रयोग किया जाता है, साधक श्वेत वस्त्र धारण कर श्वेत आसन पर उत्तर की तरफ मुंह करके सोमवार को प्रातः सूर्योदय से दस बजे के भीतर-भीतर बैठ जाय और सामने किसी पात्र में स्वर्णाकर्षण गुटिका को रखकर उसे जल से धोकर, पोंछकर केशर आदि चढाकर पुष्प समर्पित कर आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु निवेदन करे कि मैं यह प्रयोग लौटरी से, सट्टे से, घुड़दौड़ से या किसी भी प्रकार से आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए सम्पन्न कर रहा हूं जिससे कि मुझे पूर्ण सफलता मिले।

इसके बाद साधक मन्त्र साधना में बैठ जाय, इसका प्रयोग भी एक लाख मन्त्र का है और इसमें स्फटिक मणि माला का ही प्रयोग होता है, इसके अलावा दूसरे किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग अनुकूल नहीं कहा जाता।

इसमें दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, पर कुल मिलाकर एक हजार माला आवश्यक है, इस प्रकार एक लाख मन्त्र जप हो जाते है।

जब साधक अनुष्ठान या मन्त्र जप पूरा कर लेता है, तो उसे कई बार स्वप्न आते है, जिसमें उसको निर्देश मिलता है, कि अमुक नम्बर की लौटरी का टिकट खरीदा जाय या अमुक दिवस को अमुक घोड़े पर दांव लगाया जाय या अमुक स्थान पर खुदाई करने से गड़ा धन प्राप्त होगा आदि आदि।

इस प्रकार दो-दो, तीन-तीन दिन के अन्तराल से इस प्रकार के स्वप्न आते रहेंगे तब साधक को उस स्वप्न के निर्देशानुसार कार्य करना चाहिए, जिससे कि उसको अपने उद्देश्य में सफलता मिल सके।

मन्त्र

ॐ ऐं स्वप्नेश्वरी स्वर्णाकर्षण देव्यै आकस्मिक
निधि प्राप्त्यर्थं त्वम् प्रसन्नानार्थं ह्रीं ऐं ॐ नमः

जब अनुष्ठान पूरा हो जाय तब उस स्वर्णाकर्षण गुटिका को सोते समय हमेशा अपने सिरहाने तकिये के नीचे रखकर सोवें, ऐसा करने पर अवश्य ही उसे मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है।

यह प्रयोग एक उच्चकोटि के साधु ने मुझे बताया था, और उसका यह दावा था कि इस प्रकार के प्रयोग से साधक को अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

३- यह प्रयोग भी स्वर्णाकर्षण गुटिका पर सम्पन्न किया जाता है, इसमें किसी भी शुक्रवार को प्रातः स्नान कर सूर्योदय से दस बजे के भीतर-भीतर अपने सामने स्वर्णाकर्षण गुटिका को पात्र में रखकर जल से धोकर पोंछकर उस पर पुष्प आदि समर्पित कर मन में यह भावना लावें कि मैं अमुक प्रेमी को प्राप्त करना चाहती हूं या अमुक प्रेमिका को प्राप्त करना चाहता हूं।

यदि किसी का विवाह नहीं हो रहा हो या उसमें बाधाएं आ रही हों तो उसके सामने निवेदन करे कि मैं श्रेष्ठ पति या श्रेष्ठ पत्नी शीघ्र से शीघ्र चाहता हूं।

यह प्रयोग पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, इसका मन्त्र जप भी एक लाख है, पर इसमें दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, इसमें भी स्फटिक मणि माला का ही प्रयोग किया जाता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं स्वर्णाकर्षण देव्यै मम: मनोवांछित
कामना सिद्धयर्थं ह्रीं ॐ नमः।

इसमें साधक किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण करके साधना में बैठ सकता

है, आसन या दिशा आदि का कोई बन्धन नहीं है, सामने घी का दीपक लगाना आवश्यक है।

जब अनुष्ठान पूरा हो जाय तब इस स्वर्णाकर्षण गुटिका को अपनी अलमारी में रख लें, या ज्यादा अच्छा यह होगा कि इसे किसी चांदी के तावीज में भरकर अपनी बांह पर बांध ले या गले में धारण कर लें।

ऐसा करने पर अवश्य ही कम से कम समय में उसकी मनोवांछित कामना पूरी होती है, और वह अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर लेता है।

३५–अष्ट लक्ष्मी यन्त्र प्रयोग

यह यन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है, और चांदी के तावीज के आकार का होता है, विशेष मन्त्रों से सम्पुट देकर यह यन्त्र तैयार किया जाता है, सामान्यत: ऐसा यन्त्र अपने आप में अत्यन्त अनुकूल, श्रेष्ठ एवं भाग्योदयकारक होता है, जिस व्यक्ति के जीवन में भाग्यबाधा होती है, या जिसके जीवन में आर्थिक उन्नति नहीं हो पाती है, उसके लिए यह यन्त्र स्वत: ही अनुकूल, भाग्योदयकारक एवं श्रेष्ठ धनदायक है।

इस पर भी कई मन्त्र प्रयोग किये जाते है, लक्ष्मी से सम्बन्धित एक प्रयोग मैं नीचे स्पष्ट कर रहा हूं।

इस यन्त्र को प्राप्त कर किसी भी बुधवार को प्रात: सूर्योदय से दस बजे के भीतर-भीतर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर स इयन्त्र को अपने सामने किसी पात्र में रख दें और सर्व प्रथम इसे जल से स्नान कराकर फिर दूध से स्नान कराकर इसके बाद पुन: जल से स्नान कराकर पोंछकर रख दें, और इस पर केशर, कुंकुम, अक्षत, पुष्प आदि चढा दें।

इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र का १० हजार मन्त्र जप करें, इस प्रकार केवल मात्र १०० मालाएं फेरने से ही यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं अष्टलक्ष्मी दारिद्रय विनाशिनी
सर्वसुख समृद्धि देहि देहि ह्रीं ॐ नम:

यह मन्त्र विशेष रूप से दरिद्रतानाशक है, यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में आर्थिक दृष्टि से कमजोर रहा है, या जीवन में प्रयत्न करने पर भी आर्थिक उन्नति नहीं हो पाई है, या उसके व्यापार में बाधाएं अथवा परेशानियां आ रही है तो यह मन्त्र प्रयोग अत्यन्त ही अनुकूल कहा गया है।

कहा गया है कि यदि किसी के जीवन में चाहे कितनी बाधाएं हो या आर्थिक दृष्टि से चाहे कितनी ही विपरीतता हो, यदि वह इस प्रकार का प्रयोग कर लेता है तो उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से बाधाएं नहीं रह पाती, और न ही वह अपने जीवन में कभी आर्थिक न्यूनता अनुभव करता है।

वस्तुतः यह मन्त्र अपने आप में अत्यन्त ही अनुकूल श्रेष्ठ एवं भाग्योदय-कारक है तथा मेरी राय में प्रत्येक साधक को अपने जीवन में एक बार इसका प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए।

३६– कुबेर प्रयोग

संसार में जितने भी मन्त्र है या लक्ष्मी से सम्बन्धित जितनी भी साधनाएं है, उनमें कुबेर-अनुष्ठान का विशेष महत्व है, कहते है कि लंका के राजा रावण ने भी इस अनुष्ठान को किया था, और इसी के फलस्वरूप वह अपने जीवन में आर्थिक सम्पन्नता और श्रेष्ठता पा सका था।

इसके लिए कुबेर यन्त्र की आवश्यकता है। यह यन्त्र धातु निर्मित, मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए, और अपने आप में पूर्ण प्रभाव युक्त होना चाहिए, इस प्रकार का कुबेर यन्त्र किसी भी योग्य पण्डित से पहले ही तैयार करवाया जा सकता है।

इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि यह मन्त्र प्रयोग या अनुष्ठान कुबेर यन्त्र पर ही सिद्ध किया जा सकता हैं, अतः जब भी सुविधा हो, साधक को प्रकार का कुबेर यन्त्र अपने घर में स्थापित कर लेना चाहिए।

किसी भी सोमवार या बुधवार को प्रातः सूर्योदय से दस बजे के भीतर-भीतर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर इस यन्त्र को अपने घर के पूजा स्थान में स्थापित कर देना चाहिए।

यह यन्त्र मन्त्र सिद्ध होता है, अतः इसको नित्य जल से स्नान कराने की आवश्यकता नहीं है केवल मात्र इस पर कुंकुंम, केशर, अक्षत आदि चढाकर नैवेद्य लगाकर सामने अगरबत्ती व दीपक जलाकर साधक को मन्त्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए।

यह मन्त्र जप इक्कीस हजार मन्त्रों का होता है, मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि जब साधक दो सौ दस मालाएं पूरी कर लेता हैं तो यह साधना सम्पन्न हो जाती है।

इसके लिए दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है, परन्तु मन्त्र जप संख्या निर्धारित है।

जब साधना समाप्त हो जाय तब उस कुबेर यन्त्र को अपने घर के पूजा स्थान में स्थापित कर दे या अपनीं दुकान में रख दें, यदि साधक चाहे तो कुबेर यन्त्र को उस स्थान पर भी रख सकता है, जहां रुपये पैसे गहने आदि रखे हों।

साधक स्वयं यह देखकर अनुभव करेगा कि वास्तव में ही साधना में शक्ति होती है, और यदि सही ढंग से साधना सम्पन्न की जाय तो निश्चय ही अनुकूलता प्राप्त होती है।

मन्त्र

ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।

यह मन्त्र अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और जो साधक अपने जीवन में वास्तव में प्रगति करना चाहते है और यह अनुभव करना चाहते है कि जल्दी से जल्दी जीवन में आर्थिक उन्नति हो तो उनके लिए यह श्रेष्ठ मन्त्र प्रयोग है और इसका प्रयोग अपने जीवन में एक बार अवश्य ही करना चाहिए।

३७- श्री यन्त्र प्रयोग

तांत्रिक मांत्रिक ग्रन्थों में श्री यन्त्र पर जितना साहित्य लिखा गया है, उतना साहित्य किसी पर भी नहीं लिखा गया, भारत के ही नहीं संसार के श्रेष्ठ विद्वानों ने इस यन्त्र की तारीफ की है, और एक स्वर से इस बात को अनुभव

किया है कि यदि श्री यन्त्र पर प्रयोग न भी किया जाय और केवल मात्र इस यन्त्र को अपने घर में ही स्थापित कर दिया जाय तब भी यह यन्त्र आर्थिक अनुकूलता एवं श्रेष्ठता देता है।

इस पर लक्ष्मी से सम्बन्धित कई अनुष्ठान शास्त्रों में दिये है। मैं साधकों एवं गृहस्थ व्यक्तियों ने लिए दो सुगम अनुष्ठान नीचे की पंक्तियों में दे रहा हूं जो कि अपने आप में अनुकूल एवं शीघ्र फलदायक है।

१– किसी बुधवार को प्रातः सूर्योदय के समय अपने घर के पूजा स्थान में किसी पात्र में धातु निर्मित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कूर्मपृष्ठीय श्री यन्त्र स्थापित कर देना चाहिए और इस पर केशर, अक्षत, पुष्प आदि चढाने चाहिए।

इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र का जप प्रारम्भ करना चाहिए। यह मन्त्र जप एक लाख होना आवश्यक है, इसमें दिनों की संख्या निर्धारित नहीं होती साधक चाहे तो दिन में एक से अधिक बार भी मन्त्र जप कर सकता है, इसके लिए सामने मात्र शुद्ध घृत का दीपक लगाना पर्याप्त है। साधक धोती पहन कर पूर्व या उत्तर की तरफ मुंह कर बैठे, और मन्त्र जप में कमल गट्टे की माला का प्रयोग करे।

मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद
प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

जब साधना समाप्त हो जाय तब इस यन्त्र को अपने घर के पूजा स्थान में स्थापित कर दें अथवा दुकान या कार्यालय में रख दें, इससे उसके जीवन में निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है और भौतिक दृष्टि से किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती।

यदि इस प्रकार का श्री यन्त्र मकान बनाते समय उसकी नींव में रखा जाय तो उस मकान में रहने वाले लोगों के जीवन में कभी भी आर्थिक संकट नहीं आता और न किसी प्रकार की परेशानी या बाधा ही आती है।

२– यह प्रयोग भी श्री यन्त्र पर ही किया जाता है इसमें विधि ऊपर लिखे

प्रयोग के अनुसार ही है, मन्त्र जप संख्या भी वही है, केवल मात्र मंत्र में अंतर है, यह मन्त्र दरिद्रता नाश के लिए तथा व्यापार वृद्धि के लिए विशेष रूप से अनुकूल एवं सुखदायक है।

वस्तुतः इस मन्त्र का प्रयोग उन व्यापारिक बन्धुओं को अवश्य ही करना चाहिए, जिनके जीवन में व्यापार बाधा अनुभव हो रही हो।

मन्त्र

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्यादिपतये
धनधान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा ।।

यह मन्त्र अपने आप में चैतन्य श्रेष्ठ एवं प्रभावोत्पादक है, अतः जो साधक वास्तव में ही मन्त्र प्रयोग करना चाहते है, जो अपने जीवन में आश्चर्यजनक व्यापार वृद्धि एवं आर्थिक उन्नति करना चाहते है, उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

३८- कनकधारा प्रयोग

शास्त्रों में कहा गया है कि जिसके घर में कनकधारा यन्त्र नहीं है, उसके घर में लक्ष्मी का निवास कैसे हो सकता है ? इसका तात्पर्य यह है कि कनकधारा यन्त्र और आर्थिक उन्नति एक दूसरे का पर्याय है, कनकधारा यन्त्र धातु से बना हुआ होता है और मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होने के कारण यह स्वतः ही आर्थिक उन्नति देने में समर्थ होता है।

वस्तुतः यदि कोई साधक अपने घर में मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कनकधारा यन्त्र स्थापित कर नित्य कनकधारा मन्त्र की एक माला फेरे तब भी उसके जीवन में आर्थिक उन्नति होती रहती है।

प्रयोग के रूप में मन्त्र प्रयोग एक लाख जप संख्या है, इसमें कमल गट्टे की माला या स्फटिक मणिमाला का प्रयोग किया जाता है, किसी भी बुधवार को प्रातः सूर्योदय से दस बजे के भीतर-भीतर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर इस यन्त्र को किसी बर्तन में स्थापित कर इस पर केशर, अक्षत, पुष्प आदि चढाकर कनकधारा मन्त्र का पाठ प्रारम्भ कर दें।

मन्त्र

ॐ वं श्रीं वं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कनकधारायै स्वाहा ।

वशीकरण प्रयोग

जब इस यन्त्र पर एक लाख मन्त्र जप सम्पन्न हो जाय तब इस यन्त्र को अपने घर के पूजा स्थान में स्थापित कर दें और यदि व्यक्ति चाहे तो इसे अपनी दुकान में अथवा कार्यालय में भी स्थापित कर सकता है।

जिस दिन यह अनुष्ठान सम्पन्न होता है, उसी दिन से साधक को आर्थिक उन्नति अनुभव होने लग जाती है, और आगे के जीवन में किसी भी प्रकार से कोई आर्थिक बाधा नहीं रहती और उसका व्यापार उन्नति की तरफ अग्रसर होता रहता है।

वस्तुतः यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और जो भी साधक अपने जीवन में आर्थिक उन्नति करना चाहते हैं, उनको चाहिए कि वह अवश्य इस प्रकार का मन्त्र प्रयोग अपने जीवन में करें।

३९- लक्ष्मी चेटक प्रयोग

ऊपर के पृष्ठों में मैंने लक्ष्मी प्राप्ति से संबंधित मन्त्र प्रयोग दिए है, अब मैं कुछ चेटक, तन्त्र प्रयोग और मन्त्रों का प्रयोग दे रहा हूं, जो कि पूर्ण है, मेरे शिष्यों ने इन प्रयोगों को किया है और वे इनमें सफल हुए है, सबसे पहले मैं लक्ष्मी चेटक दे रहा हूं।

इस प्रयोग में साधक को मात्र एक लाख मन्त्रों का जप करना होता है, और जब एक लाख मन्त्र जप सम्पन्न हो जाय तो गेहूं तथा चने बराबर-बराबर लेकर दस हजार मन्त्रों से आहुति देनी होती है, ऐसा होने पर लक्ष्मी प्रसन्न हो जाती है और उसके जीवन के सारे दुख दारिद्रय और संताप दूर कर देती है।

मन्त्र

ॐ श्रीं काककमलवर्द्धने सर्वकार्यसर्वार्थान्देहि देहि सर्वकाय
कुरु कुरु परिचर्य्यंसर्वसिद्धिपादुकायां हं क्षां श्रीं
द्वादशन्नदायिने सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा ।।

इस मन्त्र को जपने का कोई विशेष विधान नहीं है और न किसी विशेष मुहूर्त आदि की आवश्यकता है, इसमें आसन, वस्त्र, दीपक, पूजा यन्त्र चित्र की भी आवश्यकता नहीं है, यह चेटक मन्त्र है, और इसको सीधा जपना ही होता है, मन्त्र जप करने से तथा उसका दशांश हवन करने ने कार्य सिद्धि हो जाती है।

४०– नानासिद्धि चेटक

यह प्रयोग गोपनीय होने के साथ-साथ महत्वपूर्ण है और इसे सिद्ध करने पर जीवन में जो कुछ भी चाहता है जिस प्रकार की इच्छा करता हैं, जो भी इच्छा करता है, जो भी भावना होती है वह पूरी होती है और उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

मन्त्र

ॐ नमो भूतनाथाय नमः मम सर्वसिद्धिदेहि देहि
श्रीं क्लीं स्वाहा ।।

जब मन्त्र जप पूर्ण हो जाता है तो लक्ष्मी स्वयं सामने प्रकट होती है और उसे इच्छानुसार वरदान मांगने को कहती है, यह प्रयोग महत्वपूर्ण है और सम्पन्न करने पर जीवन में सारी इच्छाओं की पूर्ति होती है।

४१– ज्वालामालिनी चेटक प्रयोग

कहा गया है कि जो ज्वाला मालिनी चेटक प्रयोग सम्पन्न कर लेता है, उसे नित्य ज्वाला मालिनी देवी सुवर्ण देती रहती है, तांत्रिक ग्रन्थों में और मांत्रिक प्रयोगों में इस प्रकार का कई स्थानों पर उल्लेख है।

इस प्रयोग में गुरूवार को मन्त्र प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए, यह प्रयोग २३ दिन का है तथा केवल रात्रि को ही किया जाता है, नित्य रात्रि को आठ हजार मन्त्र जप होना चाहिए, मन्त्र जप करते समय सामने तेल का दीपक लगा रहना चाहिए और मूंगे की माला, हल्दी की माला या हड्डियों की माला का प्रयोग किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है।

मन्त्र

ॐ नमो भगवति ज्वाला मालिनि
गृध्रगण परिवृते स्वाहा ।।

जो इस प्रकार का मन्त्र एवं साधना सम्पन्न कर लेता है, उसे जीवन में सर्व प्रकारेण भौतिक सुख प्राप्त होते है और किसी प्रकार का कोई शत्रु उसका सामना नहीं कर पाता । एक प्रसिद्ध ग्रन्थ मन्त्र महार्णव में कहा गया है—

मन्त्र

जपेदष्टसहस्त्रं तु त्रयोविंशशतिवासरान् ।
प्रत्यहं सा सुवर्णं च ददातीति न संशयः ।।

४३– उच्छिष्टचांडालिनी प्रयोग

जो भी जीवन में मन्त्र या तन्त्र से परिचित हैं वे निश्चय ही उच्छिष्ट चांडालिनी प्रयोग से परिचित होंगे । यह प्रयोग सीधा सादा है, परन्तु अपने आप में महत्वपूर्ण है और जो इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, उसे आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती और मन्त्र सिद्ध होने के बाद वह जब भी भोजन करने की इच्छा करता है तो वे खाद्य पदार्थ एवं भोजन आकस्मात उसके सामने प्रकट होते रहते है, साथ ही साथ वह जब भी धन आदि की इच्छा करता है, तो धन स्वर्ण, आदि भी आकस्मिक रूप से प्राप्त होता रहता है ।

प्रयोग विधि यह है कि साधक भोजन करके मुंह साफ नहीं करे अपितु झूठे मुंह से ही वहीं पर बैठे-बैठे पांच हजार मन्त्र जप करे, इस प्रकार नित्य पांच हजार मन्त्र जप करते हुए कुल एक लाख मन्त्र जप पूर्ण हो तब यह साधना सम्पन्न मानी जाती है ।

इसके बाद जब भी वह पांच बार मन्त्र का जप करके किसी भी प्रकार की वस्तु भोजन या द्रव्य की इच्छा करता है, वह तुरन्त प्राप्त हो जाती ।

मन्त्र

ॐ नमः उच्छिष्टचांडालिनी वाग्वादिनि
राजमोहिनि प्रजामोहिनि स्त्रीमोहिनि

मन्त्र

आन आत येवैं वायु वायु उच्छिष्टचांडालिनी।
सत्यवादिनी की शक्ति फुरे स्वाहा ।।

वस्तुतः यह मन्त्र अत्यन्त ही अनुकूल है, और सैकड़ों लोगों ने इस प्रकार के मन्त्रों को सम्पन्न किया है और उन्हें पूर्ण सफलता मिली है, जो इस प्रकार की साधना में रुचि रखता हो, वह यह प्रयोग कर सकता है।

४३- धन प्राप्ति कारक यन्त्र

जहां जीवन में मन्त्रों का प्रभाव तुरन्त होता है, वहीं पर कुछ यन्त्र ऐसे भी होते है, जिनका प्रयोग करने से तुरन्त ही कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है, और आर्थिक दृष्टि से अनुकूलता प्राप्त हो जाती है।

किसी सोमवार को निम्नलिखित यन्त्र भोजपत्र पर बना कर (अष्टगन्ध से यह यन्त्र भोजपत्र पर लिखना चाहिए) धूप, दीप जलाकर चांदी के ताबीज में भर कर दाहिने हाथ की भुजा में बांधे तो उसे जीवन में निश्चय ही आर्थिक उन्नति प्राप्त होती है।

यन्त्र

६६	९३	२	८
७	३	९०	८९
९१	८६	९	१
४	६	८७	९८

वस्तुतः यह प्रयोग अपने आप में छोटा सा दिखाई देता है, परन्तु महत्वपूर्ण है और जो भी साधक इस प्रकार का प्रयोग करे तो निश्चय ही उसे लाभ प्राप्त होता है।

मन्त्र

आन आत येवैं वायु वायु उच्छिष्टचांडालिनी।
सत्यवादिनी की शक्ति फुरे स्वाहा॥

वस्तुतः यह मन्त्र अत्यन्त ही अनुकूल है, और सैकड़ों लोगों ने इस प्रकार के मन्त्रों को सम्पन्न किया है और उन्हें पूर्ण सफलता मिली है, जो इस प्रकार की साधना में रुचि रखता हो, वह यह प्रयोग कर सकता है।

४३- धन प्राप्ति कारक यन्त्र

जहां जीवन में मन्त्रों का प्रभाव तुरन्त होता है, वहीं पर कुछ यन्त्र ऐसे भी होते है, जिनका प्रयोग करने से तुरन्त ही कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है, और आर्थिक दृष्टि से अनुकूलता प्राप्त हो जाती है।

किसी सोमवार को निम्नलिखित यन्त्र भोजपत्र पर बना कर (अष्टगन्ध से यह यन्त्र भोजपत्र पर लिखना चाहिए) धूप, दीप जलाकर चांदी के ताबीज में भर कर दाहिने हाथ की भुजा में बांधे तो उसे जीवन में निश्चय ही आर्थिक उन्नति प्राप्त होती है।

यन्त्र

६६	१३	२	८
७	३	१०	८१
११	८६	१	१
५	६	८७	१८

वस्तुतः यह प्रयोग अपने आप में छोटा सा दिखाई देता है, परन्तु महत्वपूर्ण है और जो भी साधक इस प्रकार का प्रयोग करे तो निश्चय ही उसे लाभ प्राप्त होता है।

४३- लक्ष्मी प्रयोग

यह जैन साहित्य से सम्बन्धित प्रयोग है। इस साहित्य में "लोगस्स कल्प" का विशेष महत्व है, इस ग्रन्थ में लक्ष्मी से सम्बन्धित कई प्रयोग है।

साधक को प्रातः स्नान आदि कर पूर्व की तरफ मुंह करके खड़े होकर एक हजार मन्त्र का जप करना चाहिए और ऐसा प्रयोग १४ दिन तक किया जाना चाहिए।

इसमें साधक सफेद वस्त्र पहनकर खड़ा हो, दिन में एक समय शुद्ध हल्का शाकाहरी भोजन करे वह ब्रह्मचर्य का निष्ठा के साथ पालन करे। ऐसा करने पर उसे अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है और उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

मन्त्र

ॐ ऐं ॐ श्रीं ह्रीं लोगस्य उज्जोगरे धम्म तित्थयरे जिणं
अरिहन्ते कित्त इस्सं चउवीसं पिकेवली ममं मनोदिष्ट
कुरु कुरु स्वाहा ।।

वस्तुतः यह प्रयोग अनुकूल है और साधक चाहे तो इसका उपयोग कर सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि यह प्रयोग केवन जैन ही करें, अपितु किसी भी धर्म का मानने वाला इस प्रकार का मन्त्र प्रयोग कर सकता है और ऐसा करने पर उसे पूर्ण सफलता मिल सकती है।

४५- कामज्ञा प्रयोग

यह भी जैन मन्त्र है, इसमें साधक को मौन रहकर मन ही मन जप करना होता है। नित्य पांच हजार मन्त्र जप करने पर सात दिन में मन्त्र सिद्धि हो जाती है, सात दिनों में साधक अन्न नहीं ले इसकी बजाय वह फलाहार, दूध-दही दूध की बनी मिठाई आदि का प्रयोग कर सकता है। रात्रि को भूमि शयन करे, ब्रह्मचर्य का पालन करे और शुद्ध सत्य भाषण करे।

मन्त्र

ॐ क्रां क्रीं ह्रां ह्रीं उपभमजियंच वंदे,
सम्भव मभिणं दणं सुमई पउमप्पह सु पौस
जिणं च चंदप्पह वन्दे स्वाहा ।

यह मन्त्र अपने आप में महत्वपूर्ण है, और ऐसा होने पर उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, उसकी मनोकामना पूर्ण होती है, खोया हुआ धन प्राप्त हो जाता है, और आर्थिक अभाव नहीं रहता।

४१- आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग

यह महत्वपूर्ण प्रयोग है, इस मन्त्र का जप रात्रि को ठीक बारह बजे किया जाता है, यदि सम्भव हो तो यह मन्त्र-जप पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर किया जाय, यदि ऐसा सम्भव न हो तो घर के एकान्त कक्ष में पीपल के २१ पत्तों का आसन बिछा कर उस पर उत्तर की तरफ मुंह कर, बैठकर, सामने घी का दीपक लगाकर नित्य रात्रि को ग्यारह हजार जप करे, ऐसा निरन्तर ४१ दिन तक करने पर आकस्मिक धन प्राप्ति होती है, यह किसी भी प्रकार से लौटरी, सट्टे भूमि से आकस्मिक धन प्राप्ति हो सकती है ।

मन्त्र

ॐ ठूं ठूं फट् फट् ऐं ह्रीं श्रीं धन देहि ह्रीं स्वाहा ।

यह मन्त्र महत्वपूर्ण है, और यदि साधक निष्ठा के साथ इस प्रयोग को करे तो निश्चय ही उसे जीवन में अनुकूल फल प्राप्त होता है ।

४७- पद्मावती प्रयोग

यह जैन मन्त्र है, और ऐश्वर्यदायक मन्त्र कहा गया है, जैन ग्रन्थों में लिखा हुआ है, कि यदि जीवन में किसी प्रकार का अभाव हो और भाग्य में दरिद्रता भी लिखी हुई हो पर यदि पद्मावती मन्त्र प्रयोग कर दिया जाय तो निश्चिय हो उसे सफलता मिल जाती है ।

यह मन्त्र प्रयोग मंगलवार से प्रारम्भ करे और नित्य इक्यावन मालाएं

फेरे, यदि मूंगे की माला का प्रयोग किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है, कुल मन्त्र जप एक लाख होता है, इसका तात्पर्य यह है कि इक्कीस दिन तक नित्य इक्यावन मालाएं फेरने पर यह प्रयोग सम्पन्न हो जाता है, इसके अलावा इस प्रयोग में और कोई विधि-विधान नहीं है।

मन्त्र

ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वजन मोहिनी सर्वकार्यकरणी मम विकट संकट संहारिणी मम महामनोरथ पूरणी मम सर्व चिन्ता चूरणी ॐ पद्मावती नमः स्वाहा।

यह प्रयोग अनुकूल है, और कोई भी साधक इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है।

४८– घण्टाकर्ण प्रयोग

आर्थिक उन्नति के लिए इस प्रयोग को सम्पन्न किया जाता है, यह प्रयोग किसी भी महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को प्रारम्भ किया जाता है, यह प्रयोग ६० दिनों का है इसमें नित्य ग्यारह मालाएं मन्त्र जप किया जाता है, माला कमल गट्टे की या मूंगे की प्रयोग में लानी चाहिए।

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं घण्टाकर्णो नमस्तुते ठः ठः ठः स्वाहा।

इसके अलावा इसमें अन्य कोई विधि विधान नहीं है, और यदि साधक इस प्रकार का कार्य सम्पन्न कर लेता है, तो निश्चय ही उसे जीवन में पूर्णता प्राप्त हो जाती है, साधक को चाहिए कि वह इस प्रकार का मन्त्र जप अवश्य ही सम्पन्न करे।

४९– कामदेव लक्ष्मीबंध प्रयोग

ऊपर मैंने लाखों मन्त्रों में से कुछ लक्ष्मी से सम्बन्धित मन्त्र प्रयोग आदि दिए है, साथ ही एक या दो चेटक प्रयोग भी दिए है, इसके अलावा कल्प एवं बंध प्रयोग भी विशेष महत्वपूर्ण होते है, अतः पाठकों की जानकारी व साधकों

की इच्छा के अनुसार एक विशेष बंध-प्रयोग दे रहा हूं।

यह उडुयनि बन्ध प्रयोग है, और जो व्यक्ति इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, उसे जीवन में जरूरत से ज्यादा धन प्राप्ति होती है, यदि वह दोनों हाथों से व्यय करे तब भी वह धन प्राप्ति होती है, वस्तुतः जो उच्च कोटि के साधक है, जीवन में अतुलनीय द्रव्य व्यापार विस्तार चाहते है, उन्हें यह बन्ध-प्रयोग करना चाहिए।

इसमें साधक को श्मशान में बैठकर ही मन्त्र प्रयोग करना पड़ता है, साधक को चाहिए कि वह किसी मंगलवार को इस प्रयोग को प्रारम्भ करे, और नित्य इक्कीस सौ मन्त्र जप करे, इस प्रकार इक्कीस दिनों तक श्मशान में जाकर इस प्रकार मन्त्र जप करने पर यह बन्ध सम्पन्न हो जाता है।

मन्त्र

ॐ नमः कामदेवाय महाप्रभवाय ह्रीं कामेश्वरस्वाहा।

इसमें मूंगे की माला ही प्रयोग किया जाता है, इक्कीस दिनों तक साधक जौ की रोटी और बिना नमक की सब्जी खा सकता है, पृथ्वी पर सोवे, ब्रह्मचर्य से रहे, झुठ न बोले और जब साधना सम्पन्न हो जाय तो एक ब्राह्मण को भोजन करा दे, इस प्रकार करने पर यह प्रयोग पूर्ण हो जाता है।

इसके बाद वह जब भी चाहे इस मन्त्र को कागज पर लिखकर पानी में बहा दे, या पानी की गिलास में डालकर रख दे तो उसी दिन उसे विशेष धन की प्राप्ति हो जाती है, यदि इस मन्त्र को सिद्ध होने पर भोज पत्र पर अष्ट गन्ध से लिखकर तावीज में भर कर दाहिनी भुजा पर बांध दे तो उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से अभाव रह हीं नहीं सकता।

वस्तुतः यह मन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और किसी मुसलमान फकीर ने बताया था, जो कि अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और अनुभूत है।

५०– उस्मान मन्त्र

सैंकड़ों–हजारों अरबी साबर मन्त्रों में यह उस्मान मन्त्र महत्वपूर्ण है जो

कि विशेष रूप से लक्ष्मी प्राप्ति के लिए सम्पन्न किया जाता है।

यह मन्त्र प्रयोग नित्य ४४४४ बार जपना चाहिए और ४४ दिन तक जपने पर यह मन्त्र सिद्ध जाता है, सिद्ध होने के बाद वह जब भी एक मन्त्र उच्चारण कर जितने धन की याचना करता है, उसकी याचना पूरी हो जाती है।

यह प्रयोग किसी मजार या कब्र के पास खड़े होकर जपा जाता है, जपने से पूर्व कब्र पर इत्र चढ़ा देना चाहिए, और लौबान धूप लगा देना चाहिए साथ, ही साथ कब्र को श्रद्धा के साथ प्रणाम कर उससे आज्ञा मांग कर यह मन्त्र जप प्रारम्भ करना चाहिए।

मन्त्र

'अल्लहुम्मसल्ल अला मुहम्मदिन व अला आल
मुहम्मदिन व बारिकव सल्लम ॥''

यह मन्त्र अत्यन्त ही श्रेष्ठ और शीघ्र प्रभावकारक है, अतः जो भी साधक चाहे इस प्रकार की साधना सम्पन्न कर लाभ उठा सकता है।

५१– दक्षिणावर्त शंख कल्प

अन्त में मैं एक लक्ष्मी से सम्बन्धित कल्प दे देता हूं, यो तो तांत्रिक-मात्रिक ग्रन्थों में सैकड़ों कल्प है, परन्तु साधकों की जानकारी के लिए एक कल्प नीचे दे रहा हूं।

मूलतः भारत में जितने भी शंख पाये जाते है, वे वामवर्त शंख होते है, परन्तु यह प्रकृति का चमत्कार ही है कि बहुत कम शंख दक्षिणावर्त भी होते है, ऐसे शंख दुर्लभ और महत्वपूर्ण माने गये है, इसमें भी नर, मादा और नपुंसक दक्षिणा शंख भी होते है, पर मादा एवं नपुंसक शंख लक्ष्मी प्रयोग के लिए हितकर नहीं होते अतः केतल नर शंख का ही प्रयोग करना चाहिए।

इस प्रकार का शंख दुर्लभ होता है, परन्तु जिसके घर में ऐसा शंख होता है, उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

ऐसा शंख प्राप्त कर दीपावली की रात्रि को स्वयं स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पश्चिम की तरफ मुंह कर आसन पर बैठ जाय, और सामने चांदी या कांसी की थाली में कुंकुम से अष्टदल बनाकर उस पर दक्षिणावर्त शंख रख दे, इस षंख का मुंह साधक की तरफ होना है।

इसके बाद उसे जल से स्नान करावे फिर पंचामृत से स्नान कराकर पुनः जल से स्नान कराकर सफेद वस्त्र से पोंछ ले, यदि सम्भव हो तो इस प्रकार के शंख को सोने में मंढ देना चाहिए।

इसके बाद शंख की अक्षत, पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिए, और सामने अगरबत्ती व दीपक लगा देना चाहिए।

फिर शंख पर गुलाल एवं इत्र लगावे और उसके सामने नेवैद्य रखे।

इसके बाद ग्यारह मालाएं मन्त्र जप करे, इसमें कमल गट्टे की माला का प्रयोग किया जाय तो ज्यादा उचित रहेगा।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लुं दक्षिणामुखाय शंखनिधये
समुद्रप्रभवाय शंखाय नमः ।।

इसके बाद प्रातःकाल उठकर इस शंख को अपने पूजा स्थान में रख दे या किसी सुरक्षित स्थान पर रख दे।

वस्तुतः जो भाग्यशाली होते है, जिनके जीवन में भाग्योदय होना होता हैं, उन्हीं के घर में दक्षिणावर्त शंख होता है।

ऐसा करने पर उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, और वह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषर्थों को प्राप्त कर अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करता है।

यह प्रयोग दीपावली की रात्रि को या किसी भी बुधवार की रात्रि को

सम्पन्न किया जा सकता है, पर इतना ध्यान रखना चाहिए कि ऐसा नर दक्षिणा-वर्त शंख चैतन्य मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए, तभी अनुकूल फल प्राप्त होता है।

इससे साधक को कई लाभ होते है, कुछ लाभ इस प्रकार है—

१– जिसके घर में या पूजा स्थान में ऐसा मन्त्र जप किया हुआ नर शंख रहता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

२– इस प्रकार के शंख में जल भरकर मस्तक पर रोज छिड़कने से पाप नाश होते है।

३– शंख में जल भरकर मस्तक पर रोज छिड़कने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

४– पूजन के बाद शंख में दूध भरकर यदि बांझ स्त्री पिये तो उसके निश्चय ही सन्तान होती है।

५– यदि इस प्रकार का शंख घर में होता है, तो किसी प्रकार का रोग या संकट घर में व्याप्त नहीं होता।

६– मदि इस शंख के सामने नित्य अगरबती लगाई जाय तो उस व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा बढती है, राज्य में सम्मान होता है तथा व्यापार वृद्धि होती है।

७– जिनके घर में एसा शंख होता है, उनके घर में अक्षय भण्डार बना रहता है।

८– यदि इस शंख में पानी भरकर 'अमुक वश मानाय स्वाहा' मन्त्र का २१ बार उच्चारण कर वह जल उस पर डाल दे तो वह निश्चय ही वश में होता है, इस मन्त्र में 'अमुक' के स्थान पर उसका नाम उच्चारण करना चाहिए जिसको अपने वश में करना हो।

वस्तुत: यह कल्प अत्यन्त ही गोपनीय एवं महत्वपूर्ण है; सौभाग्यशाली व्यक्ति ही ऐसा कल्प सिद्ध कर सकते है।

-✿-

प्रमुख स्तोत्र

कनकधारा देवी

इन्द्राक्षी स्तोत्रम्

।। ध्यानम् ।।

इन्द्राक्षीं द्विभुजा देवी पीतवस्त्रसमन्विताम् ।।
वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणे च वरप्रदाम् ।।१।।

इन्द्राक्षी नाम सज्योतिर्नाना रत्नविभूषिताम् ।।
प्रसन्नवदनांभोजामप्सरोगणसेविताम् ।।२।।

इन्द्र उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतेः समुदाहृता ।।
गौरी शाकंभरी देवी दुर्गानाम्नाऽतिविश्रुता ।।३।।

कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपा ।।
गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मावादिनी ।।४।।

नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला ।।
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कलरात्रि तपविस्वनी ।।५।।

मेघश्यामा सहस्राक्षी विष्णु माया जलोदरी ।।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ।।६।।

अच्युता भद्रदा नन्दा रोगहंत्री शिवप्रिया ।।
शिवदूती कराली च प्रत्यक्ष परमेश्वरी ।।७।।

महिषासुरहंत्री च चामुण्डा सप्तमातरः ।।
इन्द्राणी चन्द्ररूपा च रुद्रशक्तिः परायणा ।।८।।

शिवा च शिवरूपा च शिवशक्तिपरायणा ।।
सदा समोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी ।।९।।

आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ।।
वाराहो नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ।।१०।।

श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।।
अनन्ता विजया पूर्णा मानस्तोकापराजिता ।।११।।

भवानी पार्वती दुर्गा हेमवत्यंबिका शिवा ।।
शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्द्धशरीरिनी ।।१२।।

मृत्युंजया महामाया सर्वरोगप्रणाशिनी ।।
ऐरावतगजारूढा भूषिता कंकणप्रभा ।।१३।।

एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।।
शतमावर्तते यस्तु मुच्यते व्याधिबंधनात् ।।१४।।

आवर्तयेत्सहस्त्रं यो लभते वांछितं फलम् ।।
इन्द्रेण कथितं स्तोत्र सत्यमेव न संशयः ।।१५।।

।। इति श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ।।
वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ।।१०।।

श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।।
अनन्ता विजया पूर्णा मानस्तोकापराजिता ।।११।।

भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा ।।
शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्द्धशरीरिनी ।।१२।।

मृत्युंजया महामाया सर्वरोगप्रणाशिनी ।।
ऐरावतगजारूढा भूषिता कंकणप्रभा ।।१३।।

एतैर्नामिपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।।
शतमावर्तते यस्तु मुच्यते व्याधिबंधनात् ।।१४।।

आवर्तयेत्सहस्त्रं यो लभते वांछितं फलम् ।।
इन्द्रेण कथितं स्तोत्र सत्यमेव न संशयः ।।१५।।

।। इति श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।
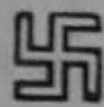
त्रैलोक्यमंगल भुवनेश्वरी कवचम्

देव्युवाच

देवेश भुवनेश्वर्या या या विद्याः प्रकाशिता
श्रुताश्चाधिगता सर्वाः श्रोतुमिच्छामि सांप्रतम् ।१।

त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं यत्पुरोदितम् ।
कथयस्व महादेव मम प्रीतकरं परम् ।२।

ईश्वर उवाच

शृणु पार्वति वक्ष्यामि सावधानावधारय ।
त्रैलोक्यमंगलं नाम कवचं मंत्रविग्रहम् ।३।

सिद्धविद्यामयं देवि सर्वेश्वर्यसमन्वितम् ।
पठनाद्धारणान्मर्त्यस्त्रैलोक्यैश्वर्यभाग्भवेत् ।४।

ॐ अस्यश्रीभुवनेश्वरीत्रैलोक्य मंगलकवचस्यशिवऋषिः
विराट छन्दः । जगद्धात्री भुवनेश्वरी देवता ।
धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः ।
शिवऋषये नमः शिरसि ।१।
विराट् छन्दसे नमः मुखे ।२।
भुवनेश्वरीदेवतायै नमः हृदि ।३।
विनियोगाय नमः सर्वांगे ।
इति ऋष्यादिन्यासः ।

ह्रीं बीजं शिरः पातु भुवनेशी ललाटकम् ।
ऐं पातु दक्षनेत्रं में ह्रीं पातु वामलोचनम् ।१।

श्रीं पातु दक्षकर्णं मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी ।
वामकर्णं सदा पातु ऐं घ्राणं पातु मे सदा ।२।
ह्रीं पातु वदनं देवि ऐं पातु रसनां मम ।
वाक्पुटा च त्रिवर्णात्मा कंठं पातु परात्मिका ।३।
श्रीं स्कंधौ पातु नियतं ह्रीं भुजौ पातु सर्वदा ।
क्लीं करौ त्रिपुटा पातु त्रिपुरैश्वर्यदायिनी ।४।
ॐ पातु हृदयं ह्रीं मे मध्यदेशं सदावतु ।
क्रौं पातु नाभिदेशं मे त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी ।५।
सर्वबीजप्रदा पृष्ठं पातु सर्ववशंकरी ।
ह्रीं पातु गुह्यदेशं मे नमो भगवती कटिम् ।६।
माहेश्वरी सदा पातु शंखिनीं जानुयुग्मकम् ।
अन्नपूर्णा सदा पातु स्वाहा पातु पदद्वयम् ।७।
सप्तदशाक्षरा पायादन्नपूर्णाखिलं वपुः ।
तारं माया रमाकामः षोडशार्णा ततः परम् ।८।
शिरःस्था सर्वदा पातु विंशत्यर्णात्मिका परा ।
तारं दुर्गेयुगं रक्षिणीस्वाहेता दशाक्षरा ।९।
जयदुर्गा घनश्यामा पातु मां सर्वतो मुदा ।
मायाबीजादिका चैषा दशार्णा च ततः परा ।१०।
उत्तप्तकांचनाभासा जय दुर्गाऽऽनने वतु ।
तारं ह्रीं दुं च दुर्गायै नमोऽष्टार्णात्मिका परा ।११।
शंख चक्रधानुर्बाणधरा मां दक्षिणेऽवतु ।
महिषामर्दिनी स्वाहा वसुवर्णात्मिका परा ।१२।
नैर्ऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुरनाशिनी ।
माया पद्मावती स्वाहा सप्तार्णा परिकीर्तिता ।१३।
पद्मावती पद्मसंस्था पश्चिमे मां सदाऽवतु ।
पाशंकुशपुटा माये ह्रि परमेश्वरि स्वाहा ।१४।
त्रयोदशार्णा ताराद्या अश्वारुढाऽनले वतु ।

सरस्वती पंचस्वरे नित्यक्लिन्ने मदद्रवे ।१५।
स्वाहा वस्वक्षरा विद्या उतरे मा सदाऽवतु ।
तारं माया च कवचं खे रक्षेत्सततं वधूः ।१६।
हूं क्षें ह्रीं फट् महाविद्या द्वादशार्णाखिलप्रदा ।
त्वरिताष्टाहिभिःपायाच्छिवकोणे सदा च माम् ।१७
ऐं क्लीं सौं सततं बाला मुर्द्धदेशेततोऽवतु ।
विद्दंता भैरवी बाला मस्तो मां च सदाऽवतु ।१८।
इति ते कथितं पुण्यं त्रैलोक्यमंगलं परम् ।
सारात्सारतरं पुण्यं महाविद्योघविग्रहम् ।१९।
अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोऽपि धनेश्वरः ।
इन्द्राद्याः सकला देवा धारणात्पठनाद्यतः ।२०।
सर्वसिद्धेश्वराः संतः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयात् ।
पुष्पाजल्यष्टकं दद्याम्मूलेनैव पृथक् पृथक् ।२१।
संवत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात् ।
प्रीतिमन्योऽन्यतः कृत्वा कमला निश्चला गृहे ।२२।
वाणी च निवसेद्वक्र सत्यं सत्यं न संशया ।
यो धारयति पुण्यात्मा त्रैलोक्यमंगलाभिधम् ।२३।
कवचं परम पुण्यं सौऽपि पुण्यवतां वरः ।
सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।५४।
पुरुषो दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ।
बहुपुत्रवती भूयाद्वध्यापि लभते सुतम् ।२५।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृंतंनि त जनम् ।
एतत्कवचमज्ञात्वा यो भजेद्भुवनेश्वरीम् ।
दारिद्रय परम प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ।२६।

इति श्रीरुद्रयामले तत्रे देवीश्वर संवादे त्रैलोक्यमंगल नाम भुवनेश्वरीकवच समाप्तम् ।

अथ भुवनेश्वरीस्तोत्रं

अथानंदमयी साक्षाच्छब्दब्रह्म स्वरूपिणीम् ।
ईडे सकसंपत्यै जगत्कारणमंबिकाम् ।१।

आद्यामशेषजनीमर विंदयोर्नेर्विष्णों: शिवस्य च वपु: प्रतिपादयित्रीम् ।
सृष्टिस्थितिक्षय करी जगतां त्रयाणा स्तुत्वा गिरं विमलयाम्यहमम्बिकेत्वम्
पृथ्व्या जलेन शिखिना मरुतां वरेण होत्रेन्दुना दिनकरेण च मूर्तिभाज: ।
देवस्य मन्मथरिपोरपि शक्तिमत्ताहेतुस्त्वमेव खलु पर्वतराजपुत्रि ।३।
त्रिस्रोतस: सकलदेवसमर्च्चितताया वैशिष्ट्यकारण मवमि तदेव मात: ।
त्वत्पादपंकजपरापवित्रितासु शंभोर्जटासु सततं परिवर्तनं यत् ।४।
आनन्दयेत्कुमुदिनीमधिप: कलानां नान्यमिन: कमलिनीमथ नेतरां वा ।
एकत्र पीदनमिघौ परमे क ईष्टे त्वं तु प्रपंचमभिनंदयसि स्वदृष्ट्या ।५।
आद्याप्यशेषजगतां नव यौवनासि शैलाधिराजतजनयाप्यतिकोमलासि ।
त्रय्या:प्रसूरपि तथा न समीक्षितासि ध्येयासि गौरी मनसो न पथिस्थितासि
आसद्य जन्म मनुजेषु चिराद्दुरापं तत्रापि पाटवमवाप्य निजेन्द्रियाणाम्
नाभ्यर्चयंति जगतां जनयित्रि ये त्वं नि: श्रेणिकाग्रमधि रुह्य पुन: पतंति
कर्पूरचुर्णहिमवारीविलोडितेन ये चंदनेन कुमुथैश्च सुगंधिगंधः ।
आराधयंति हि भवानि समुत्सुकास्त्वां ते खल्वशेषभुवनाधिभुव: प्रथंते ।
आविश्य मध्यपदवीं प्रथमे सरोज सुप्ताहिराजसदृशी विरचय्य विश्वम् ।
विद्युल्लतावलय विभ्रममुद्वहंती पद्मानि पंच विदलय्य समश्नुवाना ।९।
तन्निर्गतामृतरसै: परिषिक्तगात्रमार्गेण तेन निलयं पुनरप्यवाप्ता ।
येष: हृदि स्फुरसि जातु न ते भवेयुर्मातर्थहेश्वरकुटुंबिनि गर्भभाज ।१०।
आलंबिकु डलभरामभिरामवक्रमापीवरस्तनतटीं वनुवृत्तमध्याम् ।
चिंताक्षसूत्रकलशालिखिताढ्यहस्तामावंतयामि मनसा तव गौरि मूर्तिम् ।
आस्थाय योगमवजित्य च वैरिषट्कमाद्धय चेंद्रियगण मनसि प्रसन्ने ।
पाशांकुशाभयवराढ्यकरां सुवक्रामालोकयंति भुवनेश्वरि योगिनस्त्वाम् ।
उद्यप्नहाटकनिभा करिभिश्चतुर्भिरावर्तितामृघटैरभिषिच्यमाना ।
हस्तद्वयेन नलिने रुचिरे वहंति पद्मापि माभयवरा भवसि त्वमेव ।
अष्टाभिरुग्र विधिवायुधवाहिनीभिर्पोर्वल्लरीभिरविरुह्य मृगाधिराजम् ।

दूर्वादलद्युतिरमर्त्यविपक्षपक्षान् न्यक्कुर्वती त्वमसि देवि भवानि दुर्गा ।१४।
आविभ्रि दाघजलशीकरशोभिवक्त्रां गुंजाफलेन परिकल्पितहारयष्टिम् ।
पीतांशुकामसित कांतिमनंगतंत्राद्याद्या पुलिंदतरुणीमसकृत्स्मरामि ।१५
हंसैर्गतिक्वणितनूपुरदूरदृष्टे मूर्तैरिवाप्तवचनैरनुगम्यमानौ ।
पद्मविबोध्यमुखरूढ़ सुजातनालौ श्रीकंठपत्नि शिरसा विदधे तवांघ्री ।१६।
द्वाभ्यां समीक्षितुमतृप्तिमतेव दृग्भ्यामुत्पाट्य भालनयनं वृषकेतनेन ।
सांद्रानुरागतरलेन निरीक्षमाणे जंघे अपिभवानि तवानतोऽस्मि ।१७।
ऊरू स्मरामि जितहस्तिकरावलेपौ स्थौल्येन मार्दवतया परितरंभौ ।
श्रेणीभरस्य सहनौ परिकल्प्य दत्तौस्तंभाविवांगवयसा तव मध्यमेन ।१८।
श्रोण्यौ स्तनौ च युगपत् प्रथयिष्यतोच्चैर्बाल्यात्परेण वयसापरिहृष्ट सारौ।
रोमावली विलसितेन विभाव्यमूर्ति मध्यं तव स्फुरतु मे हृदयस्य मध्ये ।१९।
सत्यः स्मरस्य हरनेत्रहुताशशांत्यै लावण्यवारिभरित नवयौवनेन ।
आपाद्य दत्तमिवपल्लवमप्रविष्टं नाभिं कपापि तव देविन विस्मरेयम् ।२०।
ईशेऽपि गेहपिशुनं भवितं दधाने कादमर कर्दममनुस्तनपंकजे ते ।
स्नातोत्थितस्य करिणःक्षणलक्ष्य फेनौ सिंदूरितौ स्मरयतःसमदस्य कुंभौ ।२१
कंठातिरिक्तगलदुज्ज्वलकांतिधाराशोभौ भुजौ निजरिपोर्मकरध्वजेन ।
कंठग्रहाय रचितौ किल दीर्घपाशौ माममम स्मृतिपथं न विलंघयेताम् ।२२।
नात्यावतं रचितकंबुविलासचौर्यं भूषाभरेण विविधेन विराजमानम् ।
कंठं मनोहरगुण गिरिराजकन्ये संचिंत्य तृप्तिमुपयामि कदापि नाहम् ।२३।
अत्यायताक्षमभिजातललाटपट्टं मंदस्मितेन दरफुल्लकपोलरेखम् ।
बिंबाधरं बदमुन्नतदीर्घनासं यस्ते स्मरत्यसकृदम्ब स एव जानः ।२४।
आविस्तुषारकरलेखमनल्पगंधपुष्पोपरिभ्रमदलिव्रजनिविशेषम् ।
यश्चेतसाकलयते तव केशपाशं तस्य स्वयं गलति देवि पुराणपाशः ।२५।
श्रुतिसुचरितपकं श्रीमतास्तोत्रमेतत्पठति यईह मर्त्योनित्यमार्द्रान्तिरात्मा ।
स भव तपदमुच्चैःसंपदांपादनम्रक्षितिपमुकुटलक्ष्मीलक्षणांनाचिराय ।२६।

इति श्रीरुद्रयामल तन्त्रे भुवनेश्वरीस्तोत्र समाप्तम् ।

विश्व की
दुर्लभ
आश्चर्यजनक
वस्तुएं

सामग्री

इस संसार में प्रभु ने सब कुछ दिया है, पर बिना भाग्य के वह सब कुछ संभव नहीं, परन्तु संसार में कुछ वस्तुएं ऐसी भी हैं, जिससे भाग्य को चार चांद लगाये जा सकते है, भाग्यहीन भी गौरवयुक्त भाग्यशाली बनकर देश और समाज में प्रतिष्ठा, यश, वैभव संपदा प्राप्त कर सकता हैं।

ये वस्तुएं दुर्लभ है, अप्राप्य नहीं जो वास्तव में ही श्रेष्ठ है उनके घरों में ही ऐसी दुर्लभ वस्तुएं संग्रहित हो सकती है. धन तो कल भी कमाया जा सकता है, पर ये दुर्लभ वस्तुएं कल प्राप्त हो जाय, यह संभव नहीं है।

पत्रिका कार्यालय ने हजारों पाठकों की मांग पर यह बीड़ा उठाया है और इन दुर्लभ वस्तुओं को प्राप्त कराने में योगदान देने की सेवा प्रस्तुत की है, न तो ये व्यापारिक वस्तुएं है और न इसे व्यापार समझा है, इसलिए ज्यों-ज्यों इस प्रकार की दुर्लभ वस्तुएं साधु-सन्तों, महर्षियों वनवासियों से प्राप्त होती रहेगी, पत्रिका पाठको को परिचित कराते रहेंगे।

ये वस्तुएं भी सैकड़ों की संख्या में नहीं है, किसी का एक नग है, तो कोई चार-पांच है। जो शीघ्र प्राप्त करने का प्रयत्न करेगा, वही सौभाग्यशाली होगा, वही प्राप्त कर सकेगा, उसी के संग्रहालय में ये दुर्लभ वस्तुएं एकत्र हो सकेगी।

ये वस्तुएं स्वयं मन्त्र सिद्ध है, चैतन्य है, दुर्लभ है, संग्रहणीय है, उपयोगी है, और भाग्य संयोजन में सहायक है।

* श्वेतार्क गणपति

आक तो होते है, पर सफेद आक अत्यन्त दुर्लभ है, पूरे भारत में कुछ ही पौधे होंगे, और वे भी घने जंगलों में। इस श्वेतार्क की विशेषता यह है कि इस

की जड़ खोदने पर स्वतः जड़ों से निर्मित गणपति प्राप्त होते है, देखने में भव्य गौरवशाली जड़ों से स्वतः निर्मित गणपति, देखने पर लगता है, जैसे साक्षात् गणपति सामने हो।

शास्त्रों में कहा गया है कि जिसके घर श्वेतार्क गणपति हों, उसके जीवन में यश, मान पद, प्रतिष्ठा और अतुल ऐश्वर्य स्वतः प्राप्त होता है, उसे ही नहीं, उसकी पीढियों तक को। दुर्लभ भव्य प्रकृति-निर्मित गणपति विग्रह........

न्यौछावर–६००)

❀ दक्षिणावर्त्ती शंख

बांई ओर खुलने वाले शंख तो सहज प्राप्य है, पर हजारों लाखों शंखों में एक दो शख ही ऐसे पाये जाते है, जो दाहिने ओर खुले होते है, जिन्हें दक्षिणा-वर्ती शंख कहा गया है।

तांत्रिक-मांत्रिक ग्रन्थों में इसे एक स्वर से कुबेरवत् सम्पदा देने वाला बताया है, कहा गया है कि वे नर वास्तव में ही सौभाग्यशाली होते है, जिनके घर में दक्षिणावर्ती शंख हो। इस पर कई प्रयोग किये जाते है, इनमें भीं नर दक्षिणावर्ती शंख तो दुर्लभ ही है।

न्यौछावर–६००)

❀ एकाक्षी नारियल

नारियल तो सहज प्राप्य है, पर जब नारियल की जट उतारते है, तो नीचे से एक कठोर गोला प्राप्त होता है, जिस पर दो आंखें सी बनी होती है।

पर हजारों नारियलों में एक आध नारियल ही ऐसा होता है जिस पर एक आंख ही होती है, ऐसा नारियल साक्षात् लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है, इस पर कई प्रयोग दीपावली पर किये जाते है।

जिसके घर में ऐसा नारियल होता हैं, वह साक्षात् कुबेरवत् माना जाता है।

दुर्लभ संग्रहणीय आश्चर्यजनक........न्यौछावर–५१०)

की जड़ खोदने पर स्वत: जड़ों से निर्मित गणपति प्राप्त होते है, देखने में भव्य गौरवशाली जड़ों से स्वत: निर्मित गणपति, देखने पर लगता है, जैसे साक्षात् गणपति सामने हों।

शास्त्रों में कहा गया है कि जिसके घर श्वेतार्क गणपति हों, उसके जीवन में धन, मान पद, प्रतिष्ठा और अतुल ऐश्वर्य स्वत: प्राप्त होता है, उसे ही नहीं, उसकी पीढ़ियों तक को। दुर्लभ भव्य प्रकृति-निर्मित गणपति विग्रह........

न्यौछावर-६००)

❀ दक्षिणावर्ती शंख

बाईं और खुलने वाले शंख तो सहज प्राप्य है, पर हजारों लाखों शंखों में एक दो शंख ही ऐसे पाये जाते है, जो दाहिने ओर खुले होते है, जिन्हें दक्षिणा-वर्ती शंख कहा गया है।

तांत्रिक-मांत्रिक ग्रन्थों में इसे एक स्वर से कुबेरवत् सम्पदा देने वाला बताया है, कहा गया है कि वे नर वास्तव में ही सौभाग्यशाली होते है, जिनके घर में दक्षिणावर्ती शंख हो। इस पर कई प्रयोग किये जाते है, इनमें भी नर दक्षिणावर्ती शंख तो दुर्लभ ही है।

न्यौछावर-६००)

❀ एकाक्षी नारियल

नारियल तो सहज प्राप्य है, पर जब नारियल की जट उतारते है, तो नीचे से एक कठोर गोला प्राप्त होता है, जिस पर दो आंखें सी बनी होती है।

पर हजारों नारियलों में एक आध नारियल ही ऐसा होता है जिस पर एक आंख ही होती है, ऐसा नारियल साक्षात् लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है, इस पर कई प्रयोग दीपावली पर किये जाते है।

जिसके घर में ऐसा नारियल होता है, वह साक्षात् कुबेरवत् माना जाता है।

दुर्लभ संग्रहणीय आश्चर्यजनक........न्यौछावर-५१०)

※ सियार सिंगी

तन्त्र-मन्त्र ग्रन्थों में इस पर विधि प्रयोग बताये है, सामान्यत: सियार के सींग नहीं होते, पर प्रकृति के चमत्कार से कुछ सियारों के सिर पर सींग उग आते है, ऐसी सियार सिंगी दुर्लभ ही नहीं, कठिनता से प्राप्त होती है, धन प्राप्ति शत्रुओं पर विजय, मुकदमे में में सफलता आदि के लिए श्रेष्ठतम विधान है।

दुर्लभ आश्चर्यजनक न्यौछावर—५१०)

※ हत्था जोड़ी

यह भी प्रकृति का चमत्कार ही है, जो स्वत: दोनों हाथ जुड़े हुए से प्रकृति स्वरूप होता है। इसके पास होने पर दुर्घटना का भय नहीं रहता, एक्सीडेन्ट नहीं होता, उस पर कोई तांत्रिक प्रयोग सफल नहीं हो पाता—अचल सम्पति प्राप्त करने में बेजोड़....

न्यौछावर—५१०)

※ एक मुखी रुद्राक्ष

अन्य वस्तुएं तो प्रयत्न करने पर फिर भी प्राप्त हो सकती है पर एक मुखी रुद्राक्ष तो दुर्लभ क्या, असम्भव ही है, जिसके घर में या गले में एक मुखी रुद्राक्ष हो तो क्या उसे जीवन में किसी बात का अभाव रह सकता है ?

श्रेष्ठतम अद्भुत संग्रहणीय न्यौछावर—२४००)

※ गौरी शंकर रुद्राक्ष

रुद्राक्ष तो मिल जाते है, पर गौरी शंकर रुद्राक्ष दुर्लभ होता है। इसमें शिव और मां पार्वती का जुड़ा हुआ विग्रह रुद्रांक्ष होता है। पूजा स्थान में रखने योग्य, गले में पहिनने योग्य। शास्त्रों के अनुसार ऐसा रुद्राक्ष एक साथ भोग मोक्ष, सम्पदा और ज्ञान देने में सहायक होता है।

न्यौछावर—१८०)

※ रुद्राक्ष

रुद्राक्ष भगवान शिव को सर्वाधिक प्रिय है, इसमें एक से २१ मुखी रुद्राक्ष होते है, इसके महत्व के बारे में प्रत्येक भारतीय एवं साधक परिचित है, बाजार

में नकली रुद्राक्षों की भरमार है इसकी पहिचान सामान्य मानव नहीं कर पाता, विशेष दक्ष व्यक्ति ही असली नकली रुद्राक्ष की पहचान कर सकता है।

पत्रिका-कार्यालय इस बात के लिए प्रयत्नशील है कि यहां से जो भी सामग्री भेजी जाय, वह प्रामाणिक शुद्ध एवं मन्त्र सिद्ध चैतन्य हो।

पत्रिका-कार्यालय में सभी प्रकार के रुद्राक्ष उपलब्ध है, जो सूक्ष्मता से जांचे परखे गये है—

एक मुखी रुद्राक्ष	२४००)रु०	बारह मुखी रुद्राक्ष	७००)रु०
दो मुखी रुद्राक्ष	१२०)	तेरह मुखी रुद्राक्ष	४००)
तीन मुखी रुद्राक्ष	४००)	चौदह मुखी रुद्राक्ष	५००)
चार मुखी रुद्राक्ष	३००)	पन्द्रह मुखी रुद्राक्ष	१७००)
पांच मुखी रुद्राक्ष	३०)	सोलह मुखी रुद्राक्ष	११००)
छः मुखी रुद्राक्ष	२००)	सत्रह मुखी रुद्राक्ष	२१००)
सात मुखी रुद्राक्ष	४००)	अठारह मुखी रुद्राक्ष	१५००)
आठ मुखी रुद्राक्ष	४००)	उन्नीस मुखी रुद्राक्ष	८५०)
नौ मुखी रुद्राक्ष	५००)	बीस मुखी रुद्राक्ष	१३००)
दस मुखी रुद्राक्ष	४५०)	इक्कीस मुखी रुद्राक्ष	१५००)
ग्यारह मुखी रुद्राक्ष	३००)		

※ पारद शिवलिंग

शुद्ध निर्दोष पारे को मूर्छित, ताड़ित, क्रियाओं से निर्मल कर विजय काल में निर्मित पारद शिवलिंग।

यह देव दुर्लभ शिवलिंग मुद्राबन्ध, अर्चन, प्राण प्रतिष्ठा, मन्त्र सिद्ध, रस सिद्ध एवं संजीवनी मुद्रा से सिद्ध अद्भुत, आश्चर्यजनक, सुन्दर, सुरम्य श्रेष्ठतम फलदायक।

न्यौछावर—१५००)

※ स्फटिक शिवलिंग

शास्त्रों में कहा गया है कि जो व्यक्ति एक साथ भोग और मोक्ष की इच्छा रखते हो, जो जीवन में अतुलनीय सम्पदा के साथ यश और सम्मान चाहते हों और जो जीवन में विजयी रहना चाहते है, शिव भक्त है, उन्हें तो अवश्य

ही अपने घर में स्फटिक शिवलिंग स्थापित करना चाहिए ।

प्रभायुक्त, दिव्य, तेजयुक्त शुभ्र स्फटिक शिवलिंग ।

न्यौछावर—६००)

※ लघु नारियल

प्रकृति की महिमा अपरम्पार है, बड़े नारियल तो सहज ही पाये जाते है, पर कभी-कभी सुपारी के आकार के छोटे नारियल भी देखने को मिल जाते है, पर ये होते है दुर्लभ अप्राप्य ।

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु इस पर प्रयोग किये जाते है, वह स्वतः ''लक्ष्मी प्रदाता'' कहा जाता है ।

न्यौछावर ८०)

※ आभायुक्त शालिग्राम

सामान्य शालिग्राम (भगवान कृष्ण का विग्रह) तो प्रत्येक हिन्दू के पूजा घर में देखने को मिल जाते है, पर बहुत ही कम दुर्लभ गोल शालिग्राम भी होते है, जिन्हें धूप में देखने पर लाल झांई सी दिखाई देती है, ऐसे शालिग्राम-विग्रह गृहस्थ सुख क लिए अत्युत्तम है ।

दुर्लभ आभायुक्त शालिग्राम विग्रह

न्यौछावर—१५०)

नर्मदेश्वर शिवलिंग

शास्त्रों में कहा है—

> प्रजावान् भूमिवान् विद्वान् पुत्र बांधववांस्तथा ।
> ज्ञानवान्मुक्तिमान साधुः शिवलिंगार्चनाद् भवेत् ।।

जो शिवभक्त है, जिनका इष्ट शिव है, उन्हें अपने घर में अवश्य ही मन्त्र सिद्ध नर्मदेश्वर स्थापित करना चाहिए ।

न्यौछावर १३२)

※ गोमती चक्र

यह प्रकृति का मानव को श्रेष्ठ वरदान है, जिस पर तांत्रिक-मांत्रिक ग्रन्थों

में कई प्रयोग बताये है, जो स्वतः ही व्यापार एवं लक्ष्मी का पर्याय है।

न्यौछावर ३०)

❋ मूंगा

वशीकरण, उच्चाटन आदि कार्यों में यह श्रेष्ठतम सहायक है, इसे अंगूठी में जड़ा जा सकता है।

न्यौछावर—६०)

❋ कामरूप मणि

संसार में और कुछ प्राप्त हो सकता है, पर यह दुर्लभ काम रूप मणि प्राप्य नहीं। प्रकृति का यह अनोखा चमत्कार है कि इसे गले में धारण करने से स्वतः ही कार्य सम्पन्न होने लगते है, बाधाएं दूर होने लगती है, सहज ही उन्नति प्रमोशन, यश सम्मान एवं ऐश्वर्य प्राप्त होने लगता है।

मन्त्रसिद्धि, चैतन्य दुर्लभ कामरूप मणि।

न्यौछावर—२४०)

❋ शूकर दन्त

शूकर एक भयानक जंगली प्राणी है, जिसके अक्षत दांत कठिनाई से प्राप्त होते हैं। तांत्रिक क्रियाओं एवं महाविद्या साधना में इनका प्रयोग होता है।

न्यौछावर—३५०)

❋ बिल्ली की नाल

जो तन्त्र क्रिया में निष्णात है, वे जानते है कि यह कठिनाई से प्राप्त होती है, बिल्ली जब बच्चे देती है तो नाल गिरती है, यह नाल लक्ष्मी से सम्बन्धित अनुष्ठान में, वशीकरण आदि प्रयोगों में बेजोड़ है।

न्यौछावर—१२०)

❋ महामृत्युन्जय यन्त्र

अकाल मृत्यु समाप्त करने, दीर्घायु प्राप्ति, बालकों को रक्षा, भूत-प्रेत से

बचाव एवं घर में पूर्ण सुख-शांति हेतु अद्भुत फलदायक मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त महामृत्युंजय यन्त्र ।

न्यौछावर—३००)

❁ शत्रुस्तम्भन यन्त्र

शत्रुओं को वश में करने, दुश्मनों पर हावी होने, मुकदमे में सफलता प्राप्ति के लिए सिद्धिदायक यन्त्र ।

न्यौछावर—३००)

❋ सर्वजन वशीकरण यन्त्र

अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों को अपने अनुकूल बनाने व मनोवांछित सफलता प्राप्त करने हेतु आश्चर्यजनक यन्त्र ।

न्यौछावर—३००)

❋ आरोग्य यन्त्र

बीमारी समाप्त करने मानसिक चिन्ता मिटाने व पूर्ण स्वास्थ्य सुख प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठ एवं सफल यन्त्र ।

न्यौछावर—३००)

❋ गृहस्थ सुख यन्त्र

पति-पत्नि अनुकुलता, पुत्र-पौत्र सुख व पूर्ण स्वास्थ्य सुख प्राप्त करने के लिए अद्भुत सफलतादायक यन्त्र ।

न्यौछावर—३००)

❋ विघ्नहर नवग्रह यन्त्र

विशेष मन्त्रों से सिद्ध, विघ्नहर तन्त्र अभिसिंचित धातु निर्मित प्राण-प्रतिष्ठा युक्त ।

साधकों, गृहस्थ व्यक्तियों, साधकों एवं महापुरुषों को इस यन्त्र से जो-जो अनुभव हुए है, उनमें से कुछ इस प्रकार है—

- घर में यदि कोई तांत्रिक प्रभाव हो तो दूर हो जाता हैं ।
- इसके धारण करने से छोटे बच्चे को नजर नहीं लगती व स्वस्थ रहता है ।

○ जो इसे धारण करता है, उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती ।

○ घर में कलह, पति-पत्नी में मतभेद, सन्तान का कलह, उच्छृंखलता आदि समाप्त होती है ।

○ जीवन में नित्य आने वाली बाधाएं विलम्ब कठिनाइयां व परेशानियां दूर होती है ।

○ किसी भी ग्रह का विपरीत प्रभाव नहीं भोगना पड़ता, शनि की साढेसती का दोष निश्चित रूप से दूर होता है ।

○ पुत्र व पुत्री के विवाह में आने वाली बाधाएं समाप्त होती है ।

बाधाओं को मिटाने, कष्टों अभावों को दूर कर गृहस्थ को मंगलमय बनाने में बेजोड़, सहायक विघ्नहर नवग्रह यन्त्र ।

न्यौछावर—१२०)

अद्वितीय मालाएं

❋ कमल गट्टे की माला

लक्ष्मी से सम्बन्धित कार्यों, प्रयोग, अनुष्ठान या लक्ष्मी स्तोत्र पाठ मे धारण करने योग्य, श्रेष्ठ मन्त्र चैतन्य माला ।

न्यौछावर—३०)

❋ मूंगे की माला

ब्लड प्रेसर में सहायक, हृदय रोग को नियन्त्रण करने वाली; शत्रुओं पर हावी होने, अपने व्यक्तित्व को बढाने व यश प्राप्ति में सहायक, गले में धारण करने योग्य ।

न्यौछावर—८०)

❋ रुद्राक्ष रक्षाकर माला

छोटे-छोटे रुद्राक्ष युक्त, रोगों को भगाने वाली, मृत्यु पर विजय प्राप्त

करने वाली, अकाल मृत्यु टालने वाली, मन्त्र सिद्ध, चैतन्य, गले में पहनने योग्य।

न्योछावर—३००)

❊ कार्यसिद्धि माला

रुद्राक्ष की तरह छोटे मनकों की मन्त्र सिद्ध चैतन्य माला जपने योग्य गले में धारण करने योग्य माला।

न्योछावर—४२)

❊ रोगहर माला

सुन्दर विभिन्न मनकों से युक्त रोगहर, सम्पुट-सिद्ध धारण करने योग्य श्रेष्ठ माला।

❊ स्फटिक मणिमाला

स्फटिक संसार का दुर्लभ और पवित्र पदार्थ है, इसका स्पर्श ही सुखदायक है, इनका दर्शन भाग्योदयकारक होता है, इसीलिए श्रीमन्त, उच्च कोटि के योगी एवं विद्वान् अपने गले में स्फटिक मणिमाला धारण करना पुण्य कारक एवं गौरवपूर्ण मानते है।

स्फटिक माला पांच रूपों में धारण को जा सकती हे, सात मणियों की माला, पन्द्रह मणियों की, सत्ताइस मणियों की, चौवन मणियों की तथा एक सौ आठ मणियों की माला धारण करना शास्त्रोचित है।

पत्रिका कार्यालय ने जन साधारण को लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से गले में में पहनने योग्य मणियों को तथा मणि मालाओं को सिद्ध चैतन्य एवं प्राण संजीवन क्रिया से युक्त किया है, साधकों के अनुसार—

- यदि चैतन्य स्फटिक माला धारण कर स्तोत्र पाठ किया जाय तो सम्बन्धित देवता प्रत्यक्ष उपस्थित होते है, तथा सफलता मिलती है।
- किसी भी प्रकार की तांत्रिक-मांत्रिक या आध्यात्मिक साधना में चैतन्य स्फटिक माला का प्रयोग किया जाय, तो वह साधना निश्चय ही सफल

होती है।

योगीराज स्वामी सच्चिदानन्द त्रिजटा अघोरी, शंकर स्वामी दतिया बाबा, आनन्द भैरवी आदि उच्च कोटि के साधकों ने एक स्वर में इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है—

आठ मणियों की माला	३५)रु०
पन्द्रह मणियों की माला	७०)रु०
सत्ताइस मणियों की माला	१३०)रु०
चौवन मणियों की माला	२६५)रु०
एक सौ आठ मणियों की माला	५०१)रु०

❁ पंचांगुली यन्त्र : पंचांगुली देवी चित्र

भविष्य दर्शन एवं फलादेश: भविष्य को जानने के लिए पंचांगुली साधना श्रेष्ठतम साधना है, इस साधना में मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'पंचांगुली यन्त्र चित्र' तथा 'पंचांगुली देवी चित्र' अनिवार्य है। साधना के अलावा यदि इनके सामने मात्र पंचांगुली मन्त्र जप ही किया जाय तब भी अनुकूलता प्राप्त होती है।

न्यौछावर—७५)

❁ बगलामुखी यन्त्र

जीवन में पग-पग पर बाधाओं, कष्टों और परेशानियों से बचने, शत्रुओं का मान-मर्दन करने, उन्हें परास्त करने, मुकदमें में सफलता प्राप्त करने व शरीर की रक्षा के लिए अद्भुत आश्चर्यजनक यन्त्र-शरीर पर धारण होने से भूत-प्रेत, जादू-टोना व तांत्रिक क्रियाओं का प्रभाव नहीं होता, घर में स्थापित होने से भूत-प्रेत का प्रकोप नहीं होता, प्रत्येक गृहस्थ के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी।

न्यौछावर—[illegible]

❁ मंगलाचरण टेप

जिसके घर में प्रातः वेद ध्वनि होती है, वह घर पवित्र वातावरण से दिन

भर महकता रहता है, यजुर्वेद के प्रामाणिक मन्त्र सस्वर 'मंगलाचरण टेप'। टेप रिकार्डर से प्रातःकाल बजाने व घर के सदस्यों एवं बालकों में अच्छे संस्कार डालने में सहायक—

न्यौछावर—६०)

* बजरंग यन्त्र

घर में भूत-प्रेतादि का उपद्रव व शांत करने, परस्पर कलह मिटाने, एवं आनन्ददायक घर-गृहस्थ बनाये रखने में समर्थ, आश्चर्यजनक यन्त्र।

न्यौछावर—५१०)

* सरस्वती यन्त्र

स्मरण शक्ति बढाने, परीक्षा में उत्तीर्ण एवं श्रेष्ठ सफलता प्राप्त करने के लिए सरस्वती यन्त्र।

न्यौछावर—३००)

* स्वर्णाकर्षण गुटिका

एक आश्चर्यजनक, दुर्लभ अप्राप्य गुटिका, घर में संग्रहणीय, लक्ष्मी से सम्बन्धित प्रयोग, मुकदमे में विजय, बिक्री बढाने व आर्थिक उन्नति के लिए सिद्ध करने योग्य श्रेष्ठ गुटिका, आश्चर्यजनक फल देने में सहायक।

न्यौछावर—३३०)

* अष्ट लक्ष्मी यन्त्र

व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति एवं श्रेष्ठ सफलता प्राप्त करने के लिए अष्टलक्ष्मी यन्त्र।

न्यौछावर—३००)

* कुबेर यन्त्र

यह धातु निर्मित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त यन्त्र है, जिसे मात्र घर में रखना ही पर्याप्त है, मन्त्र सिद्ध होने के कारण इस पर किसी भी प्रकार से पूजा पाठ आदि कराने की आवश्यक नहीं।

धन सम्पदा व्यापार वृद्धि आर्थिक उन्नति देने में बेजोड़, अद्भुत सफलतादायक।

न्यौछावर—२४०)

✽ श्री यन्त्र

यह लक्ष्मी प्राप्ति का श्रेष्ठतम यन्त्र है, सारे तांत्रिक-मांत्रिक ग्रन्थों में इसे श्रेष्ठतम सफलतादायक ऋणाहर्ता सौभाग्यदायक यन्त्र माना है, जो व्यापार वृद्धि आर्थिक उन्नति में बेजोड़ है।

धातु निर्मित मन्त्र-सिद्धि प्राण प्रतिष्ठा युक्त।

न्यौछावर—२४०)

✽ कनकधारा यन्त्र

जिसके घर में कनकधारा यन्त्र नहीं है, उसके घर में लक्ष्मी का निवास कैसे सम्भव है? शास्त्रों के अनुसार कनकधारा यन्त्र अद्‌भुत है, आश्चर्यजनक है, श्रेष्ठतम है, व्यापार वृद्धि में अप्रतिम है।

धातु निर्मित मन्त्र-सिद्ध प्रतिष्ठा युक्त।

न्यौछावर—२४०)

नोटः–

ये वस्तुएं अप्राप्य है, अद्वितीय है, दुर्लभ है, यदि धीरे-धीरे ये सभी वस्तुएं आपके सग्रहालय में हो तो आने वाली पीढियां, समाज, परिवार के सदस्य दर्शन करके ही अपने आपको धन्य समझेंगे।

सुविधाः–

आप प्रारम्भ में आधी धन राशि मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से भेजिये। शेष धन राशि की वी. पी. द्वारा सामग्री भेजने की व्यवस्था की जा सकेगी।

मनिआर्डर के समाचार कूपन पर आप अपना नाम व पता तथा तथा सम्बन्धित यन्त्र का नाम स्पष्ट लिखें।

– प्राप्ति स्थान –

कैलाशचन्द्र श्रीमाली

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर (राज०)

हर घर में रखने योग्य

श्रेष्ठ संग्रहणीय और अल्पमोली

बारह-दुर्लभ-पुस्तकें

- श्रीसूक्तम-नित्य पाठ करने योग्य लक्ष्मी से संबंधित प्रसिद्ध पुस्तक।
मूल्य—२)
- अन्नपूर्णा स्तोत्रम्-आश्चर्यजनक फलदायक स्तोत्रम् मूल्य—२)
- हनुमान चालीसा-संकट मोचन हनुमानष्टक, बजरंगबाण सहित
मूल्य—२)
- संकट नाशक गणेश स्तोत्रम्-विपत्ती नाश के लिए दुर्लभ गणपति स्तोत्रम्
मूल्य—२)
- ऋण मोचन मंगल स्तोत्रम्-कर्जा मिटाने, दरिद्रता नाश करने हेतु उत्तम स्तोत्रम्
मूल्य—२)
- संतान गोपाल स्तोत्रम्-संतान लाभ, संतान सुख एवं संतान उन्नति कामना हेतु दुर्लभ स्तोत्र
मूल्य—२)
- आदित्य हृदय स्तोत्रम्-स्वास्थ्य रक्षा, रोग निवारण एवं शत्रुओं पर विजय हेतु महत्वपूर्ण स्तोत्र
मूल्य—२)
- सिद्ध सरस्वती स्तोत्रम्-परीक्षा एवं किसी भी प्रकार की प्रतियोगिता में उत्तीर्ण होने के लिए श्रेष्ठ स्तोत्र
- अपराजिता स्तोत्रम्-जीवन के किसी भी क्षेत्र में अपराजित रहने

व विजय प्राप्त करने हेतु, मुकदमे में सफलता प्राप्त हेतु दुर्लभ स्तोत्र मूल्य—२)

- राम रक्षा स्तोत्रम्–जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता एवं आकस्मिक विपत्ति को दूर करने हेतु रामबाण स्तोत्र मूल्य—२)

- कनकधारा स्तोत्रम्–घर में धन धान्य समृद्धि सुख एवं सभी प्रकार से भौतिक उन्नति हेतु श्रेष्ठ पुस्तक मूल्य—२)

- तांत्रिक देवी सूक्तम–भगवती उपासकों के लिए वरदान स्वरूप स्तोत्र मूल्य—२)

नियम:— ★ दस रुपयों से कम की पुस्तकें नहीं भेजी जा सकेगी।

★ बीस रुपयों की पुस्तकें मंगाने पर डाक व्यय माफ।

★ परोपकारार्थ बांटने हेतु सौ रुपयों की पुस्तकें मंगाने पर दस प्रतिशत कमीशन व डाक व्यय माफ।

धनराशि ड्राफ्ट या मनिआर्डर से इस पते पर भेजें—

अरविन्द प्रकाशन

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर-३४२००१ (राज०)